Holy Faith New Style Sample Paper–1

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें और उनका पालन करें :

(*i*) इस प्रश्न पत्र में 30 प्रश्न हैं। **सभी** प्रश्न **अनिवार्य** हैं।

(*ii*) **प्रश्न पत्र पांच अनुभागों A, B, C, D** और **E** में विभाजित है।

(*iii*) अनुभाग (A) में प्रश्न संख्या **1** से **17** बहुविकल्पीय प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न में **1** अंक है।

(*iv*) अनुभाग (B) में प्रश्न संख्या **18** और **19** स्रोत आधारित प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न में **3** अंक हैं।

(*v*) अनुभाग (C) में प्रश्न संख्या **20** से **23** संक्षिप्त उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न में **3** अंक हैं। इन प्रश्नों के उत्तर **80** से **100** शब्दों में लिखे जाने चाहिए।

(*vi*) अनुभाग (D) में प्रश्न संख्या **24** से **28** लंबे उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न में **5** अंक हैं। इन प्रश्नों के उत्तर **120** से **150** शब्दों में लिखे जाने चाहिए।

(*vii*) अनुभाग (E) में प्रश्न संख्या **29** और **30** मानचित्र आधारित प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न में **5** अंक हैं।

(*viii*) इसके अतिरिक्त ध्यान दें कि दृष्टिहीन उम्मीदवारों के लिए दृष्टि संबंधी इनपुट, मानचित्र आदि वाले प्रश्नों के बदले एक अलग प्रश्न प्रदान किया गया है। ऐसे प्रश्न केवल दृष्टिहीन उम्मीदवारों द्वारा प्रयास किए जाने चाहिए।

(*ix*) प्रश्न पत्र में कोई समग्र विकल्प नहीं दिया गया है। हालाँकि, अनुभाग (A) के अलावा सभी अनुभागों में कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प प्रदान किया गया है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

खंड—A

(प्रश्न संख्या 1 से 17 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) **17 × 1 = 17**

1. (*d*) राजस्थान।

2. (*a*) सिंचाई

3. (*d*) पंजाब, हरियाणा, राजस्थान।

4. (*b*) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

5. (*d*) गन्ना।

6. (*d*) गेहूं।

7. (*d*) तेल और प्राकृतिक गैस लिमिटेड।

8. (*b*) मैंगनीज़

9. (*b*) उत्तर पूर्वी सीमा–चेन्नई

10. (*a*)

A	B	C	D
I	II	III	IV

11. (*c*) रक्त संचार

12. (*a*) (A) सत्य है लेकिन (R) गलत है।

13. (*a*) विशाखापत्तनम

14. (*a*) (A) सत्य है लेकिन (R) गलत है।

15. (*a*) विकास मात्रात्मक है जबकि विकास गुणात्मक है।

16. (*a*) जब सकारात्मक विकास होता है

17. (*c*) सकारात्मक विकास

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) **2 × 3 = 6**

18. 18.1 उत्तर प्रदेश के सभी पहाड़ी जिले, असम के मिकिर पहाड़, उत्तर कछार पहाड़ पश्चिम बंगाल का दार्जिलिंग ज़िला तथा TN का नीलगिरी ज़िला HADP में शामिल किए गए थे।

18.2 5 वीं पंचवर्षीय योजना में।

18.3 पहाड़ी क्षेत्रों के विकास के लिए योजनाएं बनाना जिसमें उनके स्थलाकृतिक पारिस्थिति की, सामाजिकी एवं आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा गया।

19. 19.1 पारसाइबेरियन रेलमार्ग रूस में स्थित है।

19.2 मॉस्को (A) तथा चिता (B)

19.3 1. इस रेलमार्ग ने एशियाई प्रदेश को पश्चिमी यूरोपीय बाजारों से जोड़ा हैं।

2. यह रेलमार्ग दोहरे पथ से युक्त विद्युतीकृत पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग है।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं)

4 × 3 = 12

20 (क) 1. यह प्राकृतिक वातावरण और मानवों के बीच प्रारंभिक इंटरएक्शन के चरणों को संदर्भित करता है जहां मानव प्रकृति के आदेशों के अनुसार अनुकूलित होते हैं।

2. यह बहुत कम तकनीकी और सामाजिक विकास के स्तर को दर्शाता है।

3. प्राकृतिककृत मानव प्रकृति की सुनते हैं, उसके क्रोध से डरते हैं और प्रकृति की पूजा करते हैं।

4. मानवों की प्रकृति पर सीधी निर्भरता।

5. प्राकृतिककृत मानवों के लिए भौतिक वातावरण मां प्रकृति बन जाता है।

प्रकृति का मानवकरण—1. यह प्रकृति की शक्तियों और उन मानवों के बीच के इंटरएक्शन को संदर्भित करता है जो प्रकृति की शक्तियों को समझना शुरू करते हैं।

2. यह कुशल तकनीक और बेहतर सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों के विकास को दर्शाता है।

3. मानव आवश्यकता की स्थिति से स्वतंत्रता की स्थिति में जाते हैं।

4. अधिक अवसर बनाने के लिए पर्यावरण से संसाधन प्राप्त किए जाते हैं।

5. मानव प्रकृति का उपयोग करते हैं ताकि प्रकृति मानवित हो जाए, जो मानव गतिविधियों के निशान दिखाती है।

अथवा

(ख) मानव प्राणी प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करते हैं और भौतिक वातावरण मानवित हो जाता है और मानव उद्यम के निशान धारण करने लगता है। मानव गतिविधियाँ सांस्कृतिक परिदृश्य बनाती हैं। मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं: ऊँचाई पर स्वास्थ्य रिसॉर्ट, विशाल शहरी फैलाव, मैदानों और लुढ़कती पहाड़ियों में खेत, बाग और चरागाह, तटों पर बंदरगाह, महासागरीय सतह पर महासागरीय मार्ग और अंतरिक्ष में उपग्रह।

समय के साथ, मानव अपने वातावरण और प्रकृति की शक्तियों के साथ अनुकूलित और समायोजित होते हैं। यह उन्हें सांस्कृतिक परिदृश्य बनाने में मदद करता है।

जिसमें मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं। यह सामाजिक और सांस्कृतिक विकास मानवों को बेहतर और अधिक कुशल तकनीक विकसित करने में समर्थन करता है।

सबसे कठिन जलवायु परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में स्थायी मानव बस्तियाँ। इसमें तकनीक का विकास शामिल है जिसने मानवों को कठोर मौसम की परिस्थितियों में भी जीवित रहने में सक्षम बनाया, जैसे कि तीव्र हवाओं और भारी बर्फबारी वाले स्थानों में आरामदायक तापमान पर कमरे का कृत्रिम ताप। मानव दूरदराज के क्षेत्रों से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों के साथ नेटवर्क भी बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ों पर सड़कों और रेलवे ट्रैक बिछाए जाते हैं या समुद्र के तल से संसाधन प्राप्त किए जाते हैं।

21. (1) डिजिटल विभाजन एक आर्थिक और सामाजिक असमानता है जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित विकास से उभरती है। यह विकसित और विकासशील देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक भिन्नताओं के कारण होता है।

(2) यह तय करने वाला कारक है कि देश कितनी तेज़ी से अपने नागरिकों को ICT तक पहुँच और इसके लाभ प्रदान कर सकते हैं।

(3) यह विभाजन देशों के भीतर भी मौजूद है। बड़े देशों जैसे भारत और रूस में महानगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में डिजिटल दुनिया तक बेहतर पहुँच और कनेक्टिविटी होती है।

22. ग्रामीण और शहरी बस्तियों के बीच मूलभूत अंतर इस प्रकार है—

ग्रामीण बस्तियाँ अपनी जीवन सहायता या मौलिक आर्थिक आवश्यकताओं को भूमि आधारित प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों से प्राप्त करती हैं, जबकि शहरी बस्तियाँ कच्चे माल की प्रसंस्करण और तैयार सामान के निर्माण पर निर्भर करती हैं, एक ओर और विभिन्न सेवाओं पर दूसरी ओर।

23. जनसंख्या की वृद्धि—(*i*) जनसंख्या की वृद्धि दर वह दर है जिस पर किसी क्षेत्र में लोग एक निश्चित समय अवधि में बढ़ते हैं जिसे प्रारंभिक जनसंख्या के अंश के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह एक निश्चित समय अवधि में जनसंख्या में परिवर्तन है जिसे उस अवधि की शुरुआत में जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है।

(*ii*) इसे प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है।

(*iii*) यह किसी क्षेत्र के जनसांख्यिकीय गुणों को प्रभावित करता है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 24 से 28 दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को उस क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व कहा जाता है।

कुछ भौतिक या भौगोलिक कारक हैं जो जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करते हैं।

1. जल की उपलब्धता—लोग उन क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं जहां ताजे पानी की आसानी से उपलब्धता होती है। पानी घरेलू, कृषि और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए आवश्यक है। इसलिए, नदी की घाटियाँ विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। उदाहरण के लिए, भारत में इंडो-गंगा मैदान, चीन में हुआंग हो और यांग्त्ज़े बेसिन और मिस्र में नील घाटी बहुत घनी आबादी वाले हैं।

2. भूआकृतियाँ—मैदानी क्षेत्र कृषि, सिंचाई, परिवहन और व्यापार के लिए बेहतर सुविधाएँ प्रदान करते हैं। लोग समतल मैदानी और हल्की ढलानों पर रहना पसंद करते हैं क्योंकि ये भवनों का निर्माण, सड़कें और रेलवे लाइनें बिछाने, नहरें बनाने और उद्योग स्थापित करने के लिए उपयुक्त हैं। गंगा के मैदान और हुआंग हो का बेसिन विश्व के सबसे घनी

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

आबादी वाले क्षेत्रों में से हैं। पर्वतीय और पठारी क्षेत्रों जैसे हिमालय और ड्रेकेंसबर्ग पठार में rugged भूआकृति वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम है।

(*i*) **जलवायु**—सुखद जलवायु और कम मौसमी भिन्नता वाले क्षेत्र अधिक लोगों को आकर्षित करते हैं। गर्म या ठंडे रेगिस्तानों, भारी वर्षा वाले क्षेत्रों या कम वर्षा वाले क्षेत्रों की चरम जलवायु लोगों के रहने के लिए असुविधाजनक होती है। इसलिए, इन क्षेत्रों की जनसंख्या कम होती है। इसलिए, अफ्रीका के गर्म भूमध्य रेखीय भाग और रूस, कनाडा और अंटार्कटिका के ठंडे ध्रुवीय क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम है।

(*ii*) **मिट्टी**—उपजाऊ मिट्टी कृषि और संबंधित गतिविधियों की सफलता दर सुनिश्चित करती है। इसलिए, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टियों वाले क्षेत्र कई अधिक लोगों का समर्थन करते हैं; ये क्षेत्र गहन कृषि का समर्थन कर सकते हैं।

25. (क) **घुमंतू पशुपालन**

(1) घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(3) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(4) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

(5) हिमालयी क्षेत्र में, इस प्रकार का पशुपालन गुज्जर, बकरवाल, गड्डी और भोटिया द्वारा अभ्यास किया जाता है।

वाणिज्यिक पशुपालन

(1) इसे स्थायी रैंचों पर अभ्यास किया जाता है।

(2) यह गतिविधि मुख्य रूप से पश्चिमी संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है।

(3) यहाँ बड़े रैंचों को कई हिस्सों में विभाजित किया जाता है। जब एक हिस्से का चारा खा लिया जाता है, तो जानवरों को दूसरे हिस्से में ले जाया जाता है।

(4) इस प्रकार के पशुपालन में जैसे मांस, ऊन, चमड़ा और खाल को वैज्ञानिक रूप से संसाधित और पैक किया जाता है और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है।

(5) इसे ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अर्जेंटीना में अभ्यास किया जाता है।

अथवा

(ख) **घुमंतू पशुपालन**

(1) घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(3) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(4) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

26. (क) एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीना, ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होना और एक उचित जीवन जीने के लिए पर्याप्त साधन होना मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं।

अथवा

(ख) **मानव विकास के चार स्तंभ**

जैसे किसी भी भवन को स्तंभों द्वारा समर्थित किया जाता है, मानव विकास का विचार समानता, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों द्वारा समर्थित है।

1. समानता का अर्थ है सभी के लिए अवसरों की समान पहुंच बनाना। लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों को उनके लिंग, जाति, आय और भारतीय संदर्भ में, जाति के बावजूद समान होना चाहिए। फिर भी, यह अकसर ऐसा नहीं होता और लगभग हर समाज में होता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश में, यह देखना दिलचस्प है कि अधिकांश स्कूल ड्रॉपआउट किस समूह से संबंधित हैं। इससे ऐसे व्यवहार के कारणों को समझने में मदद मिलनी चाहिए। भारत में, बड़ी संख्या में महिलाएं और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लोग स्कूल छोड़ देते हैं। यह दिखाता है कि इन समूहों के विकल्प ज्ञान की पहुंच न होने के कारण सीमित हो जाते हैं।

2. स्थिरता का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। स्थायी मानव विकास के लिए, प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलने चाहिए। सभी पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी का भी दुरुपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की कमी का कारण बनेगा। एक अच्छा उदाहरण लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व के बारे में है। यदि कोई समुदाय अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व पर जोर नहीं देता है, तो तब ये युवा महिलाएं बड़ी होंगी, तो उनके लिए कई अवसर खो जाएंगे। उनके करियर के विकल्प गंभीर रूप से सीमित हो जाएंगे और यह उनके जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करेगा। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए विकल्पों और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

3. उत्पादकता का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है। ऐसी उत्पादकता को लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके लगातार समृद्ध किया जाना चाहिए। अंततः लोग राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति हैं। इसलिए, उनके ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास, या बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना अंततः बेहतर कार्य दक्षता की ओर ले जाता है।

4. सशक्तिकरण का अर्थ है विकल्प बनाने की शक्ति होना। ऐसी शक्ति स्वतंत्रता और क्षमता को बढ़ाने से आती है। लोगों को सशक्त बनाने के लिए अच्छे शासन और जन केंद्रित नीतियों की आवश्यकता होती है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण विशेष महत्व रखता है।

27. (क) **वायु प्रदूषण के प्रभाव—**

1. वायु प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों जैसे अस्थमा, गले में खराश, छींक और एलर्जिक राइनाइटिस का कारण बनता है।
2. यह वैश्विक तापमान में वृद्धि का कारण बनता है जो मौसम के लयबद्ध चक्र में परिवर्तन करता है।
3. आंखों में खुजली, पिम्पल्स आदि जैसी विभिन्न त्वचा बीमारियों के लिए भी ज़िम्मेदार है।

वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं—

1. वनरोपण को बढ़ावा देना।
2. चार या पांच सितारा रेटिंग के साथ इलेक्ट्रिकल उपकरणों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।
3. ऑटोमोबाइल में सीएनजी का उपयोग करना।
4. चिमनी स्थापित करना।

अथवा

(ख) **झुग्गियों और शहरी कचरे की समस्याएँ—**

बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। झुग्गियों और शहरी कचरे के निपटान की समस्या दो मुख्य मुद्दे हैं।

शहरों में स्थान की कमी है। बढ़ती जनसंख्या आवास की समस्याएँ पैदा करती है। इसे हल करने के लिए बहुमंज़िला इमारतें बनाई जा रही हैं।

आमतौर पर, पुश और पुल कारक लोगों को शहरों की ओर प्रवास करने के लिए मजबूर करते हैं। ये लोग शहरों में रोज़गार की तलाश में आते हैं। शहरों में आवास की सुविधा महंगी होती है, जिसके कारण गरीब लोग शहरों के बाहर खाली भूमि पर झोपड़ियाँ बनाते हैं। इस प्रकार झुग्गियाँ विकसित होने लगती हैं। ऐसी झुग्गियों में जनसंख्या घनत्व अधिक होता है और जल निकासी और शहरी कचरे के निपटान की कोई सुविधा नहीं होती है। लोगों का जीवन स्तर बहुत निम्न होता है। प्रशासन ने इन क्षेत्रों को सुविधाएँ प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए हैं, फिर भी ये झुग्गियाँ कई बीमारियों से ग्रस्त हैं।

28. (क) शहरी क्षेत्रों की भीड़-भाड़, घनी और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे की समस्या के कारण विशाल शहरी अपशिष्ट का संचय होता है। शहरी अपशिष्ट के दो स्रोत होते हैं। घरेलू या घरेलू स्रोत और औद्योगिक या व्यावसायिक स्रोत। शहरी अपशिष्ट निपटान का गलत प्रबंधन बड़े शहरों में एक गंभीर समस्या है।

महानगरों में प्रतिदिन टन अपशिष्ट निकलता है और इसे जलाया जाता है। अपशिष्ट से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित करता है। मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए सीवेज या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्त्रोतों की अपर्याप्तता जल प्रदूषण में योगदान करती है। औद्योगिक इकाइयों का शहरी केंद्रों के आसपास केंद्रित होना पर्यावरणीय समस्याओं की एक शृंखला को जन्म देता है। नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट का डालना जल प्रदूषण का प्रमुख कारण है। ठोस अपशिष्ट उत्पादन शहरों में निरंतर बढ़ता जा रहा है, दोनों निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के हिसाब से। ठोस अपशिष्ट का अनुचित निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं। थर्मल संयंत्र हवा में बहुत सारा धुआँ और राख छोड़ते हैं। उदाहरण के लिए 500 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाला एक संयंत्र 2000 टन राख छोड़ता है जिसे प्रबंधित करना मुश्किल है।

अथवा

(ख) प्लास्टिक एक गैर-निष्क्रिय पदार्थ है और इसका उपयोग और उत्पादन न्यूनतम होना चाहिए। प्लास्टिक का मलबा बिल्कुल हर जगह पाया जाता है आर्कटिक से अंटार्कटिका तक। यह हमारे शहरों में सड़क की नालियों को बंद करता है: यह कैंपग्राउंड और राष्ट्रीय उद्यानों में बिखरा हुआ है, और यहां तक कि माउंट एवरेस्ट पर भी जमा हो रहा है। लेकिन रन-ऑफ और हमारे नजदीकी नदी या झील में सीधे अपना कचरा डालने की आदत के कारण, प्लास्टिक दुनिया के महासागरों में बढ़ता जा रहा है। जब प्लास्टिक का विघटन होता है, तो इसका मतलब है कि एक बड़े प्लास्टिक के टुकड़े को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है। ये छोटे प्लास्टिक के टुकड़े छोटे जानवरों द्वारा खाए जा सकते हैं, लेकिन ये अभी भी पचने योग्य नहीं होते। यह खाद्य शृंखला में सभी जीवों को प्रभावित करता है, छोटी प्रजातियों जैसे प्लवक से लेकर व्हेल तक। जब प्लास्टिक का सेवन किया जाता है, तो विषाक्त पदार्थ खाद्य शृंखला में ऊपर की ओर बढ़ते हैं और यह उन मछलियों में भी मौजूद हो सकते हैं जो लोग खाते हैं। मोबाइल फोन से लेकर साइकिल के हेलमेट तक और iv बैग तक, प्लास्टिक ने समाज को ऐसे तरीकों से आकार दिया है जो जीवन को आसान और सुरक्षित बनाते हैं। लेकिन इस सिंथेटिक सामग्री ने पर्यावरण पर हानिकारक छाप भी छोड़ी है।

1. प्लास्टिक में जो रसायन मिलाए जाते हैं, वे मानव शरीर द्वारा अवशोषित होते हैं। इनमें से कुछ यौगिक हार्मोन को बदलने या अन्य संभावित मानव स्वास्थ्य प्रभाव डालने के लिए पाए गए हैं।

2. प्लास्टिक का मलबा, जो रसायनों से भरा होता है और अक्सर समुद्री जानवरों द्वारा खाया जाता है, वन्यजीवों को घायल या ज़हरीला कर सकता है।

3. तैरता हुआ प्लास्टिक का कचरा, जो पानी में हज़ारों वर्षों तक जीवित रह सकता है, आक्रामक प्रजातियों के लिए छोटे परिवहन उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिससे आवास बाधित होते हैं।

4. लैंडफिल में गहराई से दफनाया गया प्लास्टिक हानिकारक रसायनों को रिसाव कर सकता है जो भूजल में फैल जाते हैं।

5. विश्व के तेल उत्पादन का लगभग प्रतिशत प्लास्टिक बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है, और इसी मात्रा का उपभोग प्रक्रिया में ऊर्जा के रूप में किया जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. रियोडिजेनेरो

ख. फोर्टवर्थ

ग. स्वेज नहर

घ. ब्राजील

ङ अफ्रीका का एटलांटिक तट

च. सिडनी

छ. उत्तर अमेरिका के प्रेयरीज

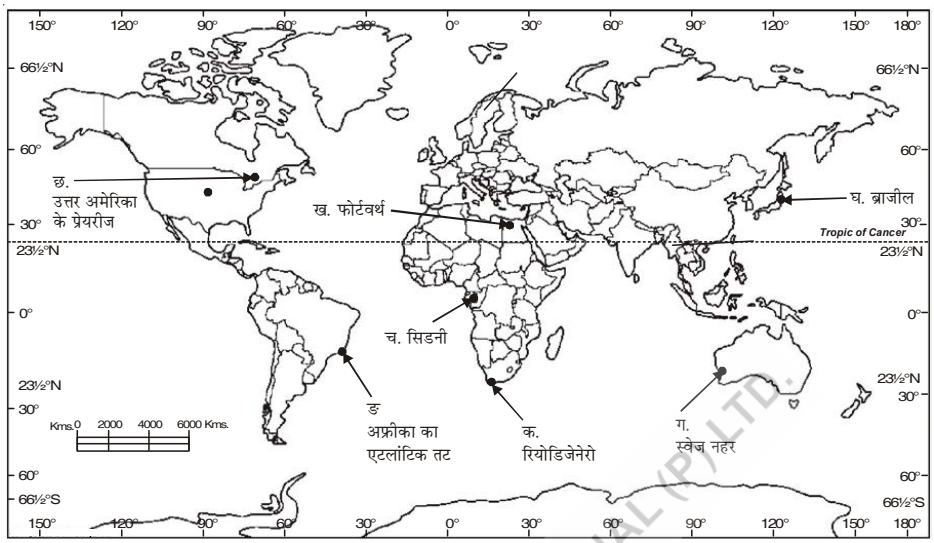

30. 30.1 पश्चिम बंगाल

30.2 बेल्लारी ज़िला तथा चिकमगलुरु ज़िला की बाबा बूदन की पहाड़ियाँ

30.3 खेतड़ी

30.4 सिलचर (असम)

30.5 अरुणाचल प्रदेश

30.6 कोचि

30.7 बैलाडीला

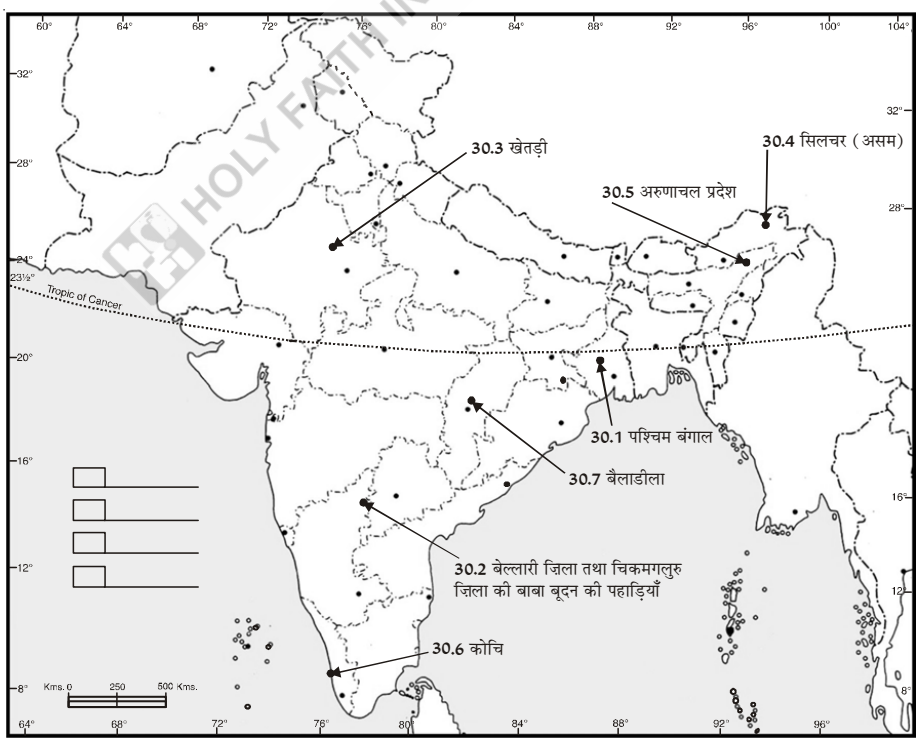

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–2

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*c*) 1977
2. (*c*) आंध्र प्रदेश
3. (*d*) राजस्थान को इस नहर से सबसे कम लाभ होता है।
4. (*a*) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
5. (*c*) सिंचित और सूखा
6. (*c*) ज्वार
7. (*d*) श्रम की कमी।
8. (*a*) झरिया
9. (*a*) राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 3 केरल-कोल्लम
10. (*b*)

A	B	C	D
II	I	III	IV

11. (*b*) केरल
12. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R) (A) की सही व्याख्या है।
13. (*a*) न्यू मंगलुरु
14. (*c*) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) (A) की सही व्याख्या है।
15. (*a*) लोग
16. (*a*) डॉ० महबूब-उल-हक
17. (*c*) अर्थशास्त्री

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्त्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 गद्दी जनजातीय समुदाय का व्यवसाय कृषि और भेड़ और बकरी पालन था।

18.2 इस जनजातीय क्षेत्र में कठोर जलवायु, कम संसाधन आधार और नाजुक पर्यावरण आदि कारकों ने 'भरमौर' जनजातीय क्षेत्र को हिमाचल प्रदेश का सबसे आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़ा क्षेत्र बनाया ?

18.3 कठोर जलवायु, कम संसाधन आधार और नाजुक पर्यावरण।

19. 19.1 सैंट लारेंस समुद्रीमार्ग

19.2 एटलांटिक एवं प्रशांत महासागर

19.3 सुपीरियर, ह्यूरॉन झील

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20. (क) मानव प्रौद्योगिकी की मदद से भौतिक वातावरण को संशोधित करते हैं। मानव प्रकृति के आदेशों के अनुसार अनुकूलित होते हैं और प्राकृतिक कानूनों की बेहतर समझ के साथ प्रौद्योगिकी विकसित करते हैं। इस पर जोर नहीं दिया जाता कि मानव क्या उत्पादन करते हैं और सृजन करते हैं, बल्कि उन उपकरणों और तकनीकों पर ध्यान दिया जाता है जिनका वे उत्पादन और सृजन के लिए उपयोग करते हैं। प्राथमिक मानव समाज और प्रकृति की मजबूत शक्तियों के बीच की अंत: क्रिया को पर्यावरणीय निर्धारणवाद कहा जाता है। समाज के सांस्कृतिक विकास का स्तर प्रौद्योगिकी के माध्यम से देखा जा सकता है। प्रौद्योगिकी में उन्नति के साथ, मानव अब प्रकृति द्वारा उत्पन्न चुनौतियों पर काबू पाने में सक्षम हैं।

उदाहरण के लिए, आग का आविष्कार प्रारंभिक मानवों द्वारा घर्षण और गर्मी के सिद्धांतों की समझ के साथ किया गया था। एक और उदाहरण है DNA और आनुवंशिकी के रहस्यों की समझ रोगों का इलाज करने के लिए। इसी प्रकार, तेज़ विमानों का विकास वायुमंडलीय कानूनों का उपयोग करके संभव हुआ है।

अथवा

(ख) संभाव्यता का अर्थ है मानव की प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करने की क्षमता और इसके परिणामस्वरूप भौतिक वातावरण मानवकृत हो जाता है और मानव उद्यम के निशान धारण करना शुरू कर देता है। संभाव्यता मानव गतिविधियों के कारण बनाए गए निशानों का निर्माण है। मानव गतिविधियाँ सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण करती हैं। मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं। पहाड़ियों पर स्वास्थ्य रिसॉर्ट, विशाल शहरी विस्तार, मैदानों और ढलान वाली पहाड़ियों में खेत, बाग और चरागाह, तटों पर बंदरगाह, महासागरीय सतह पर महासागरीय मार्ग और अंतरिक्ष में उपग्रह।

कुछ सीमाएं एक प्रदाता के रूप में हैं लेकिन मानव सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों को प्रकृति से स्वतंत्र रूप से निर्धारित करते हैं। निष्क्रिय होने के बजाय, मानव को संभाव्यता द्वारा एक सक्रिय शक्ति के रूप में देखा जाता है। उन्होंने समय के साथ अधिक कुशल प्रौद्योगिकियाँ विकसित की।

उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में तापमान नियंत्रण वाले कई स्वास्थ्य रिसॉर्ट, मैदानों और ढलान वाली पहाड़ियों में विकसित विस्तृत खेत, चरागाह और बाग; लंबी दूरी पर विकसित रेलवे मार्ग और बंदरगाह जो विस्तृत महासागरीय

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

मार्ग खोलते हैं और अंतरिक्ष में उपग्रह कुछ उदाहरण हैं कि मानव भूमि, हवा और पानी पर नियंत्रण रखते हैं।

21. मुंबई—मुंबई भारत के पश्चिमी तट पर केंद्रीय स्थिति में है। यह एक द्वीप पर स्थित है जो मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ है। मुंबई ऐतिहासिक कारणों से एक बंदरगाह के रूप में विकसित हुआ है। ब्रिटिश उपनिवेशी हित इसके विकास के प्रमुख कारण थे। यह भारत का एकमात्र प्राकृतिक गहरे पानी का बंदरगाह है। यह 20 किमी लंबा और 10 किमी चौड़ा है। यह सूडान नहर के माध्यम से यूरोप से जुड़ा हुआ है। इसका समृद्ध उत्पादक अंतर्देशीय काले कपास की मिट्टी क्षेत्र है। यह बड़े जहाज़ों के लिए प्राकृतिक सुविधाओं के साथ एक विशाल और सुरक्षित बंदरगाह है। इसमें 54 डॉक और कई गोदाम हैं। इसे 'भारत का द्वार' भी कहा जाता है। यह भारत का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक और वाणिज्यिक नगर है। वस्त्र, तेल, बीज, चमड़े और खाल और मैंगनीज़ इसके प्रमुख निर्यात हैं। आयात में मशीनरी, पेट्रोलियम, कच्चे फिल्म, उर्वरक, कागज़ और औषधियाँ शामिल हैं। न्हावा शेवा में एक नया यांत्रिक बंदरगाह विकसित किया जा रहा है जिसका नाम जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह है; यह सबसे बड़ा कंटेनर बंदरगाह है।

22. भारत में नगरों का विकास—भारत में प्रागैतिहासिक काल से नगर फल-फूल रहे हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के समय, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे नगर अस्तित्व में थे। शहरीकरण का दूसरा चरण लगभग 600 ईसा पूर्व शुरू हुआ। यह 18वीं सदी में भारत में यूरोपियों के आगमन तक समय-समय पर उतार-चढ़ाव के साथ जारी रहा। शहरी इतिहासकार भारत के नगरों को वर्गीकृत करते हैं—

(*i*) प्राचीन नगर, (*ii*) मध्यकालीन नगर और (*iii*) आधुनिक नगर।

1. प्राचीन नगर—कम-से-कम 45 नगरों का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है और ये कम-से-कम 2000 वर्षों से अस्तित्व में हैं। इनमें से अधिकांश धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए। वाराणसी इनमें से एक महत्वपूर्ण नगर है। अयोध्या, प्रयागराज (इलाहाबाद), पाटलिपुत्र (पटना), मथुरा और मदुरै कुछ अन्य प्राचीन नगर हैं।

2. मध्यकालीन नगर—लगभग 100 मौजूदा नगरों की जड़ें मध्यकालीन काल में हैं। इनमें से अधिकांश प्रमुखता के मुख्यालय के रूप में विकसित हुए। इनमें से अधिकांश किले के नगर थे और पूर्व में अस्तित्व में रहे नगरों के खंडहरों पर बने। इनमें से महत्वपूर्ण हैं दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर, लखनऊ, आगरा और नागपुर।

3. आधुनिक नगर—ब्रिटिश और अन्य यूरोपियों ने शहरी दृश्य को संशोधित किया। एक बाहरी बल के रूप में, जिन्होंने तटीय स्थानों पर अपने पांव जमाए, उन्होंने पहले कुछ व्यापारिक बंदरगाह जैसे सूरत, दमन, गोवा, पुडुचेरी आदि का विकास किया। ब्रिटिशों ने बाद में तीन मुख्य नोड्स-मुंबई (बंबई), चेन्नई (मद्रास) और कोलकाता (कलकत्ता) से अपने नियंत्रण को मज़बूत किया और इन्हें ब्रिटिश शैली में बनाया। उन्होंने तेज़ी से अपने प्रभुत्व का विस्तार किया, या तो सीधे या रियासतों पर सुपर नियंत्रण के माध्यम से, उन्होंने अपने प्रशासनिक केंद्र, पहाड़ी नगरों को ग्रीष्मकालीन रिसॉर्ट के रूप में स्थापित किया, और इनमें नए नागरिक, प्रशासनिक और सैन्य क्षेत्रों को जोड़ा। आधुनिक उद्योगों पर आधारित नगर भी 1850 के बाद विकसित हुए। जमशेदपुर को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है।

स्वतंत्रता के बाद, एक बड़ी संख्या में नगर प्रशासनिक मुख्यालय (चंडीगढ़, भुवनेश्वर, गांधीनगर, दिसपुर, आदि) और औद्योगिक केंद्र (दुर्गापुर, भिलाई, सिंदरी, बरौनी, आदि) के रूप में उभरे। कुछ पुराने नगर भी महानगरों जैसे गाज़ियाबाद, रोहतक, गुरुग्राम आदि के चारों ओर उपग्रह नगरों के रूप में विकसित हुए। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती निवेश के साथ, देश भर में बड़ी संख्या में मध्यम और छोटे नगर विकसित हुए हैं।

23. भारत में ग्रामीण बस्तियों को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(*i*) क्लस्टर्ड (*ii*) सेमी-क्लस्टर्ड
(*iii*) हैमलेटेड (*iv*) बिखरे हुए।

नीचे चारों प्रकारों पर चर्चा की गई है :

1. क्लस्टर्ड बस्तियाँ—ये घनीभूत घरों के समूह होते हैं। सामान्य आवासीय क्षेत्र कृषि क्षेत्र से अलग होते हैं। ये बस्तियाँ आयताकार, रेडियल और रेखीय आकार में होती हैं।

2. सेमी-क्लस्टर्ड बस्तियाँ—ये सीमित क्षेत्रों में पाई जाती हैं। ये एक बड़े घनीभूत गाँव के विखंडन के परिणामस्वरूप होती हैं। सामान्यत:, भूमि मालिक गाँव के केंद्रीय भाग पर कब्ज़ा करते हैं और निम्न वर्ग के लोग गाँव के बाहरी किनारों पर रहते हैं।

3. हैमलेटेड बस्तियाँ—जब एक गाँव सामाजिक और जातीय कारकों पर विखंडित होता है, तो बस्ती को कई इकाइयों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें पन्ना, पारा, पल्लि, नागला और ढाणी कहा जाता है।

4. बिखरी हुई बस्तियाँ—अलग-थलग बस्तियों को बिखरी हुई बस्तियाँ कहा जाता है। ये जंगलों में पहाड़ी ढलानों और बिखरे हुए खेतों में पाई जाती हैं।

ग्रामीण बस्तियों के पैटर्न को प्रभावित करने वाले कारक

(*i*) स्थलाकृति की प्रकृति, (*ii*) ऊँचाई, (*iii*) जलवायु और (*iv*) जल की उपलब्धता

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. दिया गया चित्र जनसांख्यिकी संक्रमण सिद्धांत के तीन-चरणीय मॉडल को समझाता है :

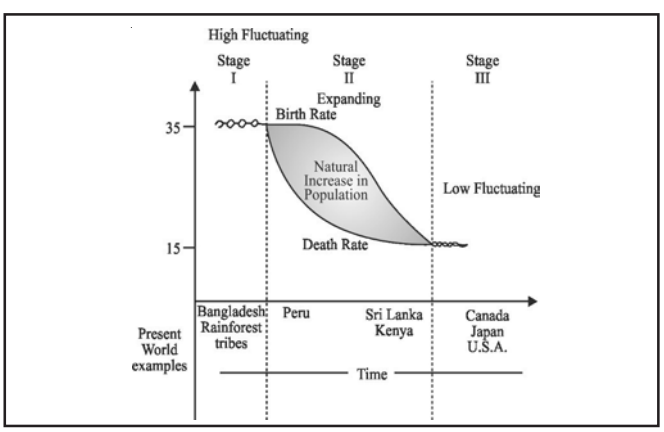

1. पहले चरण में उच्च प्रजनन दर और उच्च मृत्यु दर होती है क्योंकि लोग महामारी और भिन्न खाद्य आपूर्ति के कारण होने वाली मौतों की भरपाई के लिए अधिक प्रजनन करते हैं। जनसंख्या वृद्धि धीमी होती है और अधिकांश लोग कृषि में लगे होते हैं जहाँ बड़े परिवार एक संपत्ति होते हैं। जीवन प्रत्याशा कम होती है, लोग ज्यादातर निरक्षर होते हैं और तकनीकी स्तर कम होता है। दो सौ साल पहले दुनिया के सभी देश इस चरण में थे।
2. दूसरे चरण की शुरुआत में प्रजनन दर उच्च रहती है लेकिन समय के साथ यह घटती है।
3. इसके साथ मृत्यु दर में कमी आती है। स्वच्छता और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार मृत्यु दर में कमी लाता है। इस अंतर के कारण जनसंख्या में शुद्ध वृद्धि उच्च होती है।
4. अंतिम चरण में, प्रजनन और मृत्यु दर दोनों में काफी कमी आती है। जनसंख्या या तो स्थिर होती है या धीरे-धीरे बढ़ती है। जनसंख्या शहरीकृत, शिक्षित होती है और उच्च तकनीकी ज्ञान रखती है और जानबूझकर परिवार के आकार को नियंत्रित करती है। यह दिखाता है कि मानव अत्यंत लचीले होते हैं और अपनी प्रजनन क्षमता को समायोजित करने में सक्षम होते हैं।

25. (क) प्लांटेशन कृषि की निम्नलिखित पाँच विशेषताएँ हैं—

(1) यह बड़े एस्टेट या प्लांटेशन पर की जाती है।

(2) इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित उपनिवेशों में यूरोपीयों द्वारा पेश किया गया था। महत्वपूर्ण प्लांटेशन फसलें चाय, कॉफी, कोको, रबर, कपास, तेल पाम, गन्ना, केला और अनानास हैं।

(3) इसमें एकल फसल की विशेषता होती है, जिसे वैज्ञानिक खेती के तरीकों की मदद से किया जाता है।

(4) इसमें प्रबंधकीय और तकनीकी समर्थन के साथ बड़े निवेश की आवश्यकता होती है।

(5) इसे सस्ते श्रम और एक अच्छे परिवहन नेटवर्क की आवश्यकता होती है जो एस्टेट को कारखानों और उत्पादों के निर्यात के लिए बाज़ारों से जोड़ता है।

अथवा

(ख) **वाणिज्यिक पशुपालन—**(1) इसे स्थायी रैंचों पर अभ्यास किया जाता है।

(2) यह गतिविधि मुख्य रूप से पश्चिमी संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है।

(3) यहाँ बड़े रैंचों को कई हिस्सों में विभाजित किया जाता है। जब एक हिस्से का चारा खा लिया जाता है, तो जानवरों को दूसरे हिस्से में ले जाया जाता है।

(4) इस प्रकार के पशुपालन में जैसे मांस, ऊन, चमड़ा और खाल को वैज्ञानिक रूप से संसाधित और पैक किया जाता है और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है।

(5) इसे ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अर्जेंटीना में अभ्यास किया जाता है।

26. (क)मानव विकास को मापने के तरीके लगातार परिष्कृत किए जा रहे हैं और मानव विकास के विभिन्न तत्त्वों को पकड़ने के नए तरीके खोजे जा रहे हैं। शोधकर्ताओं ने किसी विशेष क्षेत्र में भ्रष्टाचार या राजनीतिक स्वतंत्रता के स्तर के बीच संबंध पाया है। एक राजनीतिक स्वतंत्रता सूचकांक और सबसे भ्रष्ट देशों की सूची पर भी चर्चा हो रही है।

मानव विकास सूचकांक मानव विकास में उपलब्धियों को मापता है। यह मानव विकास के प्रमुख क्षेत्रों में क्या हासिल किया गया है, को दर्शाता है। फिर भी, यह सबसे विश्वसनीय माप नहीं है। इसका कारण यह है कि यह वितरण के बारे में कुछ नहीं कहता। मानव गरीबी सूचकांक मानव विकास सूचकांक से संबंधित है। यह सूचकांक मानव विकास में कमी को मापता है। यह गैर-आय माप है।

40 वर्ष की आयु तक जीवित न रहने की संभावना, वयस्क निरक्षरता दर, उन लोगों की संख्या जिनके पास स्वच्छ पानी तक पहुंच नहीं है, और उन छोटे बच्चों की संख्या जो कम वजन के होते हैं, सभी मानव विकास में कमी को दिखाने के लिए ध्यान में रखे जाते हैं। अकसर मानव गरीबी सूचकांक मानव विकास सूचकांक से अधिक प्रकट होता है। मानव विकास के इन दोनों मापों को एक साथ देखने से किसी देश में मानव विकास की स्थिति का सटीक चित्र मिलता है।

अथवा

(ख) मानव विकास—विकास एक प्रगतिशील विचारधारा है। यह किसी प्रदेश के संसाधनों के विकास के लिए अधिकतम शोषण की प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी प्रदेश के आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। इस सन्दर्भ में भूगोल वेत्ता विकसित देशों तथा विकासशील देशों के शब्द प्रयोग करते हैं।

मानव विकास के चार स्तंभ

जैसे किसी भी भवन को स्तंभों द्वारा समर्थित किया जाता है, मानव विकास का विचार समानता, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों द्वारा समर्थित है।

1. समानता का अर्थ है सभी के लिए अवसरों की समान पहुंच बनाना। लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों को उनके लिंग, जाति, आय और भारतीय संदर्भ में, जाति के बावजूद समान होना चाहिए। फिर भी, यह अकसर ऐसा नहीं होता और लगभग हर समाज में होता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश में, यह देखना दिलचस्प है कि अधिकांश स्कूल ड्रॉपआउट किस समूह से संबंधित हैं। इससे ऐसे व्यवहार के कारणों को समझने में मदद मिलनी चाहिए। भारत में, बड़ी संख्या में महिलाएं और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लोग स्कूल छोड़ देते हैं। यह दिखाता है कि इन समूहों के विकल्प ज्ञान की पहुंच न होने के कारण सीमित हो जाते हैं।

2. स्थिरता का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। स्थायी मानव विकास के लिए, प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलने चाहिए। सभी पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी का भी दुरुपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की कमी का कारण बनेगा। एक अच्छा उदाहरण लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व के बारे में है। यदि कोई समुदाय अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व पर जोर नहीं देता है, तो तब ये युवा महिलाएं बड़ी होंगी, तो उनके लिए कई अवसर खो जाएंगे। उनके करियर के विकल्प गंभीर रूप से सीमित हो जाएंगे और यह उनके जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करेगा। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए विकल्पों और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

3. उत्पादकता का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है। ऐसी उत्पादकता को लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके लगातार समृद्ध किया जाना चाहिए। अंततः लोग राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति हैं। इसलिए, उनके ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास, या बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना अंततः बेहतर कार्य दक्षता की ओर ले जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

4. सशक्तिकरण का अर्थ है विकल्प बनाने की शक्ति होना। ऐसी शक्ति स्वतंत्रता और क्षमता को बढ़ाने से आती है। लोगों को सशक्त बनाने के लिए अच्छे शासन और जन केंद्रित नीतियों की आवश्यकता होती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण विशेष महत्व रखता है।

27. (क) वायु प्रदूषण फेफड़ों, हृदय, तंत्रिका और परिसंचरण तंत्र की बीमारियों का कारण बनता है। कोलकाता के परिवेशी वायु में (1994 में) किए गए एक अध्ययन में निष्कर्ष निकाला गया कि शहर में हर दस में से तीन व्यक्ति किसी-न-किसी प्रकार की श्वसन संबंधी बीमारियों जैसे खांसी, ब्रोंकाइटिस और एलर्जिक राइनाइटिस से पीड़ित थे, जो निलंबित कण पदार्थ के संकेंद्रण से संबंधित हैं।

प्रदूषित जल के कारण सामान्यत: होने वाली बीमारियाँ हैं—दस्त, ट्रेकोमा, आंतों के कीड़े, हेपेटाइटिस आदि। हाल की विश्व बैंक और विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ें बताते हैं कि भारत में संक्रामक बीमारियों का लगभग एक-चौथाई जलजनित हैं।

अथवा

(ख) भारतीय शहरों में शहरी कचरा निपटान से संबंधित समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(1) मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए नालियों या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्रोतों की कमी जल प्रदूषण को बढ़ाती है।

(2) शहरी केंद्रों के आस-पास औद्योगिक इकाइयों का संकेंद्रण पर्यावरणीय समस्याओं की एक शृंखला को जन्म देता है।

(3) नदियों में औद्योगिक कचरे का डालना जल प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है।

(4) शहरों में ठोस कचरे का उत्पादन दोनों निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के हिसाब से बढ़ता रहता है। ठोस कचरे का अनुपयुक्त निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं।

28. (क) इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटरीकृत स्थान की दुनिया को साइबरस्पेस कहा जाता है। यह इंटरनेट द्वारा घेरित है जैसे कि वर्ल्ड वाइड वेब (www) दूसरे शब्दों में, यह इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल दुनिया है जिसका उपयोग जानकारी तक पहुँचने या कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से संचार करने के लिए किया जाता है बिना प्रेषक और प्राप्तकर्ता की भौतिक गति के। इसे इंटरनेट के रूप में भी संदर्भित किया जाता है।

इंटरनेट के लाभ हैं—

(1) इंटरनेट हर जगह मौजूद है जैसे कार्यालय, नावें, उड़ान भरने वाले विमान आदि। इसलिए, यह दुनिया के किसी भी हिस्से में लोगों के साथ संवाद करने की अनुमति देता है।

(2) इंटरनेट ने ई-मेल, ई-लर्निंग, ई-कॉमर्स और ई-गवर्नेंस के माध्यम से मानव के समकालीन आर्थिक और सामाजिक स्थान का विस्तार किया है। इंटरनेट, फैक्स, टेलीविज़न और रेडियो के साथ मिलकर अधिक-से-अधिक लोगों के लिए स्थान और समय के पार सुलभ हो रहा है।

अथवा

(ख) रिवर राइन जर्मनी और नीदरलैंड के माध्यम से बहती है। यह सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली अंतर्देशीय जलमार्ग है क्योंकि इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(1) यह रुहर क्षेत्र के समृद्ध कोयला क्षेत्र के माध्यम से बहती है और पूरा बेसिन एक फलता-फूलता औद्योगिक क्षेत्र है।

(2) विशाल टन भार वाले जहाज़ रुहर के दक्षिण में चलने के लिए आगे बढ़ते हैं। प्रत्येक वर्ष 20,000 से अधिक महासागरीय जहाज़ और 2,00,000 अंतर्देशीय जहाज़ अपने माल का आदान-प्रदान करते हैं जिससे यह दुनिया की सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली जलमार्ग बन जाती है।

(3) यह जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, बेल्जियम, फ्रांस और नीदरलैंड के औद्योगिक क्षेत्रों को उत्तर अटलांटिक समुद्री मार्ग से जोड़ती है।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. रियोडिजेनेरो
ख. फोर्टफर्थ
ग. स्वेज नहर
घ. ब्राजील
ङ एटलांटिक तट
च. दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका
छ. सिडनी से वैंकूवर

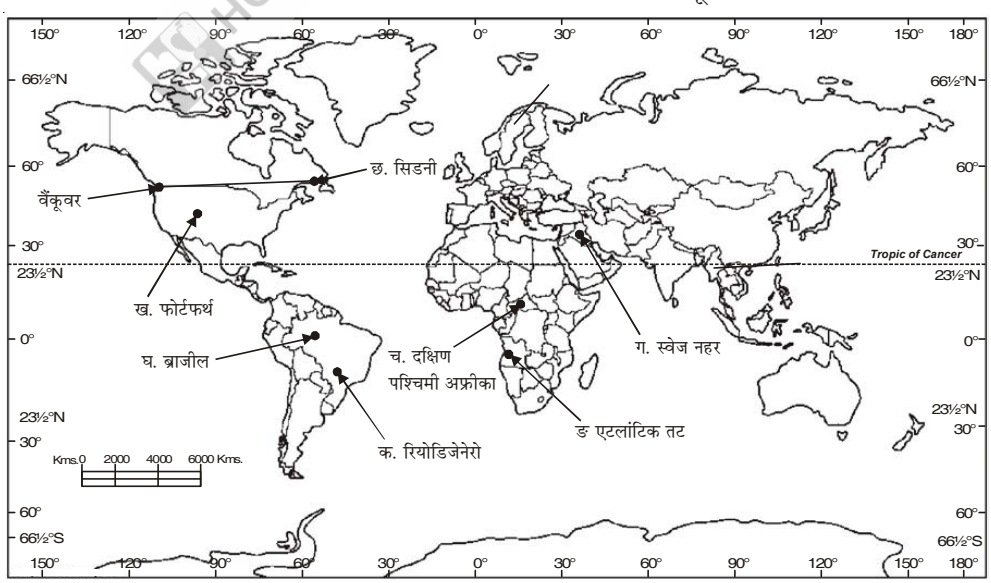

30. 30.1 उत्तर प्रदेश

30.2 मथुरा

30.3 बीरभूम

30.4 मार्मगोला

30.5 बिहार

30.6 अहमदाबाद

30.7 बैलडीला

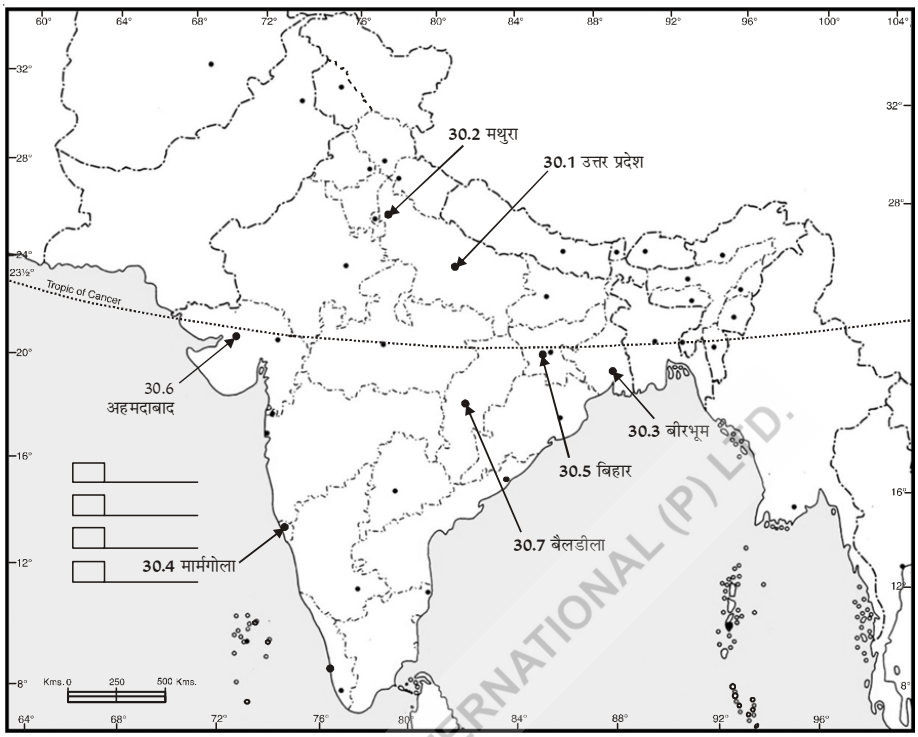

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–3

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्रश्न संख्या 1 से 17 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) **17 × 1 = 17**

1. (*d*) कृषि।

2. (*c*) साबरमती।

3. (*c*) पीने के पानी की उपलब्धता।

4. (*a*) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

5. (*c*) वन वृद्धि के लिए आवंटित अधिसूचित क्षेत्र में वृद्धि।

6. (*d*) चावल।

7. (*d*) झारखंड।

8. (*c*) 1948.

9. (*a*) एन. एच 1 दिल्ली चेन्नई।

10. (*c*)

A	B	C	D
IV	III	II	I.

11. (*a*) सिलचर पोर्बंदर।

12. (*a*) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

13. (*b*) लौह अयस्क।

14. (*a*) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

15. (*b*) विकास।

16. (*a*) वृद्धि।

17. (*a*) सकारात्मक।

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) **2 × 3 = 6**

18. 18.1 पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए किए जाने वाला विकास, सतत पोषणीय विकास कहलाता है।

18.2 औद्योगिक विकास के पर्यावरण पर अवांछनीय प्रभावों के विषय में लोगों की चिंता को दर्शाती हुई धमकी थी।

18.3 1968 में एहरलिच का जनसंख्या बम तथा 1972 में मीडोज और अन्य द्वारा विकास की सीमाएँ थे प्रकाशन महत्वपूर्ण थे।

19. 19.1 पार-कनैडियन रेलमार्ग।

19.2 यह रेलवे लाइन कनाडा में है।

19.3 एटलांटिक तथा प्रशांत महासागर इस रेलवे लाइन से जुड़े हैं।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं) **4 × 3 = 12**

20. (क) मानव प्रौद्योगिकी की मदद से भौतिक वातावरण को संशोधित करते हैं। मानव प्रकृति के आदेशों के अनुसार अनुकूलित होते हैं और प्राकृतिक कानूनों की बेहतर समझ के साथ प्रौद्योगिकी विकसित करते हैं। इस पर जोर नहीं दिया जाता कि मानव क्या उत्पादन करते हैं और सृजन करते हैं, बल्कि उन उपकरणों और तकनीकों पर ध्यान दिया जाता है जिनका वे उत्पादन और सृजन के लिए उपयोग करते हैं। प्राथमिक मानव समाज और प्रकृति की मजबूत शक्तियों के बीच की अंत: क्रिया को पर्यावरणीय निर्धारणवाद कहा जाता है। समाज के सांस्कृतिक विकास का स्तर प्रौद्योगिकी के माध्यम से देखा जा सकता है। प्रौद्योगिकी में उन्नति के साथ, मानव अब प्रकृति द्वारा उत्पन्न चुनौतियों पर काबू पाने में सक्षम हैं।

उदाहरण के लिए, आग का आविष्कार प्रारंभिक मानवों द्वारा घर्षण और गर्मी के सिद्धांतों की समझ के साथ किया गया था। एक और उदाहरण है DNA और आनुवंशिकी के रहस्यों की समझ रोगों का इलाज करने के लिए। इसी प्रकार, तेज़ विमानों का विकास वायुमंडलीय कानूनों का उपयोग करके संभव हुआ है।

अथवा

(ख) मानव भूगोल प्रकृति और मानव के बीच आपसी इंटरएक्शन के माध्यम से परस्पर संबंधों का अध्ययन करता है। प्रकृति और मानव अविभाज्य हैं और एक-दूसरे के साथ इंटरएक्ट करते हैं। दोनों के तत्व और घटनाएँ जटिल रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जबकि भौतिक वातावरण को मानवों द्वारा बहुत अधिक संशोधित किया गया है, इसने मानव जीवन को भी प्रभावित किया है।

भौतिक और मानव घटनाओं को अकसर मानव शरीर रचना के प्रतीकों का उपयोग करके उपमा में वर्णित किया जाता है, जैसे कि पृथ्वी का 'चेहरा', तूफान की 'आंख', नदी का मुंह', ग्लेशियर का 'नथुना', द्वीप का 'गर्दन' और मिट्टी का 'प्रोफाइल'।

इसी तरह, गांवों, शहरों और क्षेत्रों को 'जीवों' के रूप में वर्णित किया गया है। जर्मन भूगोलियों ने 'राज्य/देश' को 'जीवित जीव' के रूप में वर्णित किया है। सड़कों, रेलवे और जलमार्गों के नेटवर्क को अक्सर 'संचरण की धमनियों' के रूप में वर्णित किया गया है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P.) LTD.

21. व्यापार—व्यापार मूलत: अन्यत्र उत्पादित वस्तुओं की खरीद और बिक्री है। व्यापार सेवाएं लाभ के लिए होती हैं। ये सभी व्यापार सेवाएं नगरों और शहरों में होती हैं और इन्हें व्यापार केंद्र कहा जाता है।

(*a*) ग्रामीण विपणन केंद्र—ये केंद्र आस-पास के बस्तियों की सेवा करते हैं। ये अद्‌र्ध-शहरी केंद्र होते हैं। यहां व्यक्तिगत और पेशेवर सेवाएं अच्छी तरह विकसित नहीं होती हैं। ये स्थानीय संग्रहण और वितरण केंद्र बनाते हैं। इनमें से अधिकांश में मंडियां और खुदरा केंद्र भी होते हैं। ये ग्रामीण लोगों द्‌वारा मांगी जाने वाली वस्तुएं प्रदान करते हैं।

(*b*) शहरी विपणन केंन्द्र—ये शहरी सेवाएं प्रदान करते हैं। ये विशेषीकृत वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करते हैं। ये विनिर्मित वस्तुओं की बिक्री करते हैं। श्रम, आवास और अद्‌र्ध-निर्मित वस्तुओं के लिए बाज़ार आयोजित होते हैं। ये शिक्षा, शिक्षक, वकील, सलाहकार, चिकित्सक, दंत चिकित्सकभारत में ग्रामीण बस्तियों को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

22. भारत में ग्रामीण बस्तियों को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(*i*) क्लस्टर्ड (*ii*) सेमी-क्लस्टर्ड
(*iii*) हैमलेटेड (*iv*) बिखरे हुए।

नीचे चारों प्रकारों पर चर्चा की गई है :

1. क्लस्टर्ड बस्तियाँ—ये घनीभूत घरों के समूह होते हैं। सामान्य आवासीय क्षेत्र कृषि क्षेत्र से अलग होते हैं। ये बस्तियाँ आयताकार, रेडियल और रेखीय आकार में होती हैं।

2. सेमी-क्लस्टर्ड बस्तियाँ—ये सीमित क्षेत्रों में पाई जाती हैं। ये एक बड़े घनीभूत गाँव के विखंडन के परिणामस्वरूप होती हैं। सामान्यत:, भूमि मालिक गाँव के केंद्रीय भाग पर कब्ज़ा करते हैं और निम्न वर्ग के लोग गाँव के बाहरी किनारों पर रहते हैं।

3. हैमलेटेड बस्तियाँ—जब एक गाँव सामाजिक और जातीय कारकों पर विखंडित होता है, तो बस्ती को कई इकाइयों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें पन्ना, पारा, पल्लि, नागला और ढाणी कहा जाता है।

4. बिखरी हुई बस्तियाँ—अलग-थलग बस्तियों को बिखरी हुई बस्तियाँ कहा जाता है। ये जंगलों में पहाड़ी ढलानों और बिखरे हुए खेतों में पाई जाती हैं।

ग्रामीण बस्तियों के पैटर्न को प्रभावित करने वाले कारक

(*i*) स्थलाकृति की प्रकृति, (*ii*) ऊँचाई, (*iii*) जलवायु और (*iv*) जल की उपलब्धता

23. एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीना, ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होना और एक उचित जीवन जीने के लिए पर्याप्त साधन होना मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं।

मानव विकास के चार स्तंभ

जैसे किसी भी भवन को स्तंभों द्‌वारा समर्थित किया जाता है, मानव विकास का विचार समानता, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण के सिद्‌धांतों द्वारा समर्थित है।

(*i*) समानता का अर्थ है सभी के लिए अवसरों की समान पहुंच बनाना। लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों को उनके लिंग, जाति, आय और भारतीय संदर्भ में, जाति के बावजूद समान होना चाहिए। फिर भी, यह अकसर ऐसा नहीं होता और लगभग हर समाज में होता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश में, यह देखना दिलचस्प है कि अधिकांश स्कूल ड्रॉपआउट किस समूह से संबंधित हैं। इससे ऐसे व्यवहार के कारणों को समझने में मदद मिलनी चाहिए। भारत में, बड़ी संख्या में महिलाएं और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लोग स्कूल छोड़ देते हैं। यह दिखाता है कि इन समूहों के विकल्प ज्ञान की पहुंच न होने के कारण सीमित हो जाते हैं।

(*ii*) स्थिरता का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। स्थायी मानव विकास के लिए, प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलने चाहिए। सभी पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी का भी दुरुपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की कमी का कारण बनेगा। एक अच्छा उदाहरण लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व के बारे में है। यदि कोई समुदाय अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व पर जोर नहीं देता है, तो तब ये युवा महिलाएं बड़ी होंगी, तो उनके लिए कई अवसर खो जाएंगे। उनके करियर के विकल्प गंभीर रूप से सीमित हो जाएंगे और यह उनके जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करेगा। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए विकल्पों और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

(*iii*) **उत्पादकता** का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है। ऐसी उत्पादकता को लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके लगातार समृद्‌ध किया जाना चाहिए। अंतत: लोग राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति हैं। इसलिए, उनके ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास, या बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना अंतत: बेहतर कार्य दक्षता की ओर ले जाता है।

(*iv*) सशक्तिकरण का अर्थ है विकल्प बनाने की शक्ति होना। ऐसी शक्ति स्वतंत्रता और क्षमता को बढ़ाने से आती है। लोगों को सशक्त बनाने के लिए अच्छे शासन और जन केंद्रित नीतियों की आवश्यकता होती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण विशेष महत्व रखता है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 24 से 28 दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. भारत के जनांकिकीय इतिहास को निम्नलिखित चार अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है—

(*i*) 1921 से पूर्व—इस अवधि में जनसंख्या वृद्‌धि बहुत धीमी थी। जन्म दर तथा मृत्यु-दर दोनों ही उच्च थे। इस अध्ययन के आधार पर सन् 1921 को *जनांकिकीय विभाजक* (Demographic Divide) कहा जाता है।

(*ii*) 1921 और 1951 के मध्य—इस अवधि में उच्च जन्म-दर तथा घटती मृत्यु-दर के कारण जनसंख्या में निरंतर वृद्‌धि हुई। स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के कारण प्लेग, हैज़ा, मलेरिया आदि महामारियों के कारण होने वाली मौतें घट गईं। परिवहन के विकसित साधनों द्‌वारा खाद्‌यान्न भेजने से अकाल के कारण भी मौतें घट गईं। इसे *मृत्यु प्रेरित वृद्‌धि* (Mortality induced growth) कहते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

***(iii)* 1951 और 1981 के मध्य**—इस अवधि में तीव्र गति से वृद्धि के कारण भारत की जनसंख्या लगभग दुगुनी हो गई। स्वास्थ्य सेवाओं के अधिक सुधार के कारण जन्म-दर की तुलना में मृत्यु-दर तेज़ी से घटी। इस प्रकार यह प्रजनन प्रेरित वृद्धि (Faculity induced growth) थी।

***(iv)* 1981 के पश्चात्**—इस अवधि में जन्म-दर कम होने तथा कम मृत्यु-दर के कारण वृद्धि दर में क्रमिक ह्रास हुआ, इस अवधि में जन्म-दर तेज़ी से घटी। यह 1981 में 34 प्रति हज़ार से घटकर 1999 में 26 प्रति हज़ार हो गई। यह प्रवृत्ति छोटे परिवार (Small Family) के प्रति अपने रुझान का सकारात्मक संकेत है।

2023 में 0.81% बढ़ी है जो कि 2022 में 0.68% बढ़ी थी 2021 साल के मुकाबले। भारत की जनसंख्या 2023 में 1,428,627,663 के करीब है।

25. स्थानांतरी कृषि—यह कृषि का बहुत प्राचीन ढंग है। यह कृषि उष्ण कटिबंधीय वन प्रदेशों में आदिवासियों का मुख्य धंधा है। वनों को काट कर तथा झाड़ियों को जला कर भूमि को साफ कर लिया जाता है। वर्षा काल के पश्चात् उसमें फ़सलें बोई जाती हैं। जब दो-तीन फ़सलों के पश्चात् उस भूमि का उपजाऊपन नष्ट हो जाता है, तो उस क्षेत्र को छोड़कर दूसरी भूमि में कृषि की जाती है। यहां खेत *बिखरे-बिखरे* होते हैं, यह कृषि छोटे पैमाने पर होती है तथा *स्थानीय मांग* को ही पूरा कर पाती है। यह कृषि प्राकृतिक दशाओं के अनुकूल होने के कारण ही होती है। इसमें खाद, उत्तम बीजों या यंत्रों का कोई प्रयोग नहीं होता। इस प्रकार की कृषि में खेतों का हेरफेर होता है। इस कृषि पर लागत कम होती है। संसार में इस कृषि के क्षेत्रों का विस्तार कम होता जा रहा है। क्योंकि उपज कम होने तथा मृदा उर्वरता घटने की समस्याएं हैं।

प्रदेश तथा फ़सलें—प्राय: इस कृषि में मोटे अनाजों की कृषि होती है जैसे चावल, मक्की, शकरकंद, ज्वार आदि। भारत में अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड तथा मिज़ोरम प्रदेश में **झूमिंग** (Jhumming) नामक कृषि की जाती है। मध्य अमेरिका में उसे **मिलपा** (Milpa), मलेशिया तथा इंडोनेशिया में **लदांग** (Ladang) कहते हैं।

अथवा

(ख) **मिश्रित कृषि :** यह मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी यूरोप, पूर्वी उत्तरी अमेरिका, कुछ हिस्सों में यूरेशिया और दक्षिणी महाद्वीपों के मौसमी अक्षांशों में प्रचलित है।

विशेषताएँ—

(1) फसलों की खेती और पशुपालन पर बराबर जोर दिया जाता है।

(2) यह पूंजी गहन है।

(3) मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल रोटेशन और अंत: फसल रोपण की आवश्यकता है।

(4) कृषि मशीनरी और भवन, किसानों के कौशल और विशेषज्ञता तथा रासायनिक उर्वरकों के व्यापक उपयोग के लिए व्यय की आवश्यकता है।

26. (क) जनसंख्या घनत्व का अर्थ है प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहने वाले लोगों की औसत संख्या। इसे अंकगणितीय घनत्व कहा जाता है। इसे इस प्रकार गणना की जाती है—

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्र}}$$

भारत की जनसंख्या घनत्व 2011 में—

$$\frac{\text{1210 करोड़ व्यक्ति}}{\text{382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी}} = \text{32.8 लाख वर्ग किमी क्षेत्र}$$

इस औसत घनत्व के साथ 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी, भारत को विश्व के सबसे आबादी वाले देशों में से एक माना जाता है।

जनसंख्या का वितरण

भारत में जनसंख्या विभिन्न राज्यों में समान रूप से वितरित नहीं है। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु भारत के सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्य हैं, जबकि हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, सिक्किम, नागालैंड, मेघालय और त्रिपुरा कम जनसंख्या वाले राज्य हैं। जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(क) भौतिक कारक, (ख) सामाजिक-आर्थिक कारक, (ग) जनसांख्यिकीय कारक।

जनसंख्या के घनत्व को निर्धारित करने वाले कारको का वर्णन करें—

1. भूमि का राहत—समतल क्षेत्र पहाड़ों और पठारों की तुलना में अधिक जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि समतल क्षेत्रों में व्यापार, उद्योग और कृषि करना आसान होता है। इसके विपरीत, हिमाचल प्रदेश और मेघालय जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में घनत्व कम होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापार, उद्योग और कृषि के संचालन के लिए समतल भूमि, परिवहन, सिंचाई आदि जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं। गंगा और सतलुज के उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

2. जलवायु—लद्दाख और उत्तरी हिमाचल प्रदेश की अत्यधिक ठंडी जलवायु, राजस्थान के थार रेगिस्तान की अत्यधिक गर्म जलवायु और मेघालय की नम जलवायु मानव बस्तियों को हतोत्साहित करती है।

3. वर्षा—नियमित और मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र घनी जनसंख्या वाले होते हैं। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल में, जनसंख्या घनत्व 1029 प्रति वर्ग किमी है, जो कृषि के लिए लाभकारी पर्याप्त वर्षा के कारण है।

4. सिंचाई सुविधाएं—यदि किसी क्षेत्र में वर्षा कम है लेकिन सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध हैं, तो कृषि संभव हो जाती है, जो बड़े जनसंख्या का समर्थन करती है। इसी कारण हम आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में उच्च घनत्व पाते हैं, जहाँ सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध है।

5. मिट्टी—उपजाऊ मिट्टियाँ कृषि के लिए उपयुक्त होती हैं। नदी की घाटियाँ, डेल्टास और निम्न भूमियाँ सबसे उत्पादक क्षेत्र होते हैं। नदी की घाटियाँ घनी जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं। कम उपजाऊ मिट्टियों वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम होती हैं।

6. खनिज—खनिज भंडार की उपस्थिति उच्च जनसंख्या घनत्व का समर्थन करती है। दामोदर घाटी में खनिजों की उपस्थिति नए शहर उभरे हैं। कोयला, जल शक्ति और पेट्रोलियम उद्योगों के स्थान को प्रभावित करते हैं। ये औद्यौगिक क्षेत्र बड़ी जनसंख्या का समर्थन करते हैं।

7. नदियाँ और जल आपूर्ति—नदियाँ जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत है। अधिकांश शहर नदियों के किनारे स्थित हैं। प्राचीन सभ्यता नदी की घाटियों में विकसित हुई। रेगिस्तान जल की कमी के कारण कम जनसंख्या वाले होते हैं।

8. कृषि—उत्पादक क्षेत्र सामान्यत: घनी जनसंख्या का समर्थन कर सकते हैं। पश्चिम बंगाल में, चावल उगाने वाले क्षेत्रों में वर्ष में तीन फसलें प्राप्त होती हैं। इसलिए, पश्चिम बंगाल के कृषि क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व उच्च है। आधुनिक उच्च उपज वाली फसलों को अपनाने वाले क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व उच्च होता है, जैसे पंजाब।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

9. परिवहन के साधन—परिवहन के साधन उद्योगों, कृषि और व्यापार को प्रभावित करते हैं। विकसित परिवहन के साधनों वाले क्षेत्र जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। पहाड़ी जैसे कठिन पहुँच वाले क्षेत्र कम जनसंख्या वाले होते हैं।

10. जनसांख्यिकीय कारक—प्रजनन, मृत्यु दर, प्रवासन और शहरीकरण भी जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करते हैं।

अथवा

(ख) एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीना, ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होना और एक उचित जीवन जीने के लिए पर्याप्त साधन होना मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं।

मानव विकास के चार स्तंभ

जैसे किसी भी भवन को स्तंभों द्वारा समर्थित किया जाता है, मानव विकास का विचार समानता, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों द्वारा समर्थित है।

(1) समानता का अर्थ है सभी के लिए अवसरों की समान पहुंच बनाना। लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों को उनके लिंग, जाति, आय और भारतीय संदर्भ में, जाति के बावजूद समान होना चाहिए। फिर भी, यह अकसर ऐसा नहीं होता और लगभग हर समाज में होता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश में, यह देखना दिलचस्प है कि अधिकांश स्कूल ड्रॉपआउट किस समूह से संबंधित हैं। इससे ऐसे व्यवहार के कारणों को समझने में मदद मिलनी चाहिए। भारत में, बड़ी संख्या में महिलाएं और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लोग स्कूल छोड़ देते हैं। यह दिखाता है कि इन समूहों के विकल्प ज्ञान की पहुंच न होने के कारण सीमित हो जाते हैं।

(2) स्थिरता का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। स्थायी मानव विकास के लिए, प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलने चाहिए। सभी पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी का भी दुरुपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की कमी का कारण बनेगा। एक अच्छा उदाहरण लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व के बारे में है। यदि कोई समुदाय अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व पर जोर नहीं देता है, तो तब ये युवा महिलाएं बड़ी होंगी, तो उनके लिए कई अवसर खो जाएंगे। उनके करियर के विकल्प गंभीर रूप से सीमित हो जाएंगे और यह उनके जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करेगा। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए विकल्पों और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

(3) **उत्पादकता** का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है। ऐसी उत्पादकता को लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके लगातार समृद्ध किया जाना चाहिए। अंततः लोग राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति हैं। इसलिए, उनके ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास, या बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना अंततः बेहतर कार्य दक्षता की ओर ले जाता है।

(4) सशक्तिकरण का अर्थ है विकल्प बनाने की शक्ति होना। ऐसी शक्ति स्वतंत्रता और क्षमता को बढ़ाने से आती है। लोगों को सशक्त बनाने के लिए अच्छे शासन और जन केंद्रित नीतियों की आवश्यकता होती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण विशेष महत्व रखता है।

27. (क) नमामि गंगे कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

(1) नदियों का विकास करना

(2) नदियों के तल की सफाई

(3) शहरों में सीवर ट्रीटमेंट की व्यवस्था करना

(4) औद्योगिक प्रवाह की निगरानी

(5) नदी के किनारों पर वनीकरण।

अथवा

(ख) भूमि कटाव रोकने तथा भूमि की उर्वरता को बनाए रखने की दृष्टि से विभिन्न पग उठाए गए हैं। मरुस्थलों के विस्तार को रोकने, शुष्क कृषि प्रणाली के विस्तार के कार्य अपनाए जा रहे हैं। देश में लगभग 500 लाख एकड़ बेकार भूमि को कृषि योग्य बनाने व सुधारने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। 'कल्लर' (क्षारीय) भूमि तथा कंदरायुक्त भूमि को कृषि योग्य बनाया जा रहा है। इस प्रकार जल प्लावन (Water Logging), क्षारीयता (Salination) तथा भू-क्षरण (Soil Erosion) के कार्यक्रम अपनाए गए हैं। मिट्टियों के सर्वेक्षण पर भी ध्यान दिया गया है।

28. (क) 1. जनसंख्या का घनत्व मानव और भूमि के संबंध का एक माप है। इसे प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्त किया जाता है। यह भूमि के संबंध में जनसंख्या के स्थापिक वितरण को बेहतर समझने में मदद करता है।

2. भौतिक कारक जैसे जलवायु भू-भाग और जल की उपलब्धता जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र, डेल्टास और तटीय मैदानी क्षेत्रों में देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक जनसंख्या का अनुपात है।

3. आर्थिक कारक जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और परिवहन नेटवर्क का विकास दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बैंगलोर, पुणे आदि के शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के उच्च संकेद्रण का कारण बनते हैं।

अथवा

(ख) जनसंख्या की वृद्धि उस विशेष क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या में परिवर्तन है जो दो बिंदुओं के बीच होती है। भारत में जनसंख्या की दशक और वार्षिक वृद्धि दर दोनों बहुत उच्च और स्थिर हैं।

दशक 1921-1951

(1) यह जनसंख्या की स्थिर वृद्धि का एक काल है।

(2) स्वास्थ्य और स्वच्छता में समग्र सुधार हुआ।

(3) इससे मृत्यु दर में कमी आई।

(4) कच्ची मृत्यु दर उच्च बनी रही।

दशक 1951-1981

(1) यह भारत में जनसंख्या विस्फोट का एक काल है।

(2) मृत्यु दर में तेज़ी से गिरावट आई।

(3) जनसंख्या की उच्च प्रजनन दर थी।

(4) जीवन की परिस्थितियों में सुधार हुआ।

(5) पड़ोसी देशों जैसे बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान आदि से प्रवासन ने भारत में उच्च वृद्धि दर में योगदान दिया।

HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. रियोडिजेनेरो

ख. फोर्टफर्थ

ग. स्वेज नहर

घ. ब्राजील

ङ सैंटपीटर्सबर्ग

च. अंगोला

छ. अमेरिका के प्रेयरीज।

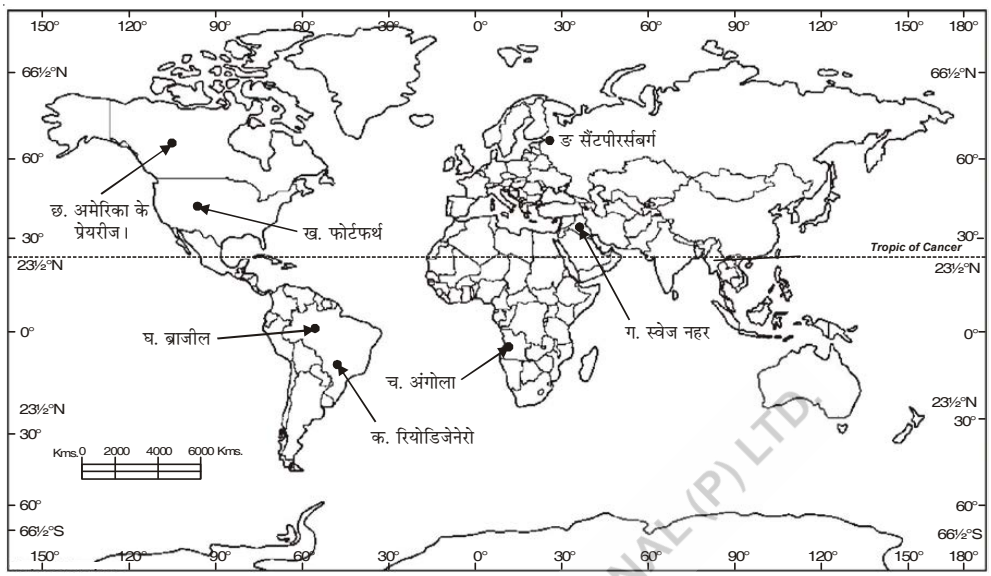

30. 30.1 उत्तर प्रदेश

30.2 बैरोनी

30.3 तालेचर

30.4 मुंबई

30.5 केरल

30.6 अमृतसर

30.7 रत्नागिरी।

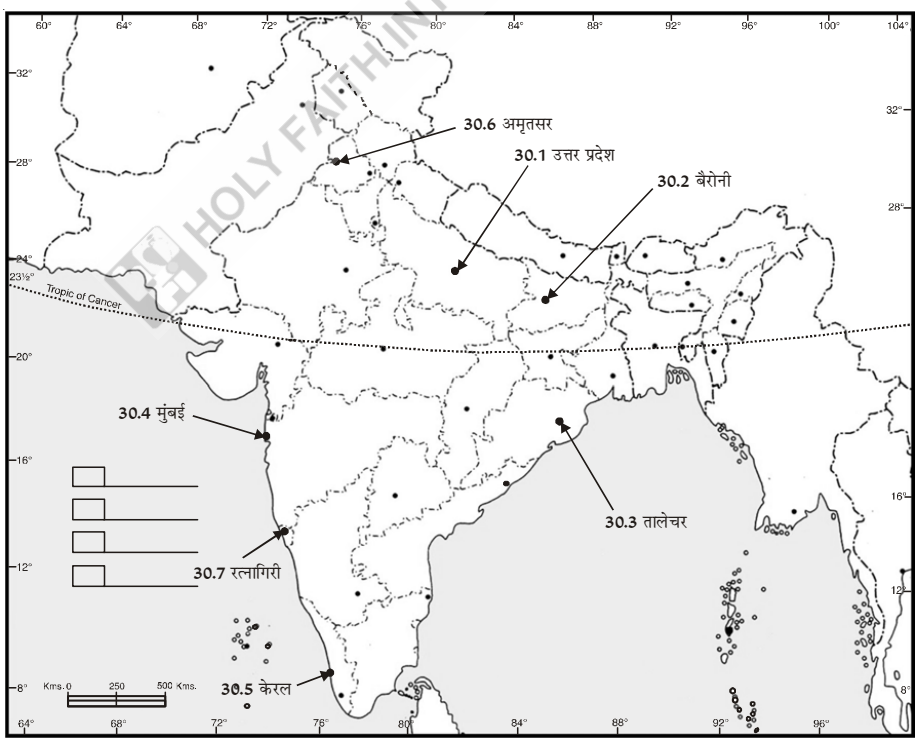

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–4

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्रश्न संख्या 1 से 17 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) **17 × 1 = 17**

1. (*d*) स्वर्णरेखा।
2. (*a*) कृषि।
3. (*c*) राजस्थान और महाराष्ट्र।
4. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R) (A) की सही व्याख्या है।
5. (*a*) अवनालिका अपरदन।
6. (*a*) कपास।
7. (*a*) असम।
8. (*b*) मुंबई हाई।
9. (*a*) एन. एच. 5- चेन्नई-पश्चिम बंगाल।
10. (*b*)

A	B	C	D
III	IV	II	I.

11. (*a*) श्रीनगर-कन्याकुमारी।
12. (*c*) दोनों (A) और (R) सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।
13. (*b*) कोच्चि।
14. (*c*) दोनों (A) और (R) सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।
15. (*d*) इनमें से सभी।
16. (*b*) 130.
17. (*b*) क्षेत्र का आकार।

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्त्रोत आधारित प्रश्न हैं) **2 × 3 = 6**

18. 18.1 गड्डी जनजातीय समुदायों ने हिमालय क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाए रखी है क्योंकि उन्होंने ट्रांसह्यूमंस का अभ्यास किया और गड्डियाली बोली में बातचीत की।

18.2 भरमौर जनजातीय क्षेत्र की जलवायु की स्थिति कठोर है, संसाधनों का आधार कम है और पर्यावरण नाजुक है। ये कारक क्षेत्र के समाज और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

18.3 इस योजना ने परिवहन और संचार, कृषि और सहायक गतिविधियों और सामाजिक और सामुदायिक सेवाओं के विकास पर सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

19. 19.1 पनामा नहर।

19.2 बालबोआ, कोलोन।

19.3 प्रशांत तथा अटलांटिक महासागर।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं) **4 × 3 = 12**

20. (*i*) भूगोल के द्वैतवाद के आशय के व्यापक तर्क-वितर्क हैं कि क्या भूगोल का अध्ययन प्रादेशिक या क्रमबद्ध होना चाहिए। इसे द्वैतवाद कहते हैं। नोमोथेटिक शब्द का अर्थ है भूगोल का नियमबद्ध होना तथा इडियोग्राफ़िक शब्द के अर्थ है कि भूगोल का विवरणात्मक होना।

(*ii*) क्या भौगोलिक परिघटनाओं की व्याख्या सैद्धांतिक आधार पर होनी चाहिए अथवा ऐतिहासिक संस्थागत उपागम के आधार पर हो।

(*iii*) इसी प्रकार द्वैतवाद प्रकृति तथा मानव के बीच बौद्धिक अभ्यास का मुद्दा है।

अथवा

(ख) ग्रिफ़िथ टेलर ने नियो-निर्धारणवाद या रोकने और आगे बढ़ने वाले निर्धारणवाद की अवधारणा को गढ़ा। इसे पर्यावरणीय निर्धारणवाद और संभाव्यता के दो विचारों के बीच एक मध्य मार्ग के रूप में देखा जा सकता है।

नियो-निर्धारणवाद संतुलन लाने का प्रयास करता है क्योंकि इसका अर्थ है कि न तो पूर्ण आवश्यकता की स्थिति है (पर्यावरणीय निर्धारणवाद) और न ही पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति है (संभाव्यता)। इसका मतलब है कि मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं यदि वे इसके आदेशों का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, मानव ने ठंडे और गर्म क्षेत्रों में रहने के लिए ठंड और गर्मी प्रतिरोधी घर बनाए। लेकिन यह नहीं भुलाया जाना चाहिए कि हम प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण या पर्यावरण में हस्तक्षेप के कारण प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर रहे हैं। हम ग्रीनहाउस प्रभाव और भूमि अपक्षय जैसी पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

21. विभिन्न प्रकार की दुकानों का वर्णन इस प्रकार है:

दुकानों को ग्रामीण और शहरी विपणन केंद्रों में विभाजित किया जा सकता है।

1. ग्रामीण विपणन केंद्र—ये केंद्र निकवर्ती बस्तियों की सेवा करते हैं। ये अर्द्धशहरी केंद्र होते हैं। ये प्राथमिक प्रकार के होते हैं जहाँ

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

व्यक्तिगत और पेशेवर सेवाएँ इतनी अच्छी तरह से विकसित नहीं होती हैं। ये ज्यादातर स्थानीय संग्रह और वितरण के रूप में कार्य करते हैं। इनमें से अधिकांश में 'मंडी' होती हैं जो थोक बाज़ार और खुदरा केंद्र होते हैं। ये ग्रामीण लोगों द्वारा मांगे जाने वाले सामान की आपूर्ति करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आवधिक बाज़ार आयोजित होते हैं जो साप्ताहिक या द्वि-साप्ताहिक हो सकते हैं।

2. शहरी विपणन केंद्र—ये बाज़ार शहरी क्षेत्रों में सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये सामान्य और विशेषीकृत सामान और सेवाएं प्रदान करते हैं। श्रम, आवास और अर्द्ध या तैयार उत्पादों के लिए विशेष बाज़ार यहाँ आयोजित होते हैं। ये वकीलों, सलाहकारों, चिकित्सकों, दंत चिकित्सकों, शिक्षा विशेषज्ञों और पशु चिकित्सकों की सेवाएँ भी प्रदान करते हैं।

22. जीवन-शैली, व्यवहार तथा दृष्टिकोण के आधार पर इन दोनों में अंतर किए जा सकते हैं —

ग्रामीण लोग कम गतिशील होते हैं। इनमें सामाजिक सम्बन्ध बहुत प्रगाढ़ होते हैं। ये अपने काम-धन्धे साधारण तकनीकों के द्वारा पूरा करते हैं। इनके जीवन की गति धीमी होती है।

नगरीय क्षेत्रों में लोगों का जीवन जटिल व तेज़ होता है। सामाजिक सम्बन्ध औपचारिक और दिखावटी होते हैं। इनकी पारिस्थितिकी तथा प्रौद्योगिकी ग्रामीण क्षेत्रों से उन्नत होती है।

23. भारतीय शहरों की प्रमुख विशेषताएं—भारतीय शहरों की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं—

(1) अधिकतर कस्बे और शहर बड़े गांव के विस्तृत रूप हैं। इनकी गलियों में गांव का स्वरूप स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

(2) अपनी आदतों और व्यवहार में लोग अधिक ग्रामीण हैं जो उनके सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण, मकानों की बनावट और अन्य पक्षों में स्पष्ट दिखाई देता है।

(3) अधिकतर शहरों में अनेक मलिन बस्तियां हैं। ये प्रवास के प्रतिकर्ष कारकों का परिणाम हैं। इसमें आर्थिक अवसरों का योगदान कम है।

(4) अनेक शहरों में पूर्व शासकों और प्राचीन प्रकार्यों के चिह्न स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं।

(5) प्रकार्यात्मक पृथक्करण स्पष्ट तथा प्रारम्भिक है। भारतीय शहरों की पश्चिमी देशों के शहरों के साथ इस संदर्भ में कोई तुलना नहीं की जा सकती।

(6) जनसंख्या का सामाजिक पृथक्करण, जाति,धर्म, आय अथवा व्यवसाय के आधार पर किया जाता है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 24 से 28 दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. प्रवासन एक ऐसा घटनाक्रम है जिसमें लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थायी, अस्थायी या मौसमी आधार पर बसने के इरादे से जाते हैं।

1 . जिस क्षेत्र से लोग जाते हैं उसे 'उत्पत्ति स्थान' कहा जाता है और जिस क्षेत्र में वे जाते हैं उसे 'गंतव्य स्थान' कहा जाता है।

2. प्रवासन ग्रामीण से ग्रामीण क्षेत्रों, ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों, शहरी से शहरी क्षेत्रों और शहरी से ग्रामीण क्षेत्रों में हो सकता है।

3. नए क्षेत्र में जाने वाले प्रवासियों को आव्रजन कहा जाता है। जो लोग किसी क्षेत्र से बाहर जाते हैं उन्हें प्रवासी कहा जाता है।

4. धकेलने और खींचने वाले कारक दो सेट के कारक हैं जो प्रवासन को प्रभावित करते हैं।

(क) धकेलने वाले कारण—प्रतिकूल जीवन स्थितियाँ जो लोगों को उनके मूल स्थान को छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं और जिनके लिए लोग अपने मूल स्थान से बाहर जाने के लिए ज़िम्मेदार होते हैं, उन्हें धकेलने वाले कारण कहा जाता है। ये हैं—

(*i*) बेरोज़गारी, खराब जीवन स्थितियाँ, सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन।

(*ii*) राजनीतिक अशांति, अस्थिर या सताने वाली सरकार जो लोगों को असुरक्षित बनाती है।

(*iii*) खराब जलवायु, प्राकृतिक आपदाएँ, महामारी और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन।

(ख) खींचने वाले कारण—ये वे कारक हैं जो लोगों को विभिन्न स्थानों से आकर्षित करते हैं। ये गंतव्य स्थान को मूल स्थान की तुलना में निम्नलिखित कारणों से अधिक आकर्षक बनाते हैं—

(*i*) बेहतर नौकरी के अवसर और बेहतर जीवन स्थितियाँ।

(*ii*) शांति और स्थिरता, जीवन और संपत्ति की सुरक्षा।

(*iii*) सुखद जलवायु।

25. (क) आत्म-निर्भर कृषि वह प्रकार की खेती है जिसमें फसलें स्थानीय जनसंख्या की उपभोग के लिए उगाई जाती हैं। इसे प्राचीन आत्मनिर्भर कृषि और गहन आत्म-निर्भर कृषि में वर्गीकृत किया जाता है।

प्राचीन आत्म-निर्भर कृषि की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1)वनस्पति को आग से साफ किया जाता है और राख मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाती है। इसलिए, इसे 'स्लैश एंड बर्न' कृषि भी कहा जाता है।

(2) जो भूखंड खेती के लिए उपयोग किए जाते हैं, वे बहुत छोटे होते हैं और खेती प्राचीन उपकरणों जैसे लकड़ी और फावड़ों से की जाती है।

(3) लगभग 3 से 5 वर्षों के बाद, मिट्टी अपनी उर्वरता खो देती है और किसान दूसरे भाग में स्थानांतरित होता है और खेती के लिए जंगल का अन्य भूखंड साफ करता है।

(4) कुछ समय बाद, किसान पहले के भूखंड पर लौट सकता है।

अथवा

(ख) यह कृषि का प्रकार मुख्य रूप से मानसून एशिया के घनी आबादी वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।

गहन आत्मनिर्भर कृषि के दो प्रकार हैं—

1. गहन आत्मनिर्भर कृषि जो गीले धान की खेती पर हावी है—इस प्रकार की कृषि चावल की फसल की प्रमुखता से पहचानी जाती है। जनसंख्या की उच्च घनत्व के कारण भूमि धारक बहुत छोटे होते हैं। किसान पारिवारिक श्रम की मदद से काम करते हैं जिससे भूमि का गहन उपयोग होता है। मशीनरी का उपयोग सीमित है और अधिकांश कृषि कार्य मैनुअल श्रम द्वारा किए जाते हैं। खेत में खाद मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए उपयोग की जाती है। इस प्रकार की कृषि में प्रति इकाई क्षेत्र की उपज होती है लेकिन प्रति श्रमिक उत्पादकता कम होती है।

2. गहन आत्मनिर्भर कृषि जो धान के अलावा अन्य फसलों पर हावी है—राहत, जलवायु, मिट्टी और कुछ अन्य भौगोलिक कारकों में भिन्नता के कारण, मानसून एशिया के कई हिस्सों में धान उगाना व्यावहारिक नहीं है। गेहूँ, सोयाबीन, जौ और ज्वार उत्तरी चीन, मन्चूरिया, उत्तर

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

कोरिया और उत्तर जापान में उगाए जाते हैं। भारत में गेहूँ को इंडो-गंगेय मैदान के पश्चिमी हिस्सों में उगाया जाता है और बाजरा पश्चिमी और दक्षिणी भारत के सूखे हिस्सों में उगाया जाता है। इस प्रकार की कृषि की अधिकांश विशेषताएँ गीले धान द्वारा हावी कृषि के समान होती हैं सिवाय इसके कि सिंचाई का अकसर उपयोग किया जाता है।

26. (क) स्वतंत्रता के लंबे वर्षों के बाद, भारत आम जनता के लिए विकास के मुद्दे से जूझ रहा है। 75 वर्षों के दौरान, हम काफी आगे बढ़ चुके हैं लेकिन अभी भी कई मुद्दे हैं जिन्हें हल करने की आवश्यकता है। आर्थिक विकास से लेकर बढ़ते शहरीकरण तक, भारत ने विशाल परिवर्तन देखा है लेकिन क्षेत्रीय विषमताएं और धन और संसाधनों का असमान वितरण अभी भी हमारे समाज को बड़े पैमाने पर परेशान करता है। इसे सरकार की नीतियों और उपायों के संदर्भ में और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

भारत में लगातार सरकारों ने पिछले कुछ दशकों में जन हितैषी और गरीब-हितैषी नीतियों को लागू करने का प्रयास किया है। हालांकि, इसका प्रभाव बहुत व्यापक नहीं रहा है। ऐसे कई उदाहरण हैं जब सबसे गरीब लोगों को व्यापक विकास की ओर केंद्रित सरकारी नीतियों का लाभ नहीं मिल पाया है। यह विशेष रूप से कुछ राज्यों के लिए सच है जहाँ अभी भी अधिकांश जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवित है। इसके अलावा, अनियंत्रित आर्थिक विकास के कारण पर्यायवरण में जो गिरावट आई है, वह भी उल्लेखनीय है। इसलिए, यह आवश्यक है कि विकास तब हो जब मानव कल्याण सर्वोपरि हो।

अथवा

(ख) मानव विकास को मापने के तरीके लगातार परिष्कृत किए जा रहे हैं और मानव विकास के विभिन्न तत्त्वों को पकड़ने के नए तरीके खोजे जा रहे हैं। शोधकर्ताओं ने किसी विशेष क्षेत्र में भ्रष्टाचार या राजनीतिक स्वतंत्रता के स्तर के बीच संबंध पाया है। एक राजनीतिक स्वतंत्रता सूचकांक और सबसे भ्रष्ट देशों की सूची पर भी चर्चा हो रही है।

मानव विकास सूचकांक मानव विकास में उपलब्धियों को मापता है। यह मानव विकास के प्रमुख क्षेत्रों में क्या हासिल किया गया है, को दर्शाता है। फिर भी, यह सबसे विश्वसनीय माप नहीं है। इसका कारण यह है कि यह वितरण के बारे में कुछ नहीं कहता। मानव गरीबी सूचकांक मानव विकास सूचकांक से संबंधित है। यह सूचकांक मानव विकास में कमी को मापता है। यह गैर-आय माप है।

40 वर्ष की आयु तक जीवित न रहने की संभावना, वयस्क निरक्षरता दर, उन लोगों की संख्या जिनके पास स्वच्छ पानी तक पहुंच नहीं है, और उन छोटे बच्चों की संख्या जो कम वजन के होते हैं, सभी मानव विकास में कमी को दिखाने के लिए ध्यान में रखे जाते हैं। अकसर मानव गरीबी सूचकांक मानव विकास सूचकांक से अधिक प्रकट होता है। मानव विकास के इन दोनों मापों को एक साथ देखने से किसी देश में मानव विकास की स्थिति का सटीक चित्र मिलता है।

27. (क) **भूमि प्रदूषण**—भूमि प्रदूषण में ह्रास और मृदा तथा वनस्पति के आवरण का प्रदूषण शामिल है। मृदा की गुणवत्ता के घटने के ये कारण हैं—(1) मृदा अपरदन, (2) पौधों के पोषक तत्त्वों में कमी, (3) मृदा में सूक्ष्म जीवों का घटना, (4) नमी की कमी, (5) विभिन्न हानिकारक तत्त्वों का संकेंद्रण आदि। अपरदन प्राकृतिक और मानवीय दोनों प्रकार के कारकों से होता है। निर्वनीकरण, अतिचराई और भूमि का अनुचित उपयोग भी अपरदन की गति को तेज़ कर देते हैं। एक अनुमान के अनुसार देश की 13 करोड़ हेक्टेयर भूमि अपरदन की समस्याओं से पीड़ित है। केवल स्थानांतरी कृषि के कारण ही तीन करोड़ हेक्टेयर भूमि अपरदन से प्रभावित है। अपरदन के अतिरिक्त, मृदा के लवणीकरण और जल भराव के निम्नलिखित कारण हैं—भूविज्ञान की दृष्टि से अनुपयुक्त क्षेत्रों में बांधों, जलाशयों, नहरों और तालाबों का निर्माण, नहरी सिंचाई का अत्यधिक उपयोग और अप्रवेश्य चट्टानों वाले क्षेत्रों में बाढ़ के पानी का रुख मोड़ना। इनके द्वारा भूमि की संभावित क्षमता घटती है। अति सिंचाई के कारण देश के उत्तरी मैदानों में लवणीय और क्षारीय क्षेत्रों में वृद्धि हुई है। सिंचाई मृदा की संरचना को भी बदल देती है। इनके अलावा, रासायनिक उर्वरक, पीड़कनाशी, कीट-नाशी और शाक-नाशी मृदा के प्राकृतिक, भौतिक रासायनिक और जैविक गुणों को नष्ट करके, मृदा को बेकार कर देते हैं।

अथवा

(ख) जब भौतिक, रासायनिक तथा जैविक तत्त्वों द्वारा वायुमण्डल की वायु में ऐसे अनैच्छिक परिवर्तन हो जायें जिनसे जैव समुदाय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े उसे वायुमण्डलीय प्रदूषण (Atmospheric pollution) कहते हैं। 18वीं शताब्दी में हुई औद्योगिक क्रान्ति व भाप के इंजन के आविष्कार से तो वायु प्रदूषण में अत्यधिक वृद्धि होने लगी। कोयले के अधिकाधिक उपयोग तथा इससे उत्पादित धुआँ व गंधक के यौगिकों ने वायुमण्डल को अधिक-से-अधिक दूषित करना प्रारम्भ कर दिया था।

प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा वायु प्रदूषण—प्राकृतिक वायु प्रदूषण मानव के जन्म से पहले से होता आ रहा है और यह वायुमण्डलीय प्रदूषण का प्रमुख स्रोत है। प्राकृतिक वायु प्रदूषण के विभिन्न स्रोत अग्रलिखित हैं—

(*i*) ज्वालामुखी विस्फोट (Volcanic eruptions)

(*ii*) दावाग्नि (Forest fires)

(*iii*) जैविक तथा अजैविक पदार्थों का प्राकृतिक अपघटन (Natural decay of organic and inorganic matter)

ज्वालामुखी विस्फोटों द्वारा वायुमण्डल में धूल, ज़हरीली गैसों, धुएँ के कणों तथा ऊष्मा की बहुत अधिक मात्रा मिश्रित हो जाती है। दावाग्नि द्वारा भी धुआँ, राख और गैसें आदि वायु में मिलते हैं। पदार्थों के अपघटन द्वारा भी दुर्गंध तथा सल्फर ऑक्साइड तथा नाइट्रोजन जैसी हानिकारक गैसें उत्पन्न होती हैं। वायुमण्डलीय प्रदूषण का लगभग 99% भाग केवल इन प्राकृतिक प्रकियाओं द्वारा ही उत्पन्न होता है जबकि मात्र एक प्रतिशत भाग मानवीय प्रक्रियाओं द्वारा होता है।

मानवीय क्रियाओं द्वारा वायु प्रदूषण—मानवीय क्रियाओं द्वारा वायु प्रदूषण मुख्यत: निम्नलिखित कारणों से होता है—

(*i*) जीवाश्म ईंधनों का जलाया जाना

(*ii*) रासायनिक प्रक्रियाएं।

(*i*) जीवाश्म ईंधनों का जलाया जाना—पिछले कुछ दशकों में भारी मात्रा में जीवाश्म ईंधनों को जलाया गया है। फलस्वरूप वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ रही है। ऐसा अनुमान है कि पिछले सौ वर्षों में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में लगभग 25% वृद्धि हुई है। फलस्वरूप वायुमण्डल में इस गैस की वृद्धि से वायुमण्डल का तापमान बढ़ गया है। ऐसा अनुमान है कि विगत सौ वर्षों में भूमण्डलीय मध्यमान तापमान में 0.3° सेल्सियस से लेकर 0.7° सेल्सियस तक वृद्धि हुई है। बड़े पैमाने पर वनों के विनाश से भी कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि हुई है।

कोयले और खनिज तेल के जलने से सल्फर डाइऑक्साइड भी

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

वायुमण्डल में चली जाती है। मोटरों और कारों के धुएँ के साथ निकले सीसे, कार्बन मोनोक्साइड तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड के अंश भी वायुमण्डल में मिल जाते हैं। मोटरों-कारों का धुआँ साँस के साथ नाक में जाकर जलन पैदा करता है तथा साँस के रोगों का कारण बनता है। बड़े नगरों में मोटरों-कारों के इस विषैले धुएँ से वायु इतनी प्रदूषित हो जाती है कि लोगों का दम घुटने लगता है और उन्हें ऑक्सीजन लेने के लिए ''फेस मास्क'' पहनने पड़ते हैं।

***(ii)* रासायनिक प्रक्रियाएँ**—कारखानों, वाहनों तथा जीवाश्म ईंधनों के जलने से जो गैसें बाहर निकलती हैं उनकी रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा भी वायु प्रदूषित होती रहती है। इन प्रक्रियाओं द्वारा धूम कोहरे का विकास, ओज़ोन का ह्रास और विषैली गैसों का विकास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

28. (क) किशोरों का हिस्सा जनसंख्या का लगभग 20.9% हैं। किशोर जनसंख्या, जिसे युवा जनसंख्या माना जाता है, जिसमें उच्च संभावनाएँ होती हैं, यदि सही तरीके से मार्गदर्शित नहीं की जाए तो यह काफी संवेदनशील होती है। राष्ट्रीय युवा नीति हमारे बड़े युवा जनसंख्या के समग्र विकास की ओर देखती है। यह युवाओं और किशोरों के समग्र सुधार पर जोर देती है, जिससे उन्हें देश के रचनात्मक विकास की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए सक्षम बनाया जा सके।

(1) यह देशभक्ति और ज़िम्मेदार नागरिकता के गुणों को मज़बूत करती है।

(2) महिलाओं और कन्या बालिका को सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया गया है ताकि पुरुष और महिला की स्थिति में समानता लाई जा सके।

(3) स्वास्थ्य, खेल और मनोरंजक गतिविधियों पर ध्यान दिया गया; और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में नए नवाचारों के प्रति जागरूकता फैलाने के प्रयास किए गए।

अथवा

(ख) प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को उस क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व कहा जाता है।

कुछ भौतिक या भौगोलिक कारक हैं जो जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करते हैं।

1. जल की उपलब्धता—लोग उन क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं जहां ताजे पानी की आसानी से उपलब्धता होती है। पानी घरेलू, कृषि और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए आवश्यक है। इसलिए, नदी की घाटियाँ विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। उदाहरण के लिए, भारत में इंडो-गंगा मैदान, चीन में हुआंग हो और यांग्त्ज़े बेसिन और मिस्र में नील घाटी बहुत घनी आबादी वाले हैं।

2. भूआकृतियाँ—मैदानी क्षेत्र कृषि, सिंचाई, परिवहन और व्यापार के लिए बेहतर सुविधाएँ प्रदान करते हैं। लोग समतल मैदानी और हल्की ढलानों पर रहना पसंद करते हैं क्योंकि ये भवनों का निर्माण, सड़कें और रेलवे लाइनें बिछाने, नहरें बनाने और उद्योग स्थापित करने के लिए उपयुक्त हैं। गंगा के मैदान और हुआंग हो का बेसिन विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से हैं। पर्वतीय और पठारी क्षेत्रों जैसे हिमालय और ड्रेकेंसबर्ग पठार में rugged भूआकृति वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम है।

(*i*) **जलवायु**—सुखद जलवायु और कम मौसमी भिन्नता वाले क्षेत्र अधिक लोगों को आकर्षित करते हैं। गर्म या ठंडे रेगिस्तानों, भारी वर्षा वाले क्षेत्रों या कम वर्षा वाले क्षेत्रों की चरम जलवायु लोगों के रहने के लिए असुविधाजनक होती है। इसलिए, इन क्षेत्रों की जनसंख्या कम होती है। इसलिए, अफ्रीका के गर्म भूमध्य रेखीय भाग और रूस, कनाडा और अंटार्कटिका के ठंडे ध्रुवीय क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम है।

(*ii*) **मिट्टी**—उपजाऊ मिट्टी कृषि और संबंधित गतिविधियों की सफलता दर सुनिश्चित करती है। इसलिए, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टियों वाले क्षेत्र कई अधिक लोगों का समर्थन करते हैं; ये क्षेत्र गहन कृषि का समर्थन कर सकते हैं।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. रियोडिजेनेरो

ख. फोर्टफर्थ

ग. स्वेज नहर

घ. ब्राजील

ङ मेडागास्कर

च. वैंकूवर

छ. भारत।

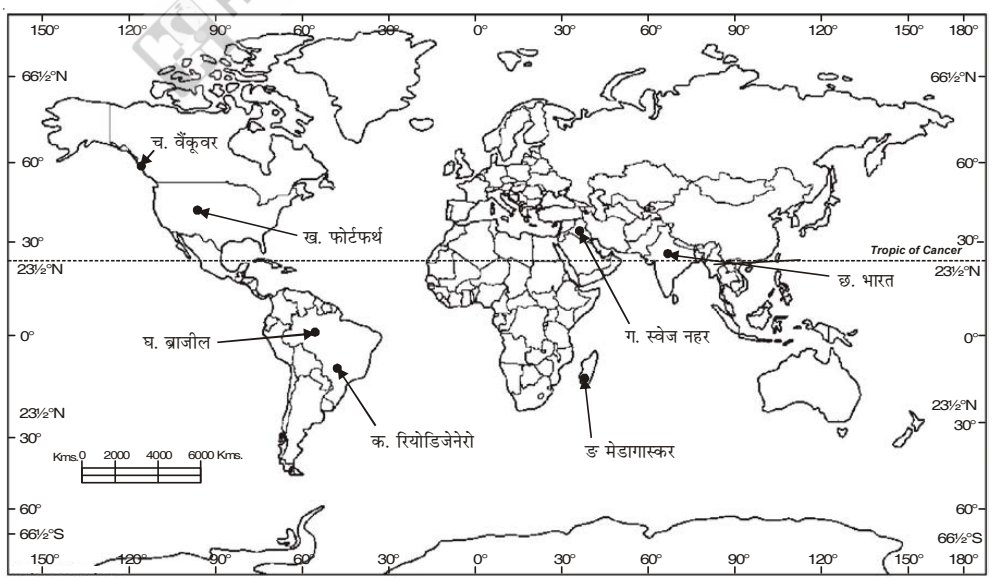

30. **30.1** यू०पी०
30.2 जामनगर
30.3 कोरबा (छत्तीसगढ़)
30.4 चैन्नई
30.5 हरियाणा
30.6 इंदिरागाँधी
30.7 बेलारी।

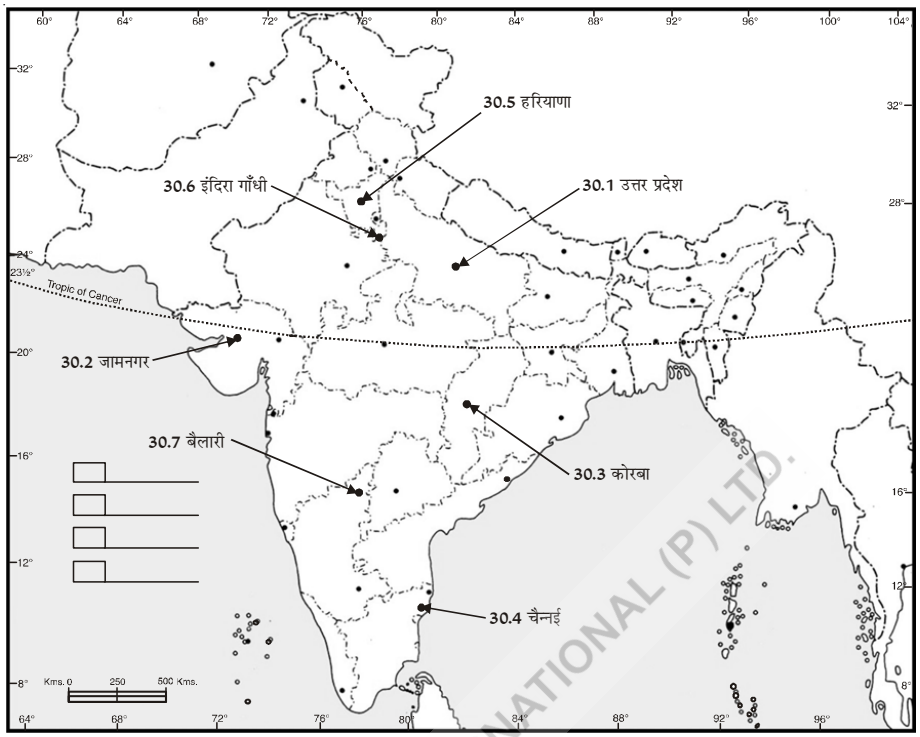

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–5

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*b*) गैर-नवीकरणीय संसाधन।

2. (*c*) मछली पकड़ना।

3. (*a*) प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता की सुनिश्चितता।

4. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

5. (*d*) गन्ना।

6. (*b*) चाय।

7. (*b*) काला सोना।

8. (*a*) असम।

9. (*b*) NH 2 – सादिया-धुबरी।

10. (*d*) 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क)।

11. (*a*) दिल्ली-अमृतसर।

12. (*a*) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

13. (*c*) 1859.

14. (*a*) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

15. (*d*) खाद्य तक पहुंच।

16. (*c*) कम वजन वाले व्यक्ति।

17. (*b*) 1990.

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 हिमाचल प्रदेश।

18.2 इस क्षेत्र में 'गद्दी' नामक जनजातीय समुदाय निवास करता है जिन्होंने हिमालय क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाए रखी है।

18.3 2011.

19. 19.1 स्वेज नहर।

19.2 लिवरपूल तथा कोलंबों, पोर्ट सईद तथा पोर्ट स्वेज।

19.3 प्रशांत महासागर तथा एटलांटिक महासागर।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20. (क) ग्रिफ़िथ टेलर ने नियो-निर्धारणवाद या रोकने और आगे बढ़ने वाले निर्धारणवाद की अवधारणा को गढ़ा। इसे पर्यावरणीय निर्धारणवाद और संभाव्यता के दो विचारों के बीच एक मध्य मार्ग के रूप में देखा जा सकता है।

नियो-निर्धारणवाद संतुलन लाने का प्रयास करता है क्योंकि इसका अर्थ है कि न तो पूर्ण आवश्यकता की स्थिति है (पर्यावरणीय निर्धारणवाद) और न ही पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति है (संभाव्यता)। इसका मतलब है कि मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं यदि वे इसके आदेशों का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, मानव ने ठंडे और गर्म क्षेत्रों में रहने के लिए ठंड और गर्मी प्रतिरोधी घर बनाए। लेकिन यह नहीं भुलाया जाना चाहिए कि हम प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण या पर्यावरण में हस्तक्षेप के कारण प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर रहे हैं। हम ग्रीनहाउस प्रभाव और भूमि अपक्षय जैसी पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

अथवा

(ख) संभाव्यता का अर्थ है मानव की प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करने की क्षमता और इसके परिणामस्वरूप भौतिक वातावरण मानवकृत हो जाता है और मानव उद्यम के निशान धारण करना शुरू कर देता है। संभाव्यता मानव गतिविधियों के कारण बनाए गए निशानों का निर्माण है। मानव गतिविधियाँ सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण करती हैं। मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं। पहाड़ियों पर स्वास्थ्य रिसॉर्ट, विशाल शहरी विस्तार, मैदानों और ढलान वाली पहाड़ियों में खेत, बाग और चरागाह, तटों पर बंदरगाह, महासागरीय सतह पर महासागरीय मार्ग और अंतरिक्ष में उपग्रह।

कुछ सीमाएं एक प्रदाता के रूप में हैं लेकिन मानव सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों को प्रकृति से स्वतंत्र रूप से निर्धारित करते हैं। निष्क्रिय होने के बजाय, मानव को संभाव्यता द्वारा एक सक्रिय शक्ति के रूप में देखा जाता है। उन्होंने समय के साथ अधिक कुशल प्रौद्योगिकियाँ विकसित की।

उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में तापमान नियंत्रण वाले कई स्वास्थ्य रिसॉर्ट, मैदानों और ढलान वाली पहाड़ियों में विकसित विस्तृत खेत, चरागाह और बाग; लंबी दूरी पर विकसित रेलवे मार्ग और बंदरगाह जो विस्तृत महासागरीय

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P.) LTD.

मार्ग खोलते हैं और अंतरिक्ष में उपग्रह कुछ उदाहरण हैं कि मानव भूमि, हवा और पानी पर नियंत्रण रखते हैं।

21. उपग्रह मानव जीवन को कई तरीकों से प्रभावित करते हैं। हर बार जब हम किसी मित्र को कॉल करने, एसएमएस भेजने या केबल टेलीविज़न पर एक लोकप्रिय कार्यक्रम देखने के लिए सेल फोन का उपयोग करते हैं, तो हम उपग्रह संचार का उपयोग कर रहे हैं।

इनसे संचार की इकाई लागत और समय दूरी के संदर्भ में अपरिवर्तनीय हो गए हैं।

आजकल, टेलीविज़न के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान जीवन और संपत्ति के नुकसान को बचाने में एक वरदान है। जबकि हर साल अरबों लोग इंटरनेट का उपयोग करते हैं, साइबरस्पेस ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई लर्निंग और ई-गवर्नेंस के माध्यम से मानव के समकालीन आर्थिक और सामाजिक स्थान का विस्तार करेगा।

इंटरनेट, फैक्स, टेलीविज़न और रेडियो के साथ मिलकर अधिक-से अधिक लोगों के लिए स्थान और समय को काटते हुए सुलभ होगा। यही आधुनिक संचार प्रणाली हैं, जो परिवहन से अधिक, वैश्विक गांव के सिद्धांत को वास्तविकता में बदल दिया है।

22. (क) भारत में स्मार्ट सिटी मिशन की शुरुआत भारतीय सरकार द्वारा 2015 में की गई। स्मार्ट सिटी मिशन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

(1) शहरी बुनियादी ढांचे के सुधार और विकास के लिए इसे शुरू किया गया। इसमें मजबूत परिवहन नेटवर्क, विश्वसनीय जल आपूर्ति, स्वच्छता आदि का विकास शामिल है।

(2) यह मिशन शहरी सेवाओं की दक्षता और स्थिरता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार विकसित करने का प्रयास करता है। इसमें डिजिटल सेवाओं, स्मार्ट सेंसर, आईसीटी आदि को अपनाना शामिल है।

(3) यह मिशन शहरी चुनौतियों जैसे यातायात प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण आदि के लिए स्मार्ट समाधानों के विकास को प्रोत्साहित करता है।

(4) स्मार्ट सिटी मिशन का उद्देश्य भारतीय शहरों में सतत विकास प्रथाओं को बढ़ावा देना भी है।

(5) यह शहरी विकास के लाभों को सुनिश्चित करके समावेशी वृद्धि और सामाजिक समानता को भी तेज करना चाहता है।

23. द्विपक्षीय व्यापार दो देशों के बीच किया जाता है जब वे एक समझौते में प्रवेश करते हैं। बहुपक्षीय व्यापार कई व्यापारिक देशों के साथ किया जाता है। इस प्रकार, एक देश कई देशों के साथ व्यापार कर सकता है।

बंदरगाह—

(1) बंदरगाह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वार हैं।

(2) बंदरगाह माल के लिए डॉकिंग, लोडिंग, अनलोडिंग और भंडारण सुविधाएँ प्रदान करते हैं।

(3) बंदरगाह का आकार और वह कितने जहाज़ों को संभालता है, इसके संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

(4) एक बंदरगाह द्वारा संभाले गए माल की मात्रा उसके अंतर्देशीय के विकास के सतर को दर्शाती है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. जनसंख्या वृद्धि—इसका अर्थ है किसी विशेष क्षेत्र में एक निश्चित अवधि के दौरान जनसंख्या के आकार में परिवर्तन।

♦ यह सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। इसे जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि भी कहा जाता है।

♦ इसे जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर के आधार पर गणना की जाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर के निर्धारक—जनसंख्या वृद्धि के तीन मुख्य निर्धारक निम्नलिखित हैं—

1. जन्म दर—विकासशील देशों में जन्म दर उच्च होती है (लगभग 40 प्रति 1000)। ये देश हैं जिनकी जनसंख्या वृद्धि दर विकसित देशों की तुलना में अधिक होती है। दूसरी ओर, विकसित देशों में जन्म दर कम होती है, जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि की दर कम होती है।

2. मृत्यु दर—उच्च मृत्यु दर जनसंख्या को तेज़ी से बढ़ने की अनुमति नहीं देती। जब जन्म दर मृत्यु दर से अधिक होती है, तो जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होती है। दूसरी ओर, जब जन्म और मृत्यु दर दोनों कम होते हैं, तो जनसंख्या वृद्धि दर भी कम होती है।

3. जनसंख्या की गतिशीलता (प्रवासन)—प्रवासन भी वृद्धि दर को प्रभावित करता है। मूल स्थान में जनसंख्या में कमी दिखाई देती है जबकि गंतव्य स्थान में जनसंख्या बढ़ती है।

दुनिया में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक वितरण :

यह विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में कम वृद्धि दर को दर्शाता है। हम आर्थिक विकास और जनसंख्या वृद्धि के बीच नकारात्मक सहसंबंध देखते हैं। हालांकि जनसंख्या परिवर्तन की वार्षिक दर जो 1.4 प्रतिशत है, कम प्रतीत होती है, यह वास्तव में ऐसा नहीं है। इसका कारण है—

1. यदि एक छोटे वार्षिक दर को बहुत बड़ी जनसंख्या पर लागू किया जाए, तो यह जनसंख्या में एक बड़ा परिवर्तन लाएगा।

2. यहां तक कि जब वृद्धि दर लगातार घटती है, कुल जनसंख्या हर वर्ष बढ़ती है। शिशु मृत्यु दर बढ़ सकती है क्योंकि मृत्यु दर प्रसव के दौरान होती है।

25. (क) **मिश्रित कृषि**

(1) यह मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी यूरोप, पूर्वी उत्तरी अमेरिका, कुछ हिस्सों में यूरेशिया और दक्षिणी महाद्वीपों के मौसमी अक्षांशों में प्रचलित है।

(2) फसलों की खेती और पशुपालन पर बराबर जोर दिया जाता है।

(3) यह पूंजी गहन है।

(4) मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल रोटेशन और अंत: फसल रोपण की आवश्यकता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(5) कृषि मशीनरी और भवन, किसानों के कौशल और विशेषज्ञता तथा रासायनिक उर्वरकों के व्यापक उपयोग के लिए व्यय की आवश्यकता है।

अथवा

(ख) बागान कृषि की निम्नलिखित पाँच विशेषताएँ हैं—

(1) यह बड़े एस्टेट या प्लांटेशन पर की जाती है।

(2) इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित उपनिवेशों में यूरोपीयों द्वारा पेश किया गया था। महत्वपूर्ण प्लांटेशन फसलें चाय, कॉफी, कोको, रबर, कपास, तेल पाम, गन्ना, केला और अनानास हैं।

(3) इसमें एकल फसल की विशेषता होती है, जिसे वैज्ञानिक खेती के तरीकों की मदद से किया जाता है।

(4) इसमें प्रबंधकीय और तकनीकी समर्थन के साथ बड़े निवेश की आवश्यकता होती है।

(5) इसे सस्ते श्रम और एक अच्छे परिवहन नेटवर्क की आवश्यकता होती है जो एस्टेट को कारखानों और उत्पादों के निर्यात के लिए बाज़ारों से जोड़ता है।

26. (क) एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीना, ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होना और एक उचित जीवन जीने के लिए पर्याप्त साधन होना मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं।

मानव विकास के चार स्तंभ

जैसे किसी भी भवन को स्तंभों द्वारा समर्थित किया जाता है, मानव विकास का विचार समानता, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों द्वारा समर्थित है।

(*i*) समानता का अर्थ है सभी के लिए अवसरों की समान पहुंच बनाना। लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों को उनके लिंग, जाति, आय और भारतीय संदर्भ में, जाति के बावजूद समान होना चाहिए। फिर भी, यह अकसर ऐसा नहीं होता और लगभग हर समाज में होता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश में, यह देखना दिलचस्प है कि अधिकांश स्कूल ड्रॉपआउट किस समूह से संबंधित हैं। इससे ऐसे व्यवहार के कारणों को समझने में मदद मिलनी चाहिए। भारत में, बड़ी संख्या में महिलाएं और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लोग स्कूल छोड़ देते हैं। यह दिखाता है कि इन समूहों के विकल्प ज्ञान की पहुंच न होने के कारण सीमित हो जाते हैं।

(*ii*) स्थिरता का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। स्थायी मानव विकास के लिए, प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलने चाहिए। सभी पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी का भी दुरुपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की कमी का कारण बनेगा। एक अच्छा उदाहरण लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व के बारे में है। यदि कोई समुदाय अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व पर जोर नहीं देता है, तो तब ये युवा महिलाएं बड़ी होंगी, तो उनके लिए कई अवसर खो जाएंगे। उनके करियर के विकल्प गंभीर रूप से सीमित हो जाएंगे और यह उनके जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करेगा। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए विकल्पों और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

(*iii*) **उत्पादकता** का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है। ऐसी उत्पादकता को लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके लगातार समृद्ध किया जाना चाहिए। अंतत: लोग राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति हैं। इसलिए, उनके ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास, या बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना अंतत: बेहतर कार्य दक्षता की ओर ले जाता है।

(*iv*) सशक्तिकरण का अर्थ है विकल्प बनाने की शक्ति होना। ऐसी शक्ति स्वतंत्रता और क्षमता को बढ़ाने से आती है। लोगों को सशक्त बनाने के लिए अच्छे शासन और जन केंद्रित नीतियों की आवश्यकता होती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण विशेष महत्व रखता है।

अथवा

(ख) स्वतंत्रता के लंबे वर्षों के बाद, भारत आम जनता के लिए विकास के मुद्दे से जूझ रहा है। 75 वर्षों के दौरान, हम काफी आगे बढ़ चुके हैं लेकिन अभी भी कई मुद्दे हैं जिन्हें हल करने की आवश्यकता है। आर्थिक विकास से लेकर बढ़ते शहरीकरण तक, भारत ने विशाल परिवर्तन देखा है लेकिन क्षेत्रीय विषमताएं और धन और संसाधनों का असमान वितरण अभी भी हमारे समाज को बड़े पैमाने पर परेशान करता है। इसे सरकार की नीतियों और उपायों के संदर्भ में और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

भारत में लगातार सरकारों ने पिछले कुछ दशकों में जन हितैषी और गरीब-हितैषी नीतियों को लागू करने का प्रयास किया है। हालांकि, इसका प्रभाव बहुत व्यापक नहीं रहा है। ऐसे कई उदाहरण हैं जब सबसे गरीब लोगों को व्यापक विकास की ओर केंद्रित सरकारी नीतियों का लाभ नहीं मिल पाया है। यह विशेष रूप से कुछ राज्यों के लिए सच है जहाँ अभी भी अधिकांश जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवित है। इसके अलावा, अनियंत्रित आर्थिक विकास के कारण पर्यायवरण में जो गिरावट आई है, वह भी उल्लेखनीय है। इसलिए, यह आवश्यक है कि विकास तब हो जब मानव कल्याण सर्वोपरि हो।

27. (क)

झुग्गियों और शहरी कूड़ा-कर्कट की समस्या
(Problem of Slums and Urban-Waste)

शहरों में जनसंख्या की अधिकता के कारण अनेक समस्याओं का विकास हो गया है जिनमें गंदी बस्तियों तथा शहरीय कूड़ा-कर्कट की अधिकता और निपटान (disposal) सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

झुग्गियों (Slums)—शहरों में जनसंख्या अधिक और स्थान कम होने के कारण आवासीय समस्या होती है। शहरीय क्षेत्रों में बहुमंज़िले भवनों का निर्माण इसी समस्या का प्रतिफल है।

प्राय: जब निर्धन लोग रोज़गार की तलाश में अपने गाँवों को छोड़कर शहरों में आकर बसने लगते हैं तो शहरों में आवास बहुत महँगा तथा कम होने के कारण वे नगर के बाहर पड़ी भूमि पर झुग्गी-झोंपड़ियाँ बनाकर रहना आरंभ कर देते हैं जिससे वहाँ झुग्गियों का विकास होने लगता है। इन गंदी बस्तियों में जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक होता है और वहाँ जल तथा घरेलू मल के निकास के लिए कोई व्यवस्था नहीं

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

होती। इन बस्तियों में रहने वाले लोग अत्यन्त ही निम्न स्तर का जीवन व्यतीत करते हैं। यद्यपि इन गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों के लिए प्रशासन अनेक सुविधायें प्रदान करने का प्रयास करता है, तथापि ये आवासीय बस्तियाँ बहुत ही निम्न स्तर की होती हैं और प्राय: ये गंदगी तथा बीमारियों के क्षेत्र ही होती हैं। भारत के लगभग सभी बड़े नगरों में ऐसी गंदी बस्तियाँ (Slums) पाई जाती हैं।

हमारे देश में पहली बार 2001 की जनगणना में नगरों में पाई जाने वाली गंदी बस्तियों के आँकड़े एकत्रित किये गये हैं। राज्य सरकारों द्वारा घोषित तथा मान्यता प्राप्त गंदी बस्तियों में रहने वाले व्यक्तियों को गंदी बस्ती जनसंख्या कहा जाता है। देश में कुल 4 करोड़ 3 लाख जनसंख्या गंदी बस्तियों में निवास करती हैं जो गंदी बस्तियों वाले नगरों की कुल जनसंख्या को लगभग 22.6 प्रतिशत भाग है। इससे स्पष्ट होता है कि इन नगरों की लगभग एक चौथाई जनसंख्या गंदी बस्तियों में दयनीय जीवन व्यतीत कर रही है।

देश में सबसे अधिक गंदी बस्तियों की जनसंख्या महाराष्ट्र राज्य में अभिलेखित की गई है जो एक करोड़ 6 लाख, 40 हज़ार है। दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले महानगरों में सबसे अधिक गंदी बस्तियों की जनसंख्या बृहत् मुंबई में पाई जाती है जो कि कुल जनसंख्या का 48.88 प्रतिशत भाग है। पटना नगर में न्यूनतम गंदी बस्ती जनसंख्या पाई जाती है जो कुल जनसंख्या का मात्र 0.25 प्रतिशत भाग है। भारत की लगभग एक प्रतिशत जनसंख्या महाराष्ट्र के गंदी बस्तियों में निवास करती है और महाराष्ट्र राज्य की लगभग 6 प्रतिशत जनसंख्या बृहत् मुंबई की गंदी बस्तियों में रहती है। विभिन्न राज्यों के नगरों में गंदी बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या का अनुपात 41.33% से 1.81 प्रतिशत है जो अधिकतम मेघालय (41.33%) और न्यूनतम केरल (1.81%) है।

नगरीय कूड़ा-कर्कट (Urban Waste)—नगरों में जनसंख्या की अधिकता के कारण विकसित होने वाली दूसरी बड़ी समस्या वहाँ एकत्रित होने वाला कूड़ा-कर्कट तथा घरेलू मल (domestic sewage) हैं। इन पदार्थों से प्राय: भूमि तथा जलीय प्रदूषण विकसित हो जाते हैं।

भूमि प्रदूषण का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक घरेलू मल तथा औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ हैं। नगरों द्वारा ठोस कूड़ा-कर्कट, मानवीय मल, पशुशालाओं से प्राप्त गंदगी, कारखानों तथा खदानों से प्राप्त बेकार पदार्थों के ढेर जमा हो जाने से भूमि अन्य कार्यों, विशेषकर कृषि के उपयुक्त नहीं रहती। इन पदार्थों से प्राप्त अनेक रोगजनक वनस्पति तथा खाद्य पदार्थों द्वारा मानव शरीर में प्रवेश कर जाते हैं जिनसे कई बीमारियाँ पनपने लगती हैं।

नदियों के जल को सबसे अधिक प्रदूषित नगरों के गंदे नालों द्वारा फेंके गये घरेलू मल करते हैं। नगरों के गंदे नालों ने ही गंगा और यमुना के जल को प्रदूषित कर दिया है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि इन नदियों के तट पर बसे नगरों में इन्हीं नदियों का जल पीने के काम में लाया जाता है। प्रदूषित जल नदियों में रहने वाले जीवों को भी प्रभावित करता है। प्रदूषित जल से पीलिया, पेचिश और टाइफाइड जैसी बीमारियाँ फैलती हैं जो मानव को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

अथवा

(ख) प्लास्टिक एक गैर-निष्क्रिय पदार्थ है और इसका उपयोग और उत्पादन न्यूनतम होना चाहिए। प्लास्टिक का मलबा बिल्कुल हर जगह पाया जाता है आर्कटिक से अंटार्कटिका तक। यह हमारे शहरों में सड़क की नालियों को बंद करता है: यह कैंपग्राउंड और राष्ट्रीय उद्यानों में बिखरा हुआ है, और यहां तक कि माउंट एवरेस्ट पर भी जमा हो रहा है। लेकिन रन-ऑफ और हमारे नजदीकी नदी या झील में सीधे अपना कचरा डालने की आदत के कारण, प्लास्टिक दुनिया के महासागरों में बढ़ता जा रहा है। जब प्लास्टिक का विघटन होता है, तो इसका मतलब है कि एक बड़े प्लास्टिक के टुकड़े को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है। ये छोटे प्लास्टिक के टुकड़े छोटे जानवरों द्वारा खाए जा सकते हैं, लेकिन ये अभी भी पचने योग्य नहीं होते। यह खाद्य शृंखला में सभी जीवों को प्रभावित करता है, छोटी प्रजातियों जैसे प्लवक से लेकर व्हेल तक। जब प्लास्टिक का सेवन किया जाता है, तो विषाक्त पदार्थ खाद्य शृंखला में ऊपर की ओर बढ़ते हैं और यह उन मछलियों में भी मौजूद हो सकते हैं जो लोग खाते हैं। मोबाइल फोन से लेकर साइकिल के हेलमेट तक और बैग तक, प्लास्टिक ने समाज को ऐसे तरीकों से आकार दिया है जो जीवन को आसान और सुरक्षित बनाते हैं। लेकिन इस सिंथेटिक सामग्री ने पर्यावरण पर हानिकारक छाप भी छोड़ी है।

(*i*) प्लास्टिक में जो रसायन मिलाए जाते हैं, वे मानव शरीर द्वारा अवशोषित होते हैं। इनमें से कुछ यौगिक हार्मोन को बदलने या अन्य संभावित मानव स्वास्थ्य प्रभाव डालने के लिए पाए गए हैं।

(*ii*) प्लास्टिक का मलबा, जो रसायनों से भरा होता है और अक्सर समुद्री जानवरों द्वारा खाया जाता है, वन्यजीवों को घायल या ज़हरीला कर सकता है।

(*iii*) तैरता हुआ प्लास्टिक का कचरा, जो पानी में हज़ारों वर्षों तक जीवित रह सकता है, आक्रामक प्रजातियों के लिए छोटे परिवहन उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिससे आवास बाधित होते हैं।

(*iv*) लैंडफिल में गहराई से दफनाया गया प्लास्टिक हानिकारक रसायनों को रिसाव कर सकता है जो भूजल में फैल जाते हैं।

(*v*) विश्व के तेल उत्पादन का लगभग प्रतिशत प्लास्टिक बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है, और इसी मात्रा का उपभोग प्रक्रिया में ऊर्जा के रूप में किया जाता है।

28. (क) शहरी क्षेत्रों की भीड़-भाड़, घनी और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे की समस्या के कारण विशाल शहरी अपशिष्ट का संचय होता है। शहरी अपशिष्ट के दो स्रोत होते हैं। घरेलू या घरेलू स्रोत और औद्योगिक या व्यावसायिक स्रोत। शहरी अपशिष्ट निपटान का गलत प्रबंधन बड़े शहरों में एक गंभीर समस्या है।

महानगरों में प्रतिदिन टन अपशिष्ट निकलता है और इसे जलाया जाता है। अपशिष्ट से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित करता है। मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए सीवेज या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्त्रोतों की अपर्याप्तता जल प्रदूषण में योगदान करती है। औद्योगिक इकाइयों का शहरी केंद्रों के आसपास केंद्रित होना पर्यावरणीय समस्याओं की एक शृंखला को जन्म देता है। नदियों में औद्योगिक

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

अपशिष्ट का डालना जल प्रदूषण का प्रमुख कारण है। ठोस अपशिष्ट उत्पादन शहरों में निरंतर बढ़ता जा रहा है, दोनों निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के हिसाब से। ठोस अपशिष्ट का अनुचित निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं। थर्मल संयंत्र हवा में बहुत सारा धुआँ और राख छोड़ते हैं। उदाहरण के लिए 500 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाला एक संयंत्र 2000 टन राख छोड़ता है जिसे प्रबंधित करना मुश्किल है।

अथवा

(ख) भारत में भूमि अपक्षय मानव निर्मित प्रक्रियाओं के कारण होता है जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक हानिकारक हैं क्योंकि—

(*i*) बंजर भूमि जैसे खराब शिफ्टिंग कल्टीवेशन क्षेत्र, पौधों के फसलों के तहत खराब भूमि, खराब जंगल, खराब चरागाह, और खनन और औद्योगिक बंजर भूमि मानव क्रिया के कारण होती हैं।

(*ii*) मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए सीवरों या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्रोतों की अपर्याप्तता जल प्रदूषण में योगदान करती है।

(*iii*) शहरी केंद्रों के आसपास औद्योगिक इकाइयों का संकेंद्रण पर्यावरणीय समस्याओं की एक शृंखला को जन्म देता है।

(*iv*) नदियों में औद्योगिक कचरे का फेंका जाना जल प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है।

(*v*) शहरों में ठोस कचरे का उत्पादन दोनों में निरंतर बढ़ता जा रहा है, निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के संदर्भ में। ठोस कचरे का अनुचित निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. वैंकूवर
ख. मैक्सिको शहर
ग. स्वेज नहर
घ. ब्राजील
ङ नामीबीया
च. लंदन
छ. ब्राजीलिया

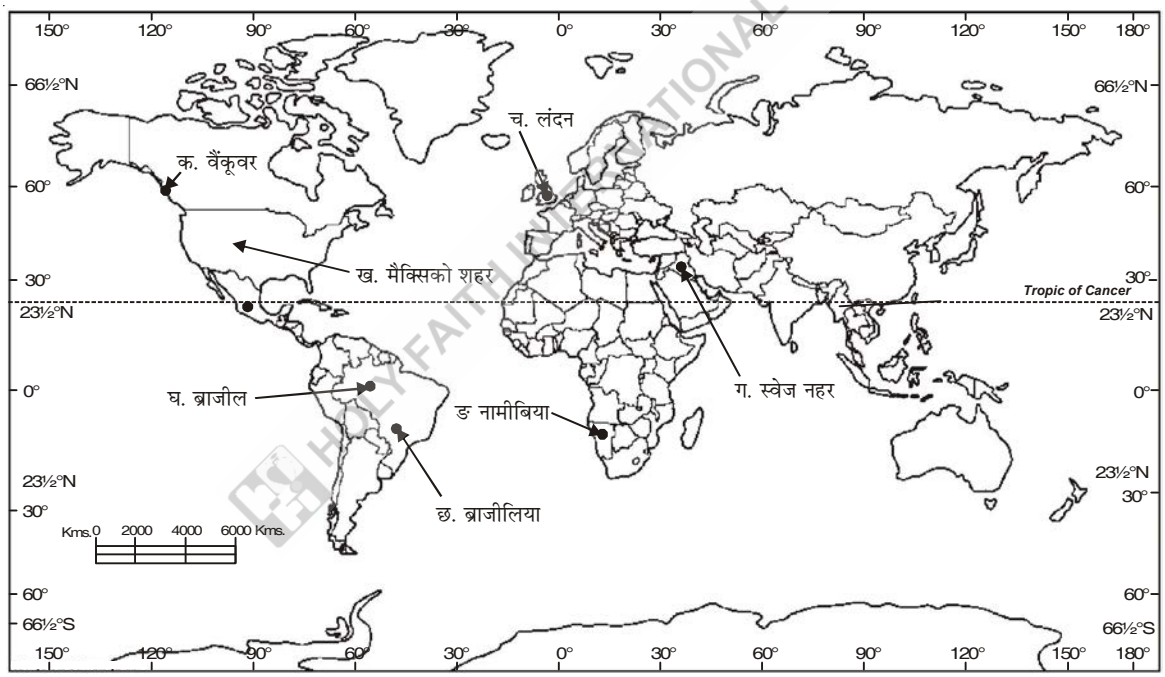

30. 30.1 कर्नाटक
30.2 मथुरा
30.3 नवेली
30.4 विशाखापट्टनम
30.5 हिमाचल प्रदेश
30.6 अमृतसर
30.7 कटनी, जबलपुर तथा बालाघाट।

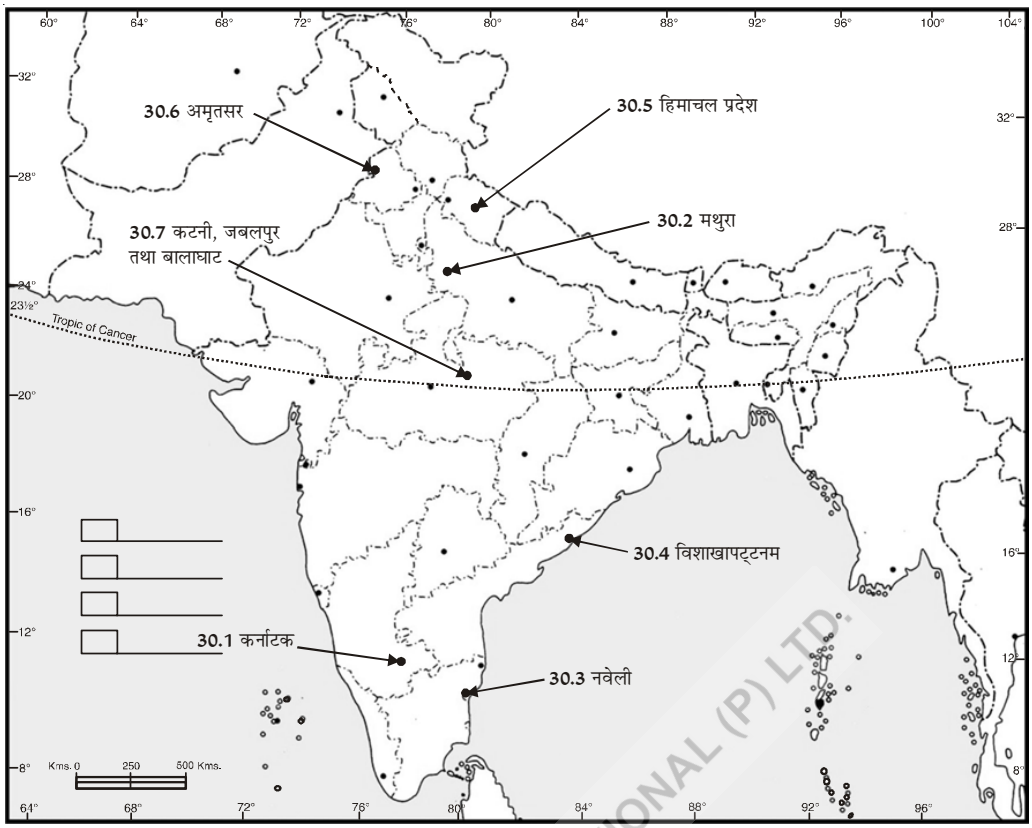

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–6

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*c*) गंगा।

2. (*b*) कृषि।

3. (*b*) 1986.

4. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

5. (*b*) सीमांत भूमि

6. (*d*) गन्ना।

7. (*a*) असम

8. (*d*) तारापुर।

9. (*b*) राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 2 सादिया–धुबरी

10. (*b*) (A) (B) (C) (D)
(ग) (घ) (ख) (क)।

11. (*d*) केरल।

12. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

13. (*a*) विशाखापत्तनम

14. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

15. (*a*) वृद्धि मात्रात्मक है जबकि विकास गुणात्मक है।

16. (*a*) जब सकारात्मक वृद्धि होती है।

17. (*c*) सकारात्मक वृद्धि।

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्त्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 भरमौर जनजातीय क्षेत्र चंबा ज़िले के भरमौर और होली तहसीलों में स्थित है।

18.2 भरमौर जनजातीय क्षेत्र की जलवायु की स्थिति कठोर है, संसाधनों का आधार कम है और पर्यावरण नाजुक है। ये कारक क्षेत्र के समाज और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

18.3 यह हिमाचल प्रदेश के सबसे (आर्थिक और सामाजिक) पिछड़े क्षेत्रों में से एक है। ऐतिहासिक रूप से, गड्डियों ने भौगोलिक और राजनीतिक अलगाव और सामाजिक–आर्थिक वंचना का अनुभव किया है।

19. 19.1 स्वेज नहर।

19.2 ग्रेट बिटर झील, लिटिल बिटर झील, तिमशा झील।

19.3 यह नहर यूरोप तथा हिंद महासागर में एक नवीन प्रवेश मार्ग प्रदान करती है।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20. (क) आरंभिक अवस्था में मनुष्य पर पर्यावरण की बंदिशें महत्त्वपूर्ण थीं। मानव पर्यावरण से अत्यधिक प्रभावित था। मानव ने ***प्रकृति के आदेशों के अनुसार*** अपने आप को ढाल लिया। मानव की सामाजिक अवस्था भी आदिम थी। **मानव *प्रकृति का दास*** था। मानव का प्राकृतीकरण हो रहा था। इसे ***पर्यावरणीय निश्चयवाद*** का नाम दिया गया।

उदाहरण— उदाहरण के तौर पर बेदा भारत का ***आबूझमाड़*** वनों में रहता है जो मध्य भारत में है। वह एक छोटी लंगोटी पहने, हाथ में एक कुल्हाड़ी लिए फिरता रहता है। उसका कबीला कृषि का आदिम रूप स्थानांतरी कृषि करता है। वह वनों के छोटे–छोटे टुकड़े कृषि के लिए साफ़ करता है। वह नदी से जल प्राप्त करता है। वह गुदेदार पत्तों और कंदमूल को चबाता है।

उपरोक्त उदाहरण एक कबीले का प्रकृति के साथ संबंध प्रकट करता है। इस प्रकरण में प्रकृति एक शक्तिशाली बल, पूज्य, सत्कार योग्य तथा संरक्षित है। मानव प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है। ऐसे समाजों के लिए भौतिक पर्यावरण ***'माता–प्रकृति'*** का रूप धारण करता है।

अथवा

(ख) **निश्चयवाद—**इस विचारधारा के अनुसार मानवीय क्रियाओं पर वातावरण का नियंत्रण है। इसके अनुसार किसी सामाजिक वर्ग का इतिहास, सभ्यता, रहन–सहन तथा विकास स्तर भौतिक कारकों द्वारा नियंत्रित होता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मानव एक क्रियाशील कारक नहीं है। इस विचारधारा को यूनानी तथा रोमन विद्वानों हिप्पोक्रेटस, अरस्तु, हेरोडोटस तथा स्ट्रेबो ने प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् अल–मसूदी, अल अदरीसी, इब्बन खालदून, काण्ट, हम्बोलट, रिट्टर तथा रैट्ज़ेल ने इस पर विशेष कार्य किया। अमेरिका में कुमारी सैम्पुल तथा हंटिंगटन ने इस विचारधारा को लोकप्रिय बनाया।

संभववाद—निश्चयवाद की विचारधारा कुछ समय पश्चात् अस्वीकार कर दी गई। कई भूगोलवेत्ताओं ने मानव को स्वतंत्र कारक बताया। वह

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

अपनी इच्छा पूर्वक कार्य करने की क्षमता रखता है। इस विचारधारा को संभववाद कहते हैं। लूसियन फ़ैब्रे ने इस शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया। उसके अनुसार कुछ भी आवश्यक नहीं है। प्रत्येक स्थान पर संभावनाएं हैं तथा मानव इन संभावनाओं का स्वामी है। विडाल-डी लॉ ब्लॉश ने इस विचारधारा का पूरी तरह विकास किया। उसके अनुसार लोगों का रहन-सहन भौतिक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक प्रभावों का परिणाम है। इस विचारधारा के अनुसार सांस्कृतिक तथा तकनीकी ज्ञान वातावरण का प्रयोग करने में सक्षम है।

21. जब चिकित्सा उपचार को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन गतिविधि से संबद्ध किया जाता है तो इसे चिकित्सा पर्यटन कहा जाता है। 2005 में संयुक्त राज्य अमेरिका से उपचार के लिए 55000 रोगी भारत आए थे। भारत विश्व में चिकित्सा पर्यटन में अग्रणी देश बन चुका है।

भारत, थाइलैण्ड, मलेशिया तथा सिंगापुर जैसे विकासशील देशों को चिकित्सा पर्यटन से अनेक लाभ मिलते हैं।

22. भारत में ग्रामीण बस्तियों को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(*i*) क्लस्टर्ड (*ii*) सेमी-क्लस्टर्ड
(*iii*) हैमलेटेड (*iv*) बिखरे हुए।

नीचे चारों प्रकारों पर चर्चा की गई है :

1. क्लस्टर्ड बस्तियाँ—ये घनीभूत घरों के समूह होते हैं। सामान्य आवासीय क्षेत्र कृषि क्षेत्र से अलग होते हैं। ये बस्तियाँ आयताकार, रेडियल और रेखीय आकार में होती हैं।

2. सेमी-क्लस्टर्ड बस्तियाँ—ये सीमित क्षेत्रों में पाई जाती हैं। ये एक बड़े घनीभूत गाँव के विखंडन के परिणामस्वरूप होती हैं। सामान्यत:, भूमि मालिक गाँव के केंद्रीय भाग पर कब्ज़ा करते हैं और निम्न वर्ग के लोग गाँव के बाहरी किनारों पर रहते हैं।

3. हैमलेटेड बस्तियाँ—जब एक गाँव सामाजिक और जातीय कारकों पर विखंडित होता है, तो बस्ती को कई इकाइयों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें पन्ना, पारा, पल्लि, नागला और ढाणी कहा जाता है।

4. बिखरी हुई बस्तियाँ—अलग-थलग बस्तियों को बिखरी हुई बस्तियाँ कहा जाता है। ये जंगलों में पहाड़ी ढलानों और बिखरे हुए खेतों में पाई जाती हैं।

ग्रामीण बस्तियों के पैटर्न को प्रभावित करने वाले कारक

(*i*) स्थलाकृति की प्रकृति, (*ii*) ऊँचाई, (*iii*) जलवायु और (*iv*) जल की उपलब्धता

23. भारत का विदेशी व्यापार (India's Foreign Trade)

भारत का विदेशी व्यापार बहुत प्राचीन समय से है। विदेशी व्यापार की अधिकता के कारण ही भारत को "**सोने की चिड़िया**" कहा जाता था परंतु अंग्रेज़ों के शासनकाल में विदेशी व्यापार समाप्त हो गया। भारत से कच्चा माल इंग्लैंड जाने लगा तथा भारत इंग्लैंड के तैयार माल की खपत के लिए एक मंडी बनकर रह गया। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत विकास की ओर अग्रसर हो रहा है तथा भारत के विदेशी व्यापार को विकसित किया जा रहा है। भारत के विदेशी व्यापार की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं—

1. अधिकांश व्यापार का समुद्र द्वारा होना—भारत का 90% व्यापार समुद्र द्वारा होता है। वायु तथा स्थल द्वारा व्यापार कम है।

2. विदेशी व्यापार का कम होना—भारत का विदेशी व्यापार विश्व व्यापार की दृष्टि से बहुत कम है। भारत का विदेशी व्यापार विश्व व्यापार का केवल 1% भाग है।

3. प्रति व्यक्ति व्यापार का कम होना—भारत में प्रति व्यक्ति विदेशी व्यापार की मात्रा अन्य देशों की तुलना में कम है।

4. व्यापार के परिणाम तथा मूल्य में वृद्धि—भारत का विदेशी व्यापार लगातार तथा परिणाम में बढ़ रहा है।

वर्ष	आयात (करोड़ रुपए)	निर्यात (करोड़ रुपए)	कुल (करोड़ रुपए)
1950-51	650	600	1250
1982-83	14054	8637	22791
2004-2005	481064	356069	837133

5. व्यापार का संतुलन का प्रतिकूल होना—भारत में प्रति वर्ष आयात का मूल्य निर्यात के मूल्य से अधिक रहने के कारण व्यापार शेष प्रतिकूल रहता है। भविष्य में इसके और भी प्रतिकूल होने की संभावना है।

वर्ष	आयात	निर्यात	व्यापार शेष
1972-73	1786 करोड़ रु०	1960 करोड़ रु०	— 184 करोड़ रु०
1982-83	14054 करोड़ रु०	8637 करोड़ रु०	— 5417 करोड़ रु०
2004-2005	481064 करोड़ रु०	356069 करोड़ रु०	— 124995 करोड़ रु०

6. निर्यात व्यापार (Export Trade) की विशेषताएं—

(*i*) निर्यात में परंपरावादी वस्तुओं की अधिकता—भारत के निर्यात व्यापार में कुछ परंपरावादी वस्तुओं की अधिकता है। इसमें चाय, पटसन का माल सूती कपड़ा, तिलहन, खनिज पदार्थ, चमड़ा व खालें महत्त्वपूर्ण हैं। परंतु कुछ वर्षों से निर्यात वस्तुओं में विविधता आ गई है।

(*ii*) इंजीनियरिंग सामान व उद्योग से तैयार माल का अधिक निर्यात—पहले भारत केवल कच्चे माल का निर्यात करता था। परंतु औद्योगिक विकास के कारण कारखानों द्वारा बनाई गई वस्तुओं, सूती वस्त्र तथा इंजीनियरिंग के सामान के निर्यात में वृद्धि हो रही है।

(*iii*) भारत में निर्यात माल के अनेक खरीददार—पहले भारत का निर्यात व्यापार कुछ ही बड़े देशों के साथ था परंतु अब व्यापार अनेक देशों के साथ है।

(*iv*) व्यापार की दिशा में परिवर्तन—पहले भारत का अधिकतर व्यापार इंग्लैंड के साथ था। फिर यह व्यापार संयुक्त राज्य तथा रूस के साथ सबसे अधिक था। परंतु अब भारत का निर्यात व्यापार जापान के साथ अधिक हो गया है।

7. आयात व्यापार की विशेषताएं—

(*i*) व्यापार में भारी मशीनरी की अधिकता—भारत में उद्योगों की स्थापना के कारण मशीनरी का आयात बढ़ता जा रहा है। इसमें मशीनें, कल-पुर्जे, परिवहन सामग्री शामिल है।

(*ii*) तैयार माल के आयात में वृद्धि—कई उद्योगों के कच्चे माल की कमी के कारण भारत में बाहर के तैयार माल का आयात बढ़ रहा है। इसमें धातुएं, कागज़, रेशम, लोहा-इस्पात के सामान व रासायनिक पदार्थ, पेट्रोल, उपभोग की वस्तुएँ शामिल हैं। खनिज तेल की कीमतों के बढ़ जाने से आयात में वृद्धि हुई है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

***(iii)* खाद्यान्नों व कच्चे माल के आयात में कमी**—देश में **हरित क्रांति** (Green Revolution) के कारण खाद्यान्नों का आयात कम हो गया है। इसी प्रकार कपास, पटसन के अधिक उत्पादन के कारण इनका आयात कम हो गया है।

***(iv)* व्यापार की दिशा में परिवर्तन**—भारत का आयात व्यापार एक बार फिर संयुक्त राज्य अमेरिका से अधिक हो गया है। इनके अतिरिक्त बंगला देश, जापान, रूस, ईरान, प० जर्मनी से भी आयात व्यापार बढ़ा है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. दिया गया चित्र जनसांख्यिकी संक्रमण सिद्धांत के तीन-चरणीय मॉडल को समझाता है :

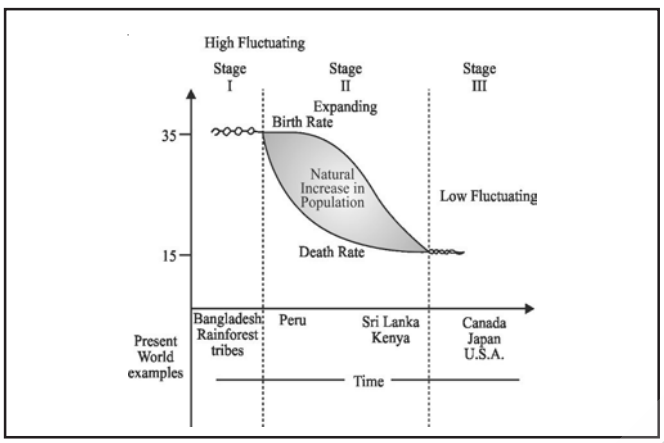

25. (क) **घुमंतू पशुपालन**

(1) घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(3) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(4) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

(5) हिमालयी क्षेत्र में, इस प्रकार का पशुपालन गुज्जर, बकरवाल, गड्डी और भोटिया द्वारा अभ्यास किया जाता है।

वाणिज्यिक पशुपालन

(1) इसे स्थायी रैंचों पर अभ्यास किया जाता है।

(2) यह गतिविधि मुख्य रूप से पश्चिमी संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है।

(3) यहाँ बड़े रैंचों को कई हिस्सों में विभाजित किया जाता है। जब एक हिस्से का चारा खा लिया जाता है, तो जानवरों को दूसरे हिस्से में ले जाया जाता है।

(4) इस प्रकार के पशुपालन में जैसे मांस, ऊन, चमड़ा और खाल को वैज्ञानिक रूप से संसाधित और पैक किया जाता है और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है।

(5) इसे ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और अर्जेंटीना में अभ्यास किया जाता है।

अथवा

(ख) **मिश्रित कृषि**

यह मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी यूरोप, पूर्वी उत्तरी अमेरिका, कुछ हिस्सों में यूरेशिया और दक्षिणी महाद्वीपों के मौसमी अक्षांशों में प्रचलित है।

विशेषताएँ—

(1) फसलों की खेती और पशुपालन पर बराबर जोर दिया जाता है।

(2) यह पूंजी गहन है।

(3) मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल रोटेशन और अंत: फसल रोपण की आवश्यकता है।

(4) कृषि मशीनरी और भवन, किसानों के कौशल और विशेषज्ञता तथा रासायनिक उर्वरकों के व्यापक उपयोग के लिए व्यय की आवश्यकता है।

26. (क) जनसंख्या घनत्व का अर्थ है प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहने वाले लोगों की औसत संख्या। इसे अंकगणितीय घनत्व कहा जाता है। इसे इस प्रकार गणना की जाती है—

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्र}}$$

भारत की जनसंख्या घनत्व 2011 में—

$$\frac{\text{1210 करोड़ व्यक्ति}}{\text{382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी}} = \text{32.8 लाख वर्ग किमी क्षेत्र}$$

इस औसत घनत्व के साथ 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी, भारत को विश्व के सबसे आबादी वाले देशों में से एक माना जाता है।

जनसंख्या का वितरण

भारत में जनसंख्या विभिन्न राज्यों में समान रूप से वितरित नहीं है। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु भारत के सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्य हैं, जबकि हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, सिक्किम, नागालैंड, मेघालय और त्रिपुरा कम जनसंख्या वाले राज्य हैं। जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(क) भौतिक कारक, (ख) सामाजिक-आर्थिक कारक, (ग) जनसांख्यिकीय कारक।

जनसंख्या के घनत्व को निर्धारित करने वाले कारको का वर्णन करें—

1. भूमि का राहत—समतल क्षेत्र पहाड़ों और पठारों की तुलना में अधिक जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि समतल क्षेत्रों में व्यापार, उद्योग और कृषि करना आसान होता है। इसके विपरीत, हिमाचल प्रदेश और मेघालय जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में घनत्व कम होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापार, उद्योग और कृषि के संचालन के लिए समतल भूमि, परिवहन, सिंचाई आदि जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती है। गंगा और सतलुज के उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

2. जलवायु—लद्दाख और उत्तरी हिमाचल प्रदेश की अत्यधिक ठंडी जलवायु, राजस्थान के थार रेगिस्तान की अत्यधिक गर्म जलवायु और मेघालय की नम जलवायु मानव बस्तियों को हतोत्साहित करती है।

3. वर्षा—नियमित और मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र घनी जनसंख्या वाले होते हैं। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल में, जनसंख्या घनत्व 1029 प्रति वर्ग किमी है, जो कृषि के लिए लाभकारी पर्याप्त वर्षा के कारण है।

4. सिंचाई सुविधाएं—यदि किसी क्षेत्र में वर्षा कम है लेकिन सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध हैं, तो कृषि संभव हो जाती है, जो बड़े जनसंख्या का समर्थन करती है। इसी कारण हम आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में उच्च घनत्व पाते हैं, जहाँ सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध है।

5. मिट्टी—उपजाऊ मिट्टियाँ कृषि के लिए उपयुक्त होती हैं। नदी की घाटियाँ, डेल्टास और निम्न भूमियाँ सबसे उत्पादक क्षेत्र होते हैं। नदी की घाटियाँ घनी जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं। कम उपजाऊ मिट्टियों वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम होती हैं।

6. खनिज—खनिज भंडार की उपस्थिति उच्च जनसंख्या घनत्व का समर्थन करती है। दामोदर घाटी में खनिजों की उपस्थिति नए शहर उभरे हैं। कोयला, जल शक्ति और पेट्रोलियम उद्योगों के स्थान को प्रभावित करते हैं। ये औद्यौगिक क्षेत्र बड़ी जनसंख्या का समर्थन करते हैं।

7. नदियाँ और जल आपूर्ति—नदियाँ जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत है। अधिकांश शहर नदियों के किनारे स्थित हैं। प्राचीन सभ्यता नदी की घाटियों में विकसित हुई। रेगिस्तान जल की कमी के कारण कम जनसंख्या वाले होते हैं।

8. कृषि—उत्पादक क्षेत्र सामान्यत: घनी जनसंख्या का समर्थन कर सकते हैं। पश्चिम बंगाल में, चावल उगाने वाले क्षेत्रों में वर्ष में तीन फसलें प्राप्त होती हैं। इसलिए, पश्चिम बंगाल के कृषि क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व उच्च है। आधुनिक उच्च उपज वाली फसलों को अपनाने वाले क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व उच्च होता है, जैसे पंजाब।

9. परिवहन के साधन—परिवहन के साधन उद्योगों, कृषि और व्यापार को प्रभावित करते हैं। विकसित परिवहन के साधनों वाले क्षेत्र जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। पहाड़ी जैसे कठिन पहुँच वाले क्षेत्र कम जनसंख्या वाले होते हैं।

10. जनसांख्यिकीय कारक—प्रजनन, मृत्यु दर, प्रवासन और शहरीकरण भी जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करते हैं।

अथवा

(ख) गंगा-सतलुज के मैदानों में धनी जनसंख्या संकेद्रण के निम्नलिखित कारण है—

(1) उपजाऊ जलौद मैदान जो कि कृषि योग्य उपजाऊ क्षेत्र है, जनसंख्या को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न उपलब्ध करवाता है।

(2) समतल मैदान रेलमार्गों तथा सड़कों के लिए अनुकूल है।

(3) पर्याप्त रोजगार के अवसर भी गंगा के मैदानी क्षेत्रों में औद्योगिक अवस्थाएँ प्रदान करते हैं।

(4) समजलवायु तथा शांतिपूर्ण सरकारी नीतियाँ भी जनसंख्या का सकेन्द्रण बनाती हैं।

27. (क) **मोटर वाहनों द्वारा वायु प्रदूषण**—विगत तीन दशकों में मोटर वाहनों की संख्या 32 गुना बढ़ गई है। 1997-98 में देश में 5.3 लाख बसें, 25.3 लाख ट्रक, लगभग 2.83 करोड़ दुपहिया वाहन, 13.4 लाख आटोरिक्शा तथा लगभग 50 लाख कारें, जीप और टैक्सियां थीं।

इनके प्रभाव से संपूर्ण भारत के नगरों की वायु की गुणवत्ता घट गई है। इसके कारण हैं—प्रदूषण नियंत्रण का अभाव और सीसा युक्त ईंधन का उपयोग करने वाले मोटर वाहनों की संख्या में निरंतर वृद्धि। राष्ट्रीय पर्यावरणीय अभियांत्रिकी शोध संस्थान (एन० ई० ई० आर० आई०) ने कुछ नगरों में वायुमंडलीय प्रदूषकों का पर्यवेक्षण करके संकेंद्रण की प्रवृत्तियों का वार्षिक औसत निकाला है।

(1) इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि मुंबई, कोलकाता और चेन्नई में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड के संकेंद्रण की प्रवृत्ति में स्थिरता आ रही है।

(2) इसके विपरीत दिल्ली में सल्फर डाइऑक्साइड का संकेंद्रण घट रहा है, लेकिन यह मुंबई और कोलकाता में बढ़ रहा है। सभी नगरों में निलंबित कणीय पदार्थों का संकेंद्रण कुछ हद तक बढ़ गया है।

(3) सीसा युक्त ईंधन का उपयोग करने वाले मोटर वाहनों से वायुमंडल में लगभग 95% सीसा-प्रदूषण होता है।

भारत : चार महानगरों में वाहनीय उत्सर्जन (प्रतिदिन अनुमानित भार टनों में)

नगर	निलंबित कणिकीय पदार्थ	सल्फर डाइऑक्साइड	नाइट्रोजन के ऑक्साइड	हाइड्रो कार्बन	कार्बन मोनोक्साइड	योग
दिल्ली	8.58	7.47	105.38	207.98	542.51	872
मुंबई	4.66	3.36	59.02	90.17	391.6	549
बंगलौर	2.18	1.47	21.85	65.42	162.8	254
कोलकाता	2.71	3.04	45.58	36.57	156.87	245

अथवा

(ख) शहरी क्षेत्रों की भीड़-भाड़, घनी और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे की समस्या के कारण विशाल शहरी अपशिष्ट का संचय होता है। शहरी अपशिष्ट के दो स्रोत होते हैं। घरेलू या घरेलू स्रोत और औद्योगिक या व्यावसायिक स्रोत। शहरी अपशिष्ट निपटान का गलत प्रबंधन बड़े शहरों में एक गंभीर समस्या है।

महानगरों में प्रतिदिन टन अपशिष्ट निकलता है और इसे जलाया जाता है। अपशिष्ट से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित करता है। मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए सीवेज या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्त्रोतों की अपर्याप्तता जल प्रदूषण में योगदान करती है। औद्योगिक इकाइयों का शहरी केंद्रों के आसपास केंद्रित होना पर्यावरणीय समस्याओं की एक शृंखला को जन्म देता है। नदियों में औद्योगिक

HOLY FAITH INTERNATIONAL LEP

अपशिष्ट का डालना जल प्रदूषण का प्रमुख कारण है। ठोस अपशिष्ट उत्पादन शहरों में निरंतर बढ़ता जा रहा है, दोनों निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के हिसाब से। ठोस अपशिष्ट का अनुचित निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं। थर्मल संयंत्र हवा में बहुत सारा धुआँ और राख छोड़ते हैं। उदाहरण के लिए 500 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाला एक संयंत्र 2000 टन राख छोड़ता है जिसे प्रबंधित करना मुश्किल है।

28. (क) बंदरगाह तट पर संरक्षित इनलेट होते हैं जो जहाज़ों को आश्रय प्रदान करते हैं। एक आदर्श बंदरगाह में कटे हुए तटरेखा, गहरा पानी, समृद्ध अंतर्देशीय और अच्छा जलवायु होना चाहिए। भारत की तटरेखा 7,517 किमी लंबी है। यहाँ 12 प्रमुख, 22 मध्यम और 185 छोटे बंदरगाह हैं।

(क) पश्चिमी तट पर बंदरगाह—

1. कांडला—यह कच्छ की खाड़ी के सिर पर स्थित है। यह एक ज्वारीय बंदरगाह है। यह कराची की जगह लेने की उम्मीद है। यह एक प्राकृतिक और सुरक्षित बंदरगाह है। यह उत्तर-पश्चिम भारत के विशाल और समृद्ध अंतर्देशीय से जुड़ा हुआ है। वडिनार में एक ऑफशोर टर्मिनल बनाया गया है। इसमें बड़े जहाज़ों के प्रवेश की सुविधाएँ हैं। यह सुडान नहर मार्ग पर स्थित है। आयात के मुख्य सामान में पेट्रोलियम, रसायन, उर्वरक और मशीनरी शामिल हैं। इसके मुख्य निर्यात में नमक, चीनी, सीमेंट और कपास के सामान शामिल हैं।

2. मुंबई—मुंबई भारत के पश्चिमी तट पर केंद्रीय स्थिति में है। यह एक द्वीप पर स्थित है जो मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ है। मुंबई ऐतिहासिक कारणों से एक बंदरगाह के रूप में विकसित हुआ है। ब्रिटिश उपनिवेशी हित इसके विकास के प्रमुख कारण थे। यह भारत का एकमात्र प्राकृतिक गहरे पानी का बंदरगाह है। यह 20 किमी लंबा और 10 किमी चौड़ा है। यह सूडान नहर के माध्यम से यूरोप से जुड़ा हुआ है। इसका समृद्ध उत्पादक अंतर्देशीय काले कपास की मिट्टी क्षेत्र है। यह बड़े जहाज़ों के लिए प्राकृतिक सुविधाओं के साथ एक विशाल और सुरक्षित बंदरगाह है। इसमें 54 डॉक और कई गोदाम हैं। इसे 'भारत का द्वार' भी कहा जाता है। यह भारत का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक और वाणिज्यिक नगर है। वस्त्र, तेल, बीज, चमड़े और खाल और मैंगनीज़ इसके प्रमुख निर्यात हैं। आयात में मशीनरी, पेट्रोलियम, कच्चे फिल्म, उर्वरक, कागज़ और औषधियाँ शामिल हैं। न्हावा शेवा में एक नया यांत्रिक बंदरगाह विकसित किया जा रहा है जिसका नाम जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह है; यह सबसे बड़ा कंटेनर बंदरगाह है।

3. मार्मागाओ—यह बंदरगाह गोवा में पश्चिमी तट पर एक नदी के मुहाने पर स्थित है। यह एक गहरा, प्राकृतिक बंदरगाह है। इसका अंतर्देशीय गोवा, महाराष्ट्र और कर्नाटका को शामिल करता है। यह मुख्य रूप से लौह अयस्क, मूँगफली और मैंगनीज़ का निर्यात करता है। आयात में मशीनरी और निर्मित सामान शामिल हैं। कोंकण रेलवे ने इसके विकास में मदद की है।

4. मंगलुरु—यह कर्नाटक में लोहे के अयस्क, उर्वरक, कॉफी, चाय, धागा आदि के निर्यात के लिए स्थित है।

5. कोच्चि—कोच्चि केरल में मालाबार तट पर स्थित है। इसे अरब सागर की रानी कहा जाता है। इसमें लैगून द्वारा निर्मित एक बड़ा सुरक्षित बैकवाटर है। यह एक सुरक्षित, गहरा और प्राकृतिक बंदरगाह है। यह ऑस्ट्रेलिया और दूर पूर्व के मार्ग पर स्थित है। यह एक महत्वपूर्ण नौसैनिक केंद्र और एक शिपयार्ड है। प्रमुख निर्यात में चाय, कॉफी, काजू, रबर, काली मिर्च, इलायची और कपास के सामान शामिल हैं। आयात में तेल, उर्वरक, मशीनरी और कोयला शामिल हैं।

(ख) पूर्वी तट पर बंदरगाह—

6. कोलकाता : यह हुगली के मुहाने पर एक नदी बंदरगाह है, जो लगभग 120 किमी अंदर है। इसमें उत्पादक कृषि गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा और खनिजों से समृद्ध छोटा-नागपुर क्षेत्र का समृद्ध अंतर्देशीय है। यह जापान और अमेरिका के मार्ग पर स्थित है। जहाज़ों को इस बंदरगाह में प्रवेश करने के लिए ज्वार पर निर्भर रहना पड़ता है। यह सिल्टेड हो जाता है और निरंतर ड्रेजिंग की आवश्यकता होती है। कोलकाता के बोझ को साझा करने के लिए हल्दिया का एक नया बंदरगाह विकसित किया जा रहा है। यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा बंदरगाह है। इसके मुख्य निर्यात में जूट, चाय, चीनी, लोहे का अयस्क, मिका और कोयला शामिल हैं। आयात में मशीनरी, रसायन, रबर, कागज़ आदि शामिल हैं।

7. विशाखापत्तनम—यह भारत के पूर्वी तट पर एक नया प्रमुख बंदरगाह है। यह कोलकाता और चेन्नई के बीच में स्थित है। यह डॉल्फिन नोज के कठोर चट्टानों से घिरा एक अच्छी तरह से सुरक्षित प्राकृतिक बंदरगाह है। यह लोहे के अयस्क, कोयला और मैंगनीज़ के खनन क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। इसका अंतर्देशीय आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और ओडिशा को शामिल करता है। यह भारत का सबसे बड़ा शिपयार्ड है। यह लोहे का अयस्क, मैंगनीज़, तिल के बीज, मिका और तंबाकू का निर्यात करता है। आयात में चावल, मशीनरी और पेट्रोलियम शामिल हैं।

8. पारादीप—यह ओडिशा के महानदी डेल्टा पर एक नया प्रमुख बंदरगाह है। यह एक गहरा प्राकृतिक बंदरगाह है। यह बड़े जहाज़ों के ठहरने की सुविधाएं प्रदान करता है। इसमें ओडिशा, छत्तीसगढ़ और झारखंड का विशाल अंतर्देशीय है जिसमें खनिज, वन उत्पाद और कृषि संसाधन शामिल हैं। यह जापान को लोहे का अयस्क और अन्य खनिज जैसे क्रोम, मैंगनीज़ और मिका का निर्यात करता है। आयात में उर्वरक, रसायन और चावल शामिल हैं।

9. चेन्नई—यह पूर्वी तट पर एक कृत्रिम, मानव निर्मित बंदरगाह है। यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा बंदरगाह है। आश्रय प्रदान करने के लिए दो कंक्रीट की दीवारें (ब्रेकवाटर) बनाई गई हैं। इसका अंतर्देशीय तमिलनाडु और कर्नाटक को शामिल करता है। यह एक समृद्ध कृषि क्षेत्र है। प्रमुख निर्यात में चाय, कॉफी, तिल के बीज, खालें और चमड़े, रबर, कपास के सामान, और तंबाकू शामिल हैं। आयात में कोयला, चावल, कागज़, रसायन और मशीनरी शामिल हैं।

10. एननोर—यह चेन्नई से 25 किमी उत्तर में स्थित है।

11. तूतीकोरिन—यह एक प्रमुख बंदरगाह है और चेन्नई के दक्षिण में स्थित है।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

अथवा

(ख) (*a*) एक बंदरगाह किसी देश के आयात और निर्यात व्यापार को संभालता है। यह विदेशी देशों से प्राप्त वस्तुओं के लिए एक प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य करता है। यह अंतर्देशीय में उत्पादित वस्तुओं के लिए निकासी बिंदु है। इस प्रकार, यह वस्तुओं और यात्रियों के लिए प्रवेश और निकासी का बिंदु है। इसके अलावा, यह वस्तुओं के भंडारण की सुविधाएँ प्रदान करता है और यहाँ सामान की लोडिंग और अनलोडिंग होती है।

अंतर्देशीय बंदरगाहों की विशेषताएँ—

(*i*) अंतर्देशीय बंदरगाह समुद्र तट से दूर स्थित होते हैं। उदाहरण के लिए, हुगली समुद्र तट के निकट स्थित है, जबकि कोलकाता एक अंतर्देशीय बंदरगाह है।

(*ii*) ये नदी या नहर के माध्यम से समुद्र से जुड़े होते हैं।

(*iii*) ऐसे बंदरगाह सपाट तल वाले जहाज़ों या बार्ज के लिए सुलभ होते हैं।

(*b*) (*i*) समुद्री बंदरगाह भारत के विदेशी व्यापार के लिए केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करते हैं।

(*ii*) बंदरगाह अंतर्देशीय से वस्तुओं के संग्रह केंद्र के रूप में कार्य करते हैं ताकि उन्हें विदेशी गंतव्यों के लिए आगे भेजा जा सके।

(*iii*) बंदरगाह विदेशी सामान के प्राप्ति बिंदु के रूप में कार्य करते हैं जो भारत में वितरण के लिए आते हैं।

(*iv*) जलमार्ग भारी और बड़े सामान के लिए परिवहन का सबसे सस्ता साधन है। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए अधिक पसंद किया जाता है।

(*v*) बंदरगाह विदेशी व्यापार के द्वार हैं क्योंकि ये निर्यात और आयात को संभालते हैं।

(*vi*) सूडान नहर के खुलने से पश्चिमी तट पर समुद्री बंदरगाहों को भी प्रोत्साहन मिला।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. रियोडिजेनेरो
ख. फोर्टफर्थ
ग. स्वेज नहर
घ. ब्राजील
ङ अंगोला
च. पर्थ
छ. अमेरिका के प्रेयरीज।

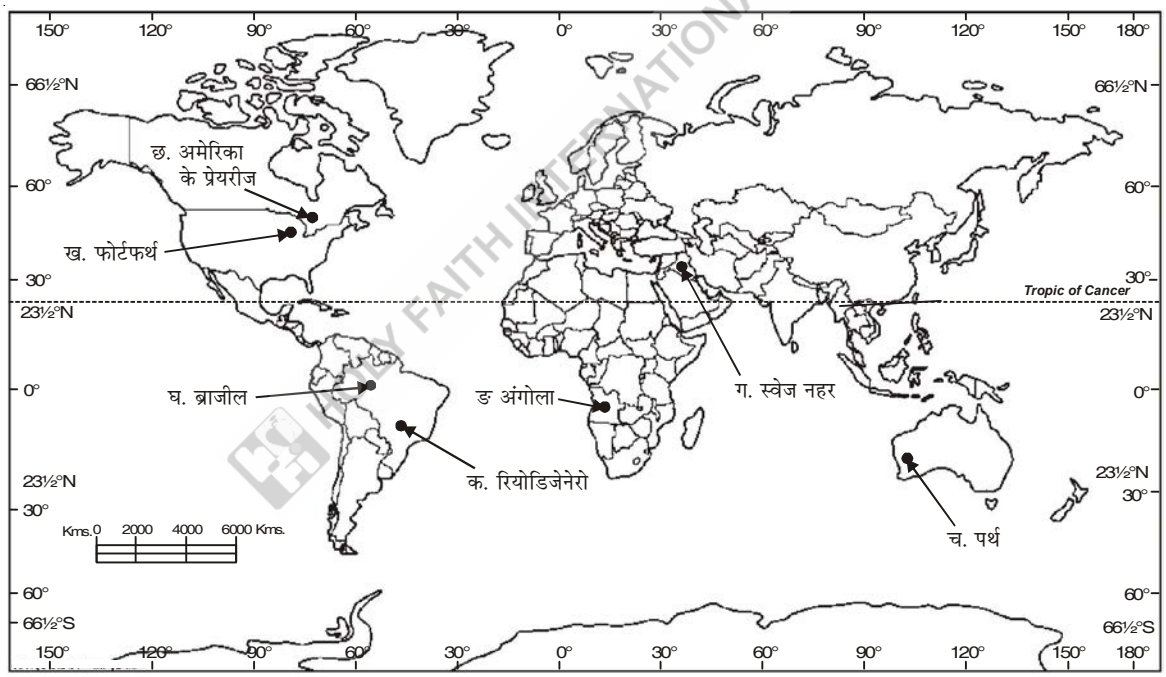

30. 30.1 उत्तर प्रदेश
30.2 मथुरा
30.3 बीरभूम
30.4 मार्मगोला
30.5 बिहार
30.6 अहमदाबाद गुजरात

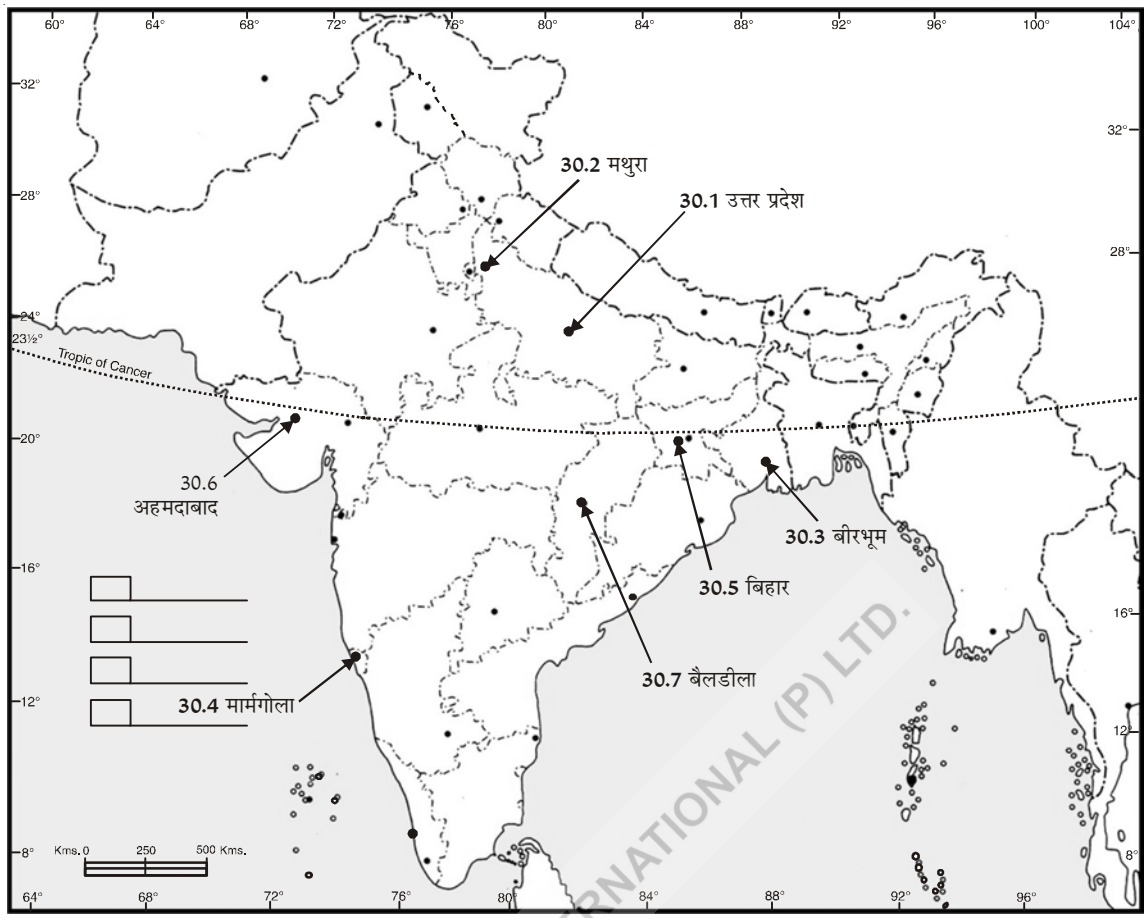

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–7

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*d*) आर्सेनिक।
2. (*c*) चक्रीय
3. (*c*) 2.5%.
4. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।
5. (*c*) सामुदायिक वन भूमि में वृद्धि
6. (*d*) भूमि का सिल्टेशन।
7. (*b*) लिग्नाइट।
8. (*c*) थर्मल।
9. (*c*) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 3 आगरा–नासिक
10. (*b*) (A) (B) (C) (D)
    (क) (ग) (ख) (घ)
11. (*a*) बिग इंच
12. (*a*) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
13. (*b*) SAARC.
14. (*c*) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।
15. (*a*) सभी मानव।
16. (*b*) डॉ० हक।
17. (*c*) एक अर्थशास्त्री।

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 राजस्थान नहर, जिसे अब इंदिरा गांधी नहर के रूप में जाना जाता है, भारत की सबसे बड़ी नहर प्रणालियों में से एक है। कंवर सैं ने 1948 में नहर परियोजना की कल्पना की, और इसे 31 मार्च 1958 को लॉन्च किया गया।

18.2 नहर पंजाब के हरिके बैराज से निकलती है और राजस्थान के थार रेगिस्तान में पाकिस्तान सीमा के समानांतर औसत 40 किमी की दूरी पर चलती है।

18.3 दूसरा चरण बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागपुर और चूरू ज़िलों में फैला हुआ है।

19. 19.1 इसका राइन आंतरिक जलमार्ग है।

19.2 नेकॉर, लाहन, पूर्व से जुड़ने वाली दो सहायक नदियाँ।

19.3 राइन आंतरिक जलमार्गों के टर्मिनल पोर्ट्स बेसल और रोटरडैम हैं।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20. ग्रिफ़िथ टेलर ने नियो–निर्धारणवाद या रोकने और आगे बढ़ने वाले निर्धारणवाद की अवधारणा को गढ़ा। इसे पर्यावरणीय निर्धारणवाद और संभाव्यता के दो विचारों के बीच एक मध्य मार्ग के रूप में देखा जा सकता है।

नियो–निर्धारणवाद संतुलन लाने का प्रयास करता है क्योंकि इसका अर्थ है कि न तो पूर्ण आवश्यकता की स्थिति है(पर्यावरणीय निर्धारणवाद) और न ही पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति है (संभाव्यता)। इसका मतलब है कि मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं यदि वे इसके आदेशों का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, मानव ने ठंडे और गर्म क्षेत्रों में रहने के लिए ठंड और गर्मी प्रतिरोधी घर बनाए। लेकिन यह नहीं भुलाया जाना चाहिए कि हम प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण या पर्यावरण में हस्तक्षेप के कारण प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर रहे हैं। हम ग्रीनहाउस प्रभाव और भूमि अपक्षय जैसी पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

अथवा

(ख) मानव भूगोल प्रकृति और मानव के बीच आपसी इंटरएक्शन के माध्यम से परस्पर संबंधों का अध्ययन करता है। प्रकृति और मानव अविभाज्य हैं और एक–दूसरे के साथ इंटरएक्ट करते हैं। दोनों के तत्व और घटनाएँ जटिल रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जबकि भौतिक वातावरण को मानवों द्वारा बहुत अधिक संशोधित किया गया है, इसने मानव जीवन को भी प्रभावित किया है।

भौतिक और मानव घटनाओं को अकसर मानव शरीर रचना के प्रतीकों का उपयोग करके उपमा में वर्णित किया जाता है, जैसे कि पृथ्वी का 'चेहरा', तूफान की 'आंख', नदी का मुंह', ग्लेशियर का 'नथुना', द्वीप का 'गर्दन' और मिट्टी का 'प्रोफाइल'।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

इसी तरह, गांवों, शहरों और क्षेत्रों को 'जीवों' के रूप में वर्णित किया गया है। जर्मन भूगोलियों ने 'राज्य/देश' को 'जीवित जीव' के रूप में वर्णित किया है। सड़कों, रेलवे और जलमार्गों के नेटवर्क को अक्सर 'संचरण की धमनियों' के रूप में वर्णित किया गया है।

21. अधुनिक विकास में सेवा क्षेत्र के महत्व—

(*i*) अब अत्यधिक उन्नत मशीनें और तकनीक उपलब्ध हैं। विनिर्माण क्षेत्र जिसे कुछ लोगों द्वारा संचालित और नियंत्रित किया जा सकता है, जिसके कारण पहले विनिर्माण क्षेत्र में कार्यरत कई लोग सेवा क्षेत्र में नौकरियों की तलाश कर रहे हैं।

(*ii*) अधिकांश विनिर्माण कंपनियों को गैर-प्रत्यक्ष उत्पादन क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोगों की आवश्यकता होती है जैसे कि क्लेरिकल, प्रबंधकीय, विज्ञापन, बिक्री, कानूनी और वित्तीय विशेषज्ञों की आय सीधे उत्पादन में लगे लोगों की तुलना में अधिक होती है।

(*iii*) सेवा क्षेत्र महत्वपूर्णता में बढ़ रहा है क्योंकि अधिक से अधिक महिलाएं इस क्षेत्र में रोज़गार की तलाश कर रही हैं, जो निर्माण क्षेत्र की तुलना में बेहतर कार्य वातावरण और प्रति व्यक्ति आय प्रदान करता है।

(*iv*) बढ़ती आय के साथ, लोग चिकित्सा सुविधाओं, मनोरंजन, आतिथ्य उद्योग, यात्रा और पर्यटन जैसी अधिक सेवाओं की मांग कर रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप सेवा क्षेत्र सभी दिशाओं में तेज़ी से विस्तारित हुआ है। यह एक अच्छी बात है कि कई लोग इन उद्योगों के माध्यम से रोज़गार प्राप्त कर रहे हैं। उदाहरण के लिए यदि पर्यटन बढ़ता है, तो आतिथ्य उद्योग में लोग रोज़गार प्राप्त करते हैं।

(*v*) सेवा क्षेत्र में वृद्धि जीडीपी में वृद्धि का संकेत देती है। इसलिए, सरकार कर्मचारियों को भविष्य निधि, ग्रेच्युटी, पेंशन आदि प्रदान करके सेवा क्षेत्र को उठाने के लिए सभी प्रयास करती है। इससे लोगों की प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ती है।

अधुनिक विकास में सेवा क्षेत्र का विकास—

सेवाएँ एक देश के आर्थिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि यह विभिन्न स्तरों पर होती हैं। लोगों और उद्योगों को विभिन्न सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। वे हैं—

(1) सेवाएँ उपभोक्ताओं को भुगतान के बदले प्रदान की जाती हैं। माली, धोबी और बार्बर शारीरिक श्रम करते हैं जबकि शिक्षक, वकील, चिकित्सक, संगीतकार और अन्य मानसिक श्रम करते हैं।

(2) निम्न-क्रम की सेवाएँ जैसे कि किराना दुकानें और लॉन्ड्री, उच्च-क्रम की सेवाओं या अधिक विशेषीकृत सेवाओं की तुलना में अधिक सामान्य और व्यापक होती हैं, जैसे कि चिकित्सकों, लेखाकारों और सलाहकारों की सेवाएँ।

(3) कुछ सेवाएँ सरकारों या कंपनियों द्वारा नियंत्रित और पर्यवेक्षित होती हैं। ये सेवाएँ राजमार्गों और पुलों का निर्माण और रख-रखाव, अग्निशामक विभागों का रखरखाव और शिक्षा और ग्राहक देखभाल की आपूर्ति या पर्यवेक्षण हैं। विभिन्न राज्यों और संघ शासित प्रदेशों ने परिवहन, दूरसंचार, ऊर्जा और जल आपूर्ति सेवाओं के विपणन की निगरानी और नियंत्रण के लिए निगम स्थापित किए हैं।

(4) पेशेवर सेवाएँ होती हैं, जिसमें इंजीनियरिंग, स्वास्थ्य देखभाल, कानून और प्रबंधन शामिल हैं। मनोरंजन और मनोरंजन सेवाओं का स्थान बाज़ार पर निर्भर करता है। मल्टीप्लेक्स और रेस्तरां ज्यादातर केंद्रीय व्यावसायिक ज़िले (CBD) के भीतर या उसके पास स्थित होते हैं, जबकि गोल्फ कोर्स ऐसे स्थान पर स्थित होता है जहाँ भूमि की कीमतें (CBD) की तुलना में कम होती हैं।

(5) व्यक्तिगत सेवाएँ जैसे खाना बनाना, बागवानी और घरेलू काम लोगों के दैनिक जीवन में काम को सुविधाजनक बनाती हैं। ये सेवाएँ ज्यादातर असंगठित होती हैं।

22. भारत एक भाषाई विविधता की भूमि है, ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 179 भाषाएँ तथा 544 के लगभग बोलियाँ बोली जाती थी। आधुनिक भारत के संदर्भ में 22 भाषाएँ अनुसूचित है तथा अनेक भाषाएँ गैर-अनुसूचित हैं। अनुसूचित भाषाओं में हिंदी बोलने वालों का प्रतिशत सर्वाधिक है। लघुतम भाषा वर्ग संस्कृत, बोडो तथा मणिपुरी बोलने वालों का है। भारतीय भाषाओं को बोलने वाले 4 भाषा परिवारों से जुड़े हुए हैं: आस्ट्रिक, द्रविड, चीनी-तिब्बती तथा भारत-यूरोपीय (आर्य) 75%

23. केंद्रीय सरकार नीति बनाती है और भारत के प्रमुख बंदरगाहों के कार्यों को नियंत्रित करती है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. जनसंख्या वृद्धि—इसका अर्थ है किसी विशेष क्षेत्र में एक निश्चित अवधि के दौरान जनसंख्या के आकार में परिवर्तन।

(*i*) यह सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। इसे जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि भी कहा जाता है।

(*ii*) इसे जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर के आधार पर गणना की जाती है।

भारत के जनांकिकीय इतिहास को निम्नलिखित चार अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है—

(*i*) 1921 से पूर्व—इस अवधि में जनसंख्या वृद्धि बहुत धीमी थी। जन्म दर तथा मृत्यु-दर दोनों ही उच्च थे। इस अध्ययन के आधार पर सन् 1921 को *जनांकिकीय विभाजक* (Demographic Divide) कहा जाता है।

(*ii*) 1921 और 1951 के मध्य—इस अवधि में उच्च जन्म-दर तथा घटती मृत्यु-दर के कारण जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हुई। स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के कारण प्लेग, हैज़ा, मलेरिया आदि महामारियों के कारण होने वाली मौतें घट गईं। परिवहन के विकसित साधनों द्वारा खाद्यान्न भेजने से अकाल के कारण भी मौतें घट गईं। इसे *मृत्यु प्रेरित वृद्धि* (Mortality induced growth) कहते हैं।

(*iii*) 1951 और 1981 के मध्य—इस अवधि में तीव्र गति से वृद्धि के कारण भारत की जनसंख्या लगभग दुगुनी हो गई। स्वास्थ्य सेवाओं के अधिक सुधार के कारण जन्म-दर की तुलना में मृत्यु-दर तेज़ी से घटी। इस प्रकार यह प्रजनन प्रेरित वृद्धि (Faculity induced growth) थी।

(*iv*) 1981 के पश्चात्—इस अवधि में जन्म-दर कम होने तथा

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

कम मृत्यु-दर के कारण वृद्धि दर में क्रमिक ह्रास हुआ, इस अवधि में जन्म-दर तेज़ी से घटी। यह 1981 में 34 प्रति हज़ार से घटकर 1999 में 26 प्रति हज़ार हो गई। यह प्रवृत्ति छोटे परिवार (Small Family) के प्रति अपने रुझान का सकारात्मक संकेत है।

2023 में 0.81% बढ़ी है जो कि 2022 में 0.68% बढ़ी थी 2021 साल के मुकाबले। भारत की जनसंख्या 2023 में 1,428,627,663 के करीब है।

25. घुमंतू पशुपालन—यह एक आत्मनिर्भर और प्राचीन गतिविधि है जो जानवरों पर निर्भर करती है। चूंकि ये लोग स्थायी जीवन नहीं जीते, इन्हें घूमंतू कहा जाता है।

लक्षण

(1) घुमंतू लोग पशुधन पर निर्भर होते हैं और उनका पालन-पोषण करते हैं। ये लोग भोजन, वस्त्र और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) वे भटकते हुए रहते हैं, अपने पशुधन के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर बेहतर चरागाहों और पानी की तलाश में जाते हैं। प्रत्येक समुदाय एक स्पष्ट परिभाषित क्षेत्र में निवास करता है।

(3) मवेशियों को घास के मैदानों में पाला जाता है जहाँ अधिक वर्षा होती है और घास नरम और लंबी होती है। भेड़ें कम वर्षा वाले क्षेत्रों में छोटी घास के साथ पाली जाती हैं। बकरियाँ कठिन भू-भाग में कम घास के साथ पाली जाती हैं। पशुपालक घुमंतुओं द्वारा पाले जाने वाले छह व्यापक रूप से वितरित प्रजातियाँ हैं : भेड़, बकरियाँ, ऊँट, मवेशी, घोड़े और गधे।

(4) ट्रांसहुमेंस वह प्रक्रिया है जिसमें गर्मियों के दौरान चरागाहों की खोज में मैदानों से पहाड़ों की ओर तथा सर्दियों में पहाड़ों से मैदानों की ओर प्रवासन किया जाता है। पर्वतीय क्षेत्रों की जनजातियाँ जैसे गुज्जर, बकरवाल, गड्डी और भोटिया गर्मियों में मैदानों से पहाड़ों की ओर सर्दियों में पहाड़ों से मैदानों की ओर चरागाहों के लिए प्रवास करती हैं। टुंड्रा क्षेत्रों में, इसी प्रकार का प्रवासन गर्मियों में दक्षिण से उत्तर और सर्दियों में उत्तर से दक्षिण की ओर होता है।

अथवा

(ख) **बागवानी की परिभाषा**—बागवानी में अधिक मुद्रा मिलने वाली फसलें जैसे सब्जियाँ, फल तथा पुष्प उगाए जाते हैं जिनकी माँग नगरीय क्षेत्रों में अधिक होती है। इस कृषि की विशेषताएँ इस प्रकार है।

(1) इस कृषि में खेतों का आकार छोटा होता है।

(2) ऊँची आय वाले लोगों के रिहायशी इलाकों के पास बागवानी की जाती है।

(3) इसमें गहन श्रम तथा अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।

(4) अच्छी सिंचाई, अच्छे उर्वरक, कीटनाशी, हरित गृह तथा कृत्रिम ताप की आवश्यकता भी इस कृषि में पड़ती है।

(5) जिन प्रदेशों में कृषक केवल सब्ज़ियाँ पैदा करता है वहाँ इसे ट्रक कृषि का नाम दिया जाता है।

(6) उत्तर पश्चिमी यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका का उत्तर-पूर्वी भाग तथा भूमध्य सागरीय प्रदेश इस कृषि के वैश्विक क्षेत्र हैं।

(7) पश्चिमी यूरोप में इस कृषि को कारखाना कृषि भी कहा जाता है। इसमें पशुधन पाला जाता है।

26. (क) किशोरों (10-19 वर्ष) का हिस्सा जनसंख्या का लगभग 20.9 प्रतिशत है। किशोर जनसंख्या को उच्च संभावनाओं वाली युवा जनसंख्या के रूप में माना जाता है लेकिन यदि सही तरीके से मार्गदर्शन नहीं किया गया तो यह काफी संवेदनशील होती है।

(*i*) किशोरों से संबंधित समाज के लिए कई चुनौतियां हैं जैसे कम उम्र में विवाह, अशिक्षा (विशेष रूप से महिलाओं में), स्कूल छोड़ना, पोषक तत्वों का कम सेवन, किशोर माताओं की उच्च मृत्यु दर, एच०आई०वी०/एड्स संक्रमण की उच्च दरें, शारीरिक या मानसिक मंदता, नशीली दवाओं का दुरुपयोग, शराब पीना, युवा अपराध और अपराध करना।

(*ii*) भारत सरकार ने किशोरों को उचित शिक्षा प्रदान करने के लिए कुछ नीतियां अपनाई हैं ताकि उनकी प्रतिभाओं को बेहतर तरीके से चैनलाइज किया जा सके और सही तरीके से उपयोग किया जा सके।

(*iii*) राष्ट्रीय युवा नीति हमारे बड़े युवा जनसंख्या के समग्र विकास पर ध्यान देती है। यह युवाओं और किशोरों के समग्र सुधार पर जोर देती है ताकि वे देश के निर्माणात्मक विकास के प्रति जिम्मेदारी निभा सकें।

अथवा

(ख) तालिका 1.2 : आधुनिक भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण

परिवार	उप-परिवार	शाखा/वर्ग	वाक् क्षेत्र
आस्ट्रिक	आस्ट्रो-एशियाई	मॉन ख़्मेर	मेघालय, निकोबर द्वीप समूह
(निषाद)		मुंडा	पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, असम, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र
1.38%	आस्ट्रो-नेसियन		भारत के बाहर
		दक्षिण द्रविड़	तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल
द्रविड़		मध्य द्रविड़	आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र
20%		उत्तर द्रविड़	बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

परिवार	उप-परिवार	शाखा/वर्ग	वाक् क्षेत्र
चीनी-तिब्बती (किरात) 0.85%	तिब्बती-म्यांमारी	तिब्बती हिमालयी उत्तरी असम असम-म्यांमारी	जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम अरुणाचल प्रदेश असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा मंघालय
भारतीय यूरोपीय (आर्य) 73%	इंडो-आर्य	इरानी (फारसी) दरदी भारतीय आर्य	भारत से बाहर जम्मू और कश्मीर जम्मू और कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र गोआ।

27. (क) प्लास्टिक एक गैर-निष्क्रिय पदार्थ है और इसका उपयोग और उत्पादन न्यूनतम होना चाहिए। प्लास्टिक का मलबा बिल्कुल हर जगह पाया जाता है आर्कटिक से अंटार्कटिका तक। यह हमारे शहरों में सड़क की नालियों को बंद करता है: यह कैंपग्राउंड और राष्ट्रीय उद्यानों में बिखरा हुआ है, और यहां तक कि माउंट एवरेस्ट पर भी जमा हो रहा है। लेकिन रन-ऑफ और हमारे नजदीकी नदी या झील में सीधे अपना कचरा डालने की आदत के कारण, प्लास्टिक दुनिया के महासागरों में बढ़ता जा रहा है। जब प्लास्टिक का विघटन होता है, तो इसका मतलब है कि एक बड़े प्लास्टिक के टुकड़े को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है। ये छोटे प्लास्टिक के टुकड़े छोटे जानवरों द्वारा खाए जा सकते हैं, लेकिन ये अभी भी पचने योग्य नहीं होते। यह खाद्य शृंखला में सभी जीवों को प्रभावित करता है, छोटी प्रजातियों जैसे प्लवक से लेकर व्हेल तक। जब प्लास्टिक का सेवन किया जाता है, तो विषाक्त पदार्थ खाद्य शृंखला में ऊपर की ओर बढ़ते हैं और यह उन मछलियों में भी मौजूद हो सकते हैं जो लोग खाते हैं। मोबाइल फोन से लेकर साइकिल के हेलमेट तक और बैग तक, प्लास्टिक ने समाज को ऐसे तरीकों से आकार दिया है जो जीवन को आसान और सुरक्षित बनाते हैं। लेकिन इस सिंथेटिक सामग्री ने पर्यावरण पर हानिकारक छाप भी छोड़ी है।

(*i*) प्लास्टिक में जो रसायन मिलाए जाते हैं, वे मानव शरीर द्वारा अवशोषित होते हैं। इनमें से कुछ यौगिक हार्मोन को बदलने या अन्य संभावित मानव स्वास्थ्य प्रभाव डालने के लिए पाए गए हैं।

(*ii*) प्लास्टिक का मलबा, जो रसायनों से भरा होता है और अक्सर समुद्री जानवरों द्वारा खाया जाता है, वन्यजीवों को घायल या ज़हरीला कर सकता है।

(*iii*) तैरता हुआ प्लास्टिक का कचरा, जो पानी में हज़ारों वर्षों तक जीवित रह सकता है, आक्रामक प्रजातियों के लिए छोटे परिवहन उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिससे आवास बाधित होते हैं।

(*iv*) लैंडफिल में गहराई से दफनाया गया प्लास्टिक हानिकारक रसायनों को रिसाव कर सकता है जो भूजल में फैल जाते हैं।

(*v*) विश्व के तेल उत्पादन का लगभग प्रतिशत प्लास्टिक बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है, और इसी मात्रा का उपभोग प्रक्रिया में ऊर्जा के रूप में किया जाता है।

अथवा

(ख) शहरी क्षेत्रों की भीड़-भाड़, घनी और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे की समस्या के कारण विशाल शहरी अपशिष्ट का संचय होता है। शहरी अपशिष्ट के दो स्रोत होते हैं। घरेलू या घरेलू स्रोत और औद्योगिक या व्यावसायिक स्रोत। शहरी अपशिष्ट निपटान का गलत प्रबंधन बड़े शहरों में एक गंभीर समस्या है।

महानगरों में प्रतिदिन टन अपशिष्ट निकलता है और इसे जलाया जाता है। अपशिष्ट से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित करता है। मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए सीवेज या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्त्रोतों की अपर्याप्तता जल प्रदूषण में योगदान करती है। औद्योगिक इकाइयों का शहरी केंद्रों के आसपास केंद्रित होना पर्यावरणीय समस्याओं की एक शृंखला को जन्म देता है। नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट का डालना जल प्रदूषण का प्रमुख कारण है। ठोस अपशिष्ट उत्पादन शहरों में निरंतर बढ़ता जा रहा है, दोनों निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के हिसाब से। ठोस अपशिष्ट का अनुचित निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं। थर्मल संयंत्र हवा में बहुत सारा धुआँ और राख छोड़ते हैं। उदाहरण के लिए 500 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाला एक संयंत्र 2000 टन राख छोड़ता है जिसे प्रबंधित करना मुश्किल है।

28. (क) प्लास्टिक एक गैर-निष्क्रिय पदार्थ है और इसका उपयोग और उत्पादन न्यूनतम होना चाहिए। प्लास्टिक का मलबा बिल्कुल हर जगह पाया जाता है आर्कटिक से अंटार्कटिका तक। यह हमारे शहरों में सड़क की नालियों को बंद करता है: यह कैंपग्राउंड और राष्ट्रीय उद्यानों में बिखरा हुआ है, और यहां तक कि माउंट एवरेस्ट पर भी जमा हो रहा है। लेकिन रन-ऑफ और हमारे नजदीकी नदी या झील में सीधे अपना कचरा डालने की आदत के कारण, प्लास्टिक दुनिया के महासागरों में बढ़ता जा रहा है। जब प्लास्टिक का विघटन होता है, तो इसका मतलब है कि एक बड़े प्लास्टिक के टुकड़े को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है। ये छोटे प्लास्टिक के टुकड़े छोटे जानवरों द्वारा खाए जा सकते हैं, लेकिन ये अभी भी पचने योग्य नहीं होते। यह खाद्य शृंखला में सभी जीवों को प्रभावित करता है, छोटी प्रजातियों जैसे प्लवक से लेकर व्हेल तक। जब प्लास्टिक का सेवन किया जाता है, तो विषाक्त पदार्थ खाद्य शृंखला में ऊपर की ओर बढ़ते हैं और यह उन मछलियों में भी मौजूद

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

हो सकते हैं जो लोग खाते हैं। मोबाइल फोन से लेकर साइकिल के हेलमेट तक और iv बैग तक, प्लास्टिक ने समाज को ऐसे तरीकों से आकार दिया है जो जीवन को आसान और सुरक्षित बनाते हैं। लेकिन इस सिंथेटिक सामग्री ने पर्यावरण पर हानिकारक छाप भी छोड़ी है।

(*i*) प्लास्टिक में जो रसायन मिलाए जाते हैं, वे मानव शरीर द्वारा अवशोषित होते हैं। इनमें से कुछ यौगिक हार्मोन को बदलने या अन्य संभावित मानव स्वास्थ्य प्रभाव डालने के लिए पाए गए हैं।

(*ii*) प्लास्टिक का मलबा, जो रसायनों से भरा होता है और अक्सर समुद्री जानवरों द्वारा खाया जाता है, वन्यजीवों को घायल या ज़हरीला कर सकता है।

(*iii*) तैरता हुआ प्लास्टिक का कचरा, जो पानी में हज़ारों वर्षों तक जीवित रह सकता है, आक्रामक प्रजातियों के लिए छोटे परिवहन उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिससे आवास बाधित होते हैं।

(*iv*) लैंडफिल में गहराई से दफनाया गया प्लास्टिक हानिकारक रसायनों को रिसाव कर सकता है जो भूजल में फैल जाते हैं।

(*v*) विश्व के तेल उत्पादन का लगभग प्रतिशत प्लास्टिक बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है, और इसी मात्रा का उपभोग प्रक्रिया में ऊर्जा के रूप में किया जाता है।

अथवा

(ख) झुग्गियाँ, झुग्गी-झोपड़ी क्लस्टर और झोपड़ियों की कॉलोनियाँ विकासशील देशों जैसे भारत में शहरी बस्तियों द्वारा सामना की जाने वाली एक प्रमुख समस्या है। इनमें वे लोग निवास करते हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों से आजीविका की तलाश में इन शहरी केंद्रों की ओर पलायन करने के लिए मजबूर हुए लेकिन उच्च किराए और भूमि की उच्च लागत के कारण उचित आवास का खर्च नहीं उठा सके। वे पर्यावरण के लिए असंगत और अवनत क्षेत्रों पर कब्जा करते हैं। झुग्गियाँ निवास के लिए सबसे कम पसंदीदा क्षेत्र हैं, जीर्ण-शीर्ण घर, खराब स्वच्छता की स्थिति, खराब वेंटिलेशन, पेयजल, रोशनी और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी आदि। खुले में शौच, अनियंत्रित नालियों के सिस्टम और भीड़-भाड़ वाली संकरी सड़कें गंभीर स्वास्थ्य और सामाजिक-पर्यावरणीय खतरे हैं। अधिकांश झुग्गी जनसंख्या कम वेतन वाले, उच्च जोखिम वाले, असंगठित क्षेत्रों में काम करती है। नतीजन, वे कुपोषित होते हैं, विभिन्न प्रकार की बीमारियों और रोगों के प्रति संवेदनशील होते हैं और अपने बच्चों को उचित शिक्षा देने का खर्च नहीं उठा सकते। गरीबी उन्हें मादक पदार्थों के दुरुपयोग, शराबबंदी, अपराध, उपद्रव, भागने की प्रवृत्ति, उदासीनता और अंततः सामाजिक बहिष्कार के प्रति संवेदनशील बनाती है।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. केप टाऊन
ख. पेरिस
ग. स्वेज नहर
घ. आस्ट्रेलिया
ङ टुंड्रा प्रदेश
च. कैलगिरी
छ. प्रेयरीज

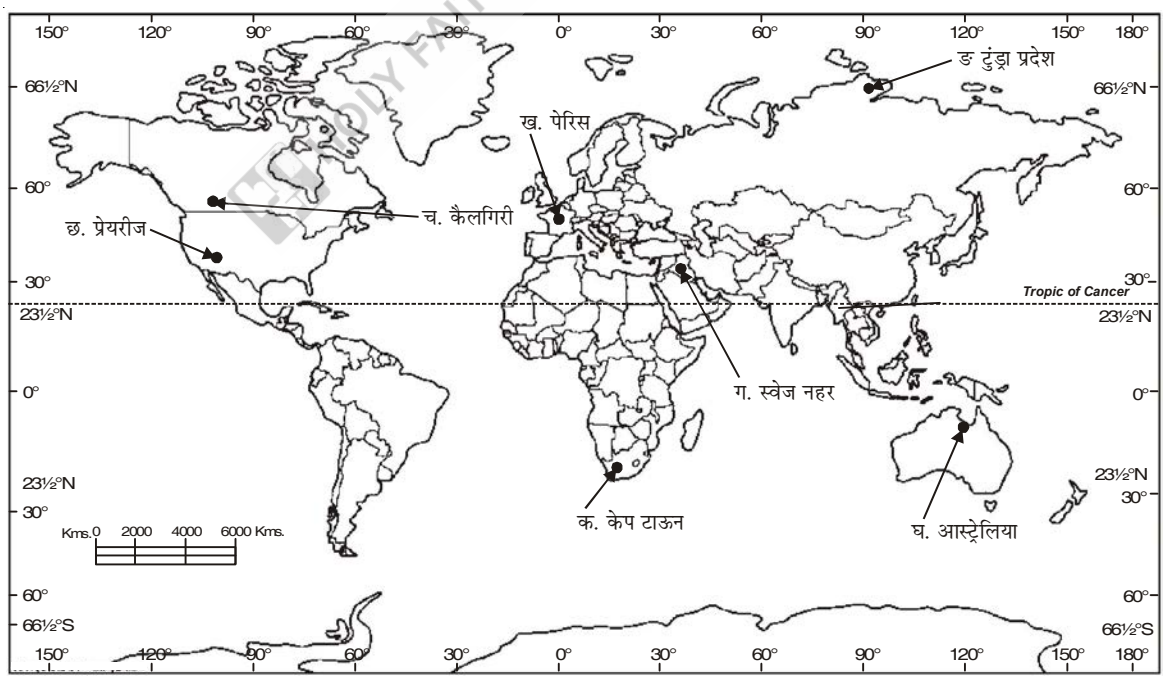

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

30. 30.1 पश्चिम बंगाल

30.2 बेल्लारी ज़िला तथा चिकमगलुरु ज़िला की बाबा बूदन की पहाड़ियाँ

30.3 खेतड़ी

30.4 सिलचर (असम)

30.5 अरुणाचल प्रदेश

30.6 कोच्चि

30.7 बैलाडीला।

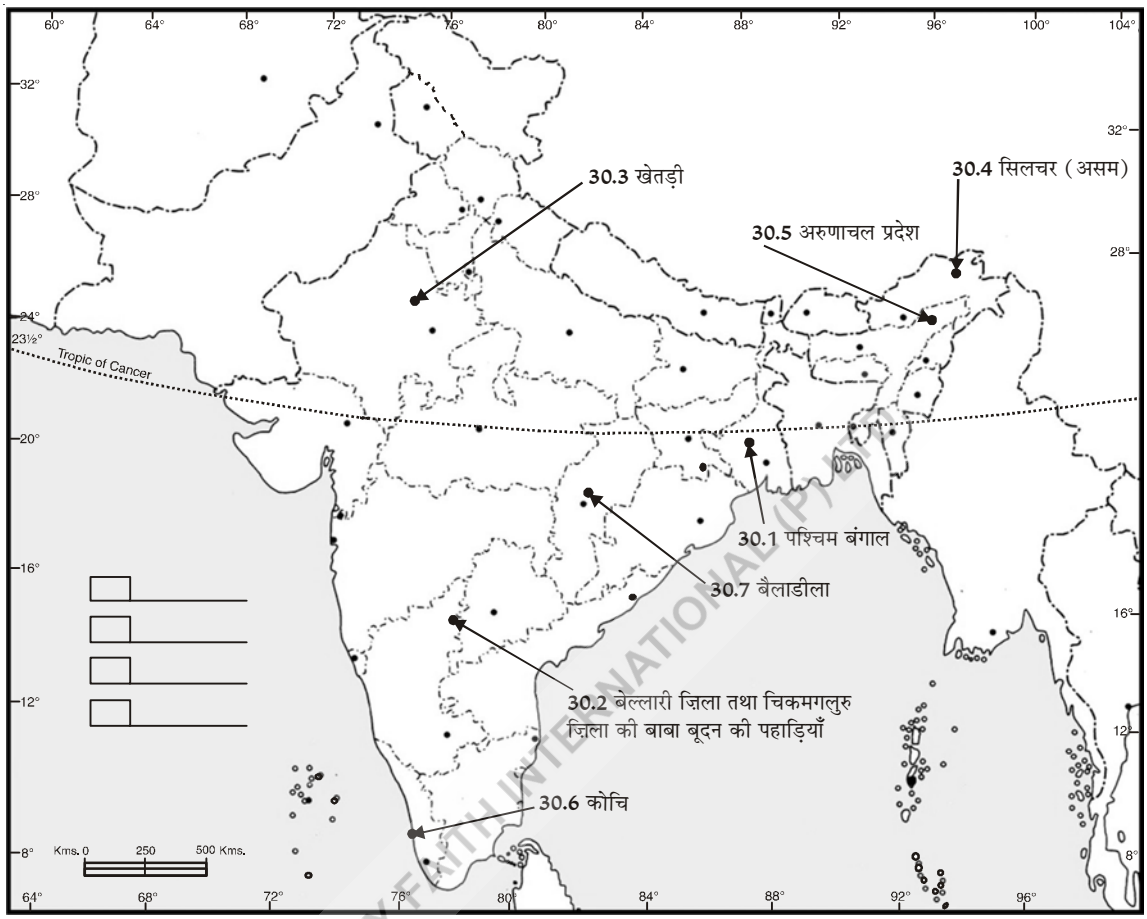

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–8

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*a*) पंजाब।

2. (*d*) इनमें से सभी।

3. (*c*) 32%.

4. (*c*) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

5. (*a*) एक भूमि जो 1 से 5 साल तक कृषि नहीं की जाती है।

6. (*d*) गन्ना।

7. (*b*) खेत्रि।

8. (*d*) रणिगंज।

9. (*a*) राष्ट्रीय राजमार्ग 7 वाराणसी–हैदराबाद

10. (*a*)

	A	B	C	D
	(*i*)	(*ii*)	(*iii*)	(*iv*)

11. (*a*) श्रीनगर–कन्याकुमारी।

12. (*b*) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

13. (*c*) चीन

14. (*c*) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

15. (*a*) विकास मात्रात्मक है जबकि विकास गुणात्मक है।

16. (*a*) जब सकारात्मक विकास होता है।

17. (*c*) सकारात्मक विकास।

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 भरमौर के जनजातीय क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के चंबा ज़िले में।

18.2 इस क्षेत्र में 'गद्दी' नामक एक जनजातीय समुदाय निवास करता है, जिसने हिमालय क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाए रखी है।

18.3 1975 से

19. 19.1 पारसाइबेरियन रेलमार्ग रूस में स्थित है।

19.2 मॉस्को (A) तथा चिता (B).

19.3 1. इस रेलमार्ग ने एशियाई प्रदेश को पश्चिमी यूरोपीय बाजारों से जोड़ा हैं।

2. यह रेलमार्ग दोहरे पथ से युक्त विद्युतीकृत पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग है।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20. (क) 1. यह प्राकृतिक वातावरण और मानवों के बीच प्रारंभिक इंटरएक्शन के चरणों को संदर्भित करता है जहां मानव प्रकृति के आदेशों के अनुसार अनुकूलित होते हैं।

2. यह बहुत कम तकनीकी और सामाजिक विकास के स्तर को दर्शाता है।

3. प्राकृतिककृत मानव प्रकृति की सुनते हैं, उसके क्रोध से डरते हैं और प्रकृति की पूजा करते हैं।

4. मानवों की प्रकृति पर सीधी निर्भरता।

5. प्राकृतिककृत मानवों के लिए भौतिक वातावरण मां प्रकृति बन जाता है।

प्रकृति का मानवकरण—1. यह प्रकृति की शक्तियों और उन मानवों के बीच के इंटरएक्शन को संदर्भित करता है जो प्रकृति की शक्तियों को समझना शुरू करते हैं।

2. यह कुशल तकनीक और बेहतर सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों के विकास को दर्शाता है।

3. मानव आवश्यकता की स्थिति से स्वतंत्रता की स्थिति में जाते हैं।

4. अधिक अवसर बनाने के लिए पर्यावरण से संसाधन प्राप्त किए जाते हैं।

5. मानव प्रकृति का उपयोग करते हैं ताकि प्रकृति मानवित हो जाए, जो मानव गतिविधियों के निशान दिखाती है।

अथवा

(ख) मानव प्राणी प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करते हैं और भौतिक वातावरण मानवित हो जाता है और मानव उद्यम के निशान धारण करने लगता है। मानव गतिविधियाँ सांस्कृतिक परिदृश्य

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

बनाती हैं। मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं: ऊँचाई पर स्वास्थ्य रिसॉर्ट, विशाल शहरी फैलाव, मैदानों और लुढ़कती पहाड़ियों में खेत, बाग और चरागाह, तटों पर बंदरगाह, महासागरीय सतह पर महासागरीय मार्ग और अंतरिक्ष में उपग्रह।

समय के साथ, मानव अपने वातावरण और प्रकृति की शक्तियों के साथ अनुकूलित और समायोजित होते हैं। यह उन्हें सांस्कृतिक परिदृश्य बनाने में मदद करता है।

जिसमें मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं। यह सामाजिक और सांस्कृतिक विकास मानवों को बेहतर और अधिक कुशल तकनीक विकसित करने में समर्थन करता है।

सबसे कठिन जलवायु परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में स्थायी मानव बस्तियाँ। इसमें तकनीक का विकास शामिल है जिसने मानवों को कठोर मौसम की परिस्थितियों में भी जीवित रहने में सक्षम बनाया, जैसे कि तीव्र हवाओं और भारी बर्फबारी वाले स्थानों में आरामदायक तापमान पर कमरे का कृत्रिम ताप। मानव दूरदराज के क्षेत्रों से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों के साथ नेटवर्क भी बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ों पर सड़कों और रेलवे ट्रैक बिछाए जाते हैं या समुद्र के तल से संसाधन प्राप्त किए जाते हैं।

21. डिजिटल विभाजन एक आर्थिक और सामाजिक असमानता है जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित विकास से उभरती है। यह विकसित और विकासशील देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक भिन्नताओं के कारण होता है।

यह तय करने वाला कारक है कि देश कितनी तेज़ी से अपने नागरिकों को ICT तक पहुँच और इसके लाभ प्रदान कर सकते हैं।

यह विभाजन देशों के भीतर भी मौजूद है। बड़े देशों जैसे भारत और रूस में महानगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में डिजिटल दुनिया तक बेहतर पहुँच और कनेक्टिविटी होती है।

22. ग्रामीण और शहरी बस्तियों के बीच मूलभूत अंतर इस प्रकार है—

ग्रामीण बस्तियाँ अपनी जीवन सहायता या मौलिक आर्थिक आवश्यकताओं को भूमि आधारित प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों से प्राप्त करती हैं, जबकि शहरी बस्तियाँ कच्चे माल की प्रसंस्करण और तैयार सामान के निर्माण पर निर्भर करती हैं, एक ओर और विभिन्न सेवाओं पर दूसरी ओर।

23. जनसंख्या घनत्व—1.जनसंख्या का घनत्व मानव और भूमि के संबंध का एक माप है। इसे प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्त किया जाता है। यह भूमि के संबंध में जनसंख्या के स्थापिक वितरण को बेहतर समझने में मदद करता है।

भौतिक कारक—भौतिक कारक जैसे जलवायु भू-भाग और जल की उपलब्धता जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र, डेल्टास और तटीय मैदानी क्षेत्रों में देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक जनसंख्या का अनुपात है।

आर्थिक कारक—आर्थिक कारक जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और परिवहन नेटवर्क का विकास दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बैंगलोर, पुणे आदि के शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के उच्च संकेद्रण का कारण बनते हैं।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को उस क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व कहा जाता है।

कुछ भौतिक या भौगोलिक कारक हैं जो जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करते हैं।

1. जल की उपलब्धता—लोग उन क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं जहां ताजे पानी की आसानी से उपलब्धता होती है। पानी घरेलू, कृषि और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए आवश्यक है। इसलिए, नदी की घाटियाँ विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। उदाहरण के लिए, भारत में इंडो-गंगा मैदान, चीन में हुआंग हो और यांग्त्ज़े बेसिन और मिस्र में नील घाटी बहुत घनी आबादी वाले हैं।

2. भूआकृतियाँ—मैदानी क्षेत्र कृषि, सिंचाई, परिवहन और व्यापार के लिए बेहतर सुविधाएँ प्रदान करते हैं। लोग समतल मैदानी और हल्की ढलानों पर रहना पसंद करते हैं क्योंकि ये भवनों का निर्माण, सड़कें और रेलवे लाइनें बिछाने, नहरें बनाने और उद्योग स्थापित करने के लिए उपयुक्त हैं। गंगा के मैदान और हुआंग हो का बेसिन विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से हैं। पर्वतीय और पठारी क्षेत्रों जैसे हिमालय और ड्रेकेंसबर्ग पठार में rugged भूआकृति वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम है।

1. जलवायु—सुखद जलवायु और कम मौसमी भिन्नता वाले क्षेत्र अधिक लोगों को आकर्षित करते हैं। गर्म या ठंडे रेगिस्तानों, भारी वर्षा वाले क्षेत्रों या कम वर्षा वाले क्षेत्रों की चरम जलवायु लोगों के रहने के लिए असुविधाजनक होती है। इसलिए, इन क्षेत्रों की जनसंख्या कम होती है। इसलिए, अफ्रीका के गर्म भूमध्य रेखीय भाग और रूस, कनाडा और अंटार्कटिका के ठंडे ध्रुवीय क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम है।

2. मिट्टी—उपजाऊ मिट्टी कृषि और संबंधित गतिविधियों की सफलता दर सुनिश्चित करती है। इसलिए, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टियों वाले क्षेत्र कई अधिक लोगों का समर्थन करते हैं; ये क्षेत्र गहन कृषि का समर्थन कर सकते हैं।

25. (क) **घुमंतू पशुपालन**

(1) घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(3) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(4) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

(5) हिमालयी क्षेत्र में, इस प्रकार का पशुपालन गुज्जर, बकरवाल, गड्डी और भोटिया द्वारा अभ्यास किया जाता है।

वाणिज्यिक पशुपालन

(1) इसे स्थायी रैंचों पर अभ्यास किया जाता है।

(2) यह गतिविधि मुख्य रूप से पश्चिमी संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(3) यहाँ बड़े रैंचों को कई हिस्सों में विभाजित किया जाता है। जब एक हिस्से का चारा खा लिया जाता है, तो जानवरों को दूसरे हिस्से में ले जाया जाता है।

(4) इस प्रकार के पशुपालन में जैसे मांस, ऊन, चमड़ा और खाल को वैज्ञानिक रूप से संसाधित और पैक किया जाता है और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है।

(5) इसे ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अर्जेंटीना में अभ्यास किया जाता है।

अथवा

(ख) **घुमंतू पशुपालन**—घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(1) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(2) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(3) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

26. (क) **मानवीय विकास**—विकास एक प्रगतिशील विचारधारा है। यह किसी प्रदेश के संसाधनों के विकास के लिए अधिकतम शोषण की प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी प्रदेश के आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। इस संदर्भ में भूगोल वेत्ता विकसित देशों तथा विकासशील देशों के शब्द प्रयोग करते हैं।

मानव भूतल पर सर्वोत्तम प्राणी है। मानव ने भूतल पर अनेक परिवर्तन किए हैं। विज्ञान, शिक्षा तथा प्रौद्योगिकी में बहुत विकास हुआ है। फिर भी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में अंतर-प्रादेशिक विभिन्नताएं पाई जाती हैं। विकास से अभिप्राय एक ऐसे वातावरण की रचना करना है जिसमें प्रत्येक शिशु को शिक्षा प्राप्त हो, कोई भी मानव स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित न हो, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूरा प्रयोग कर सके।

मानवीय विकास के सूचक—विश्व बैंक प्रति वर्ष विश्व विकास रिपोर्ट तैयार करके प्रस्तुत करता है। इसमें उत्पादन, खपत, मांग, ऊर्जा, वित्त, व्यापार, जनसंख्या वृद्धि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के 177 देशों के आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। यह रिपोर्ट कुछ सूचकों पर आधारित होती है।

मानवीय विकास के तीन मूल घटक हैं—(1) जीवन अवधि, (2) ज्ञान (3) रहन-सहन का स्तर।

भारत का विश्व में मानवीय विकास में 126वां स्थान है।

मानवीय विकास के प्रमुख सूचक निम्नलिखित हैं—

(1) जन्म पर जीवन अवधि

(2) साक्षरता

(3) प्रति व्यक्ति आय

(4) जनसंख्यात्मक विशेषताएं जैसे कि शिशु मृत्यु-दर, प्राकृतिक वृद्धि दर, आयु वर्ग आदि।

अथवा

(ख) **मानव विकास के चार स्तंभ—**

जैसे किसी भी भवन को स्तंभों द्वारा समर्थित किया जाता है, मानव विकास का विचार समानता, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों द्वारा समर्थित है।

1. समानता का अर्थ है सभी के लिए अवसरों की समान पहुंच बनाना। लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों को उनके लिंग, जाति, आय और भारतीय संदर्भ में, जाति के बावजूद समान होना चाहिए। फिर भी, यह अकसर ऐसा नहीं होता और लगभग हर समाज में होता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश में, यह देखना दिलचस्प है कि अधिकांश स्कूल ड्रॉपआउट किस समूह से संबंधित हैं। इससे ऐसे व्यवहार के कारणों को समझने में मदद मिलनी चाहिए। भारत में, बड़ी संख्या में महिलाएं और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लोग स्कूल छोड़ देते हैं। यह दिखाता है कि इन समूहों के विकल्प ज्ञान की पहुंच न होने के कारण सीमित हो जाते हैं।

2. स्थिरता का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। स्थायी मानव विकास के लिए, प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलने चाहिए। सभी पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी का भी दुरुपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की कमी का कारण बनेगा। एक अच्छा उदाहरण लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व के बारे में है। यदि कोई समुदाय अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व पर जोर नहीं देता है, तो तब ये युवा महिलाएं बड़ी होंगी, तो उनके लिए कई अवसर खो जाएंगे। उनके करियर के विकल्प गंभीर रूप से सीमित हो जाएंगे और यह उनके जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करेगा। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए विकल्पों और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

3. उत्पादकता का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है। ऐसी उत्पादकता को लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके लगातार समृद्ध किया जाना चाहिए। अंततः लोग राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति हैं। इसलिए, उनके ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास, या बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना अंततः बेहतर कार्य दक्षता की ओर ले जाता है।

4. सशक्तिकरण का अर्थ है विकल्प बनाने की शक्ति होना। ऐसी शक्ति स्वतंत्रता और क्षमता को बढ़ाने से आती है। लोगों को सशक्त बनाने के लिए अच्छे शासन और जन केंद्रित नीतियों की आवश्यकता होती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण विशेष महत्व रखता है।

27. (क) **वायु प्रदूषण के प्रभाव—**

1. वायु प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों जैसे अस्थमा, गले में खराश, छींक और एलर्जिक राइनाइटिस का कारण बनता है।

2. यह वैश्विक तापमान में वृद्धि का कारण बनता है जो मौसम के लयबद्ध चक्र में परिवर्तन करता है।

3. आंखों में खुजली, पिम्पल्स आदि जैसी विभिन्न त्वचा बीमारियों के लिए भी ज़िम्मेदार है।

वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं—

1. वनरोपण को बढ़ावा देना।

2. चार या पांच सितारा रेटिंग के साथ इलेक्ट्रिकल उपकरणों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।

3. ऑटोमोबाइल में सीएनजी का उपयोग करना।

4. चिमनी स्थापित करना।

HOLY FAITH INTERNATIONAL

अथवा

(ख) **झुग्गियों की समस्याएँ—**

बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। झुग्गियों और शहरी कचरे के निपटान की समस्या दो मुख्य मुद्दे हैं।

शहरों में स्थान की कमी है। बढ़ती जनसंख्या आवास की समस्याएँ पैदा करती है। इसे हल करने के लिए बहुमंज़िला इमारतें बनाई जा रही हैं।

आमतौर पर, पुश और पुल कारक लोगों को शहरों की ओर प्रवास करने के लिए मजबूर करते हैं। ये लोग शहरों में रोज़गार की तलाश में आते हैं। शहरों में आवास की सुविधा महंगी होती है, जिसके कारण गरीब लोग शहरों के बाहर खाली भूमि पर झोपड़ियाँ बनाते हैं। इस प्रकार झुग्गियाँ विकसित होने लगती हैं। ऐसी झुग्गियों में जनसंख्या घनत्व अधिक होता है और जल निकासी और शहरी कचरे के निपटान की कोई सुविधा नहीं होती है। लोगों का जीवन स्तर बहुत निम्न होता है। प्रशासन ने इन क्षेत्रों को सुविधाएँ प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए हैं, फिर भी ये झुग्गियाँ कई बीमारियों से ग्रस्त हैं।

28. (क) पाइपलाइनों का परिवहन के साधन के रूप में निम्नलिखित कारणों से महत्व है—

(1) इनका उपयोग तरल और गैसों जैसे पेट्रोलियम, पानी और प्राकृतिक गैस के लिए निर्बाध प्रवाह के लिए किया जाता है।

(2) इनका उपयोग कई भागों में रसोई गैस या एल०पी०जी० के परिवहन के लिए भी किया जाता है। तरलीकृत पेट्रोलियम भी पाइपलाइनों के माध्यम से परिवहन किया गया। दूध फार्मों से फैक्ट्रियों में पाइपलाइनों के माध्यम से न्यूजीलैंड में आपूर्ति की जाती है।

(3) अमेरिका में उत्पादन क्षेत्रों से उपभोक्ता क्षेत्रों तक तेल पाइपलाइनों का घना नेटवर्क है। बिग इंच, एक पाइपलाइन, मेक्सिको की खाड़ी के तेल कुओं से उत्तर-पूर्वी राज्यों तक पेट्रोलियम ले जाती है। अमेरिका में प्रति टन कि०मी० लगभग 17 प्रतिशत माल पाइपलाइनों के माध्यम से ले जाया जाता है।

(4) भारत, पश्चिम एशिया, यूरोप और रूस में, पश्चिम एशिया की पाइपलाइनों का उपयोग तेल कुओं को रिफाइनरी, बंदरगाहों और घरेलू बाज़ारों से जोड़ने के लिए किया जाता है।

(5) मध्य एशिया में तुर्कमेनिस्तान ने ईरान और चीन के कुछ हिस्सों के लिए पाइपलाइनों का विस्तार किया है।

अथवा

(ख) **सूज़ नहर**

(1) यह मिस्र में स्थित है।

(2) यह भूमध्य सागर और लाल सागर को जोड़ती है।

(3) इसमें एकतरफा यातायात है।

(4) यह एक समुद्र-स्तरीय नहर है जिसमें लॉक नहीं हैं, जिसकी लंबाई 160 कि०मी० और गहराई 11 से 15 मीटर है।

(5) इस नहर के माध्यम से गुजरने वाले जहाज़ों से भारी कर लगाए जाते हैं।

(6) इस मार्ग पर कोयला बड़ी मात्रा में उपलब्ध है।

पनामा नहर

(1) यह पनामा में स्थित है।

(2) यह प्रशांत महासागर को जोड़ती है।

(3) यह द्विदिश यातायात की अनुमति देती है।

(4) इसमें छह लॉक प्रणाली है। जहाज़ इन लॉक के माध्यम से विभिन्न स्तरों (26 मीटर ऊपर और नीचे) को पार करते हैं, इससे पहले कि वे पनामा की खाड़ी में प्रवेश करें।

(5) इस नहर के माध्यम से गुजरने वाले जहाज़ों से कम कर लगाए जाते हैं।

(6) इस मार्ग पर कोयला बड़ी मात्रा में उपलब्ध नहीं है।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. केप टाऊन

ख. पेरिस

ग. स्वेज नहर

घ. आस्ट्रेलिया

ङ टुंड्रा प्रदेश

च. कैलगिरी

छ. प्रेयरीज

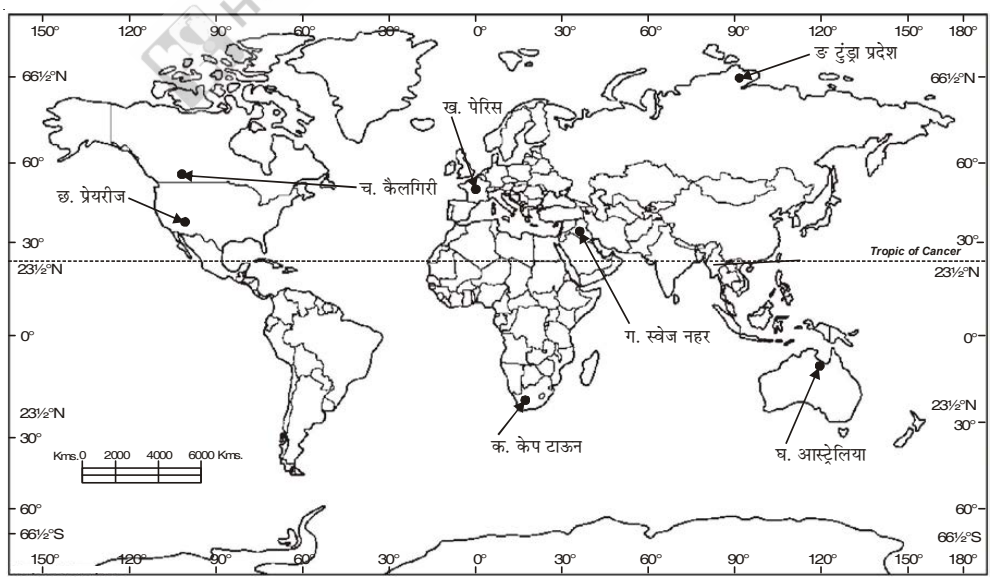

© HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

30. 30.1 असम
30.2 जामनगर
30.3 कोरबा (छत्तीसगढ़)
30.4 चैन्नई
30.5 हरियाणा
30.6 इंदिरा गाँधी
30.7 बेलारी जिला, चिकमंगलुक (कर्नाटक)

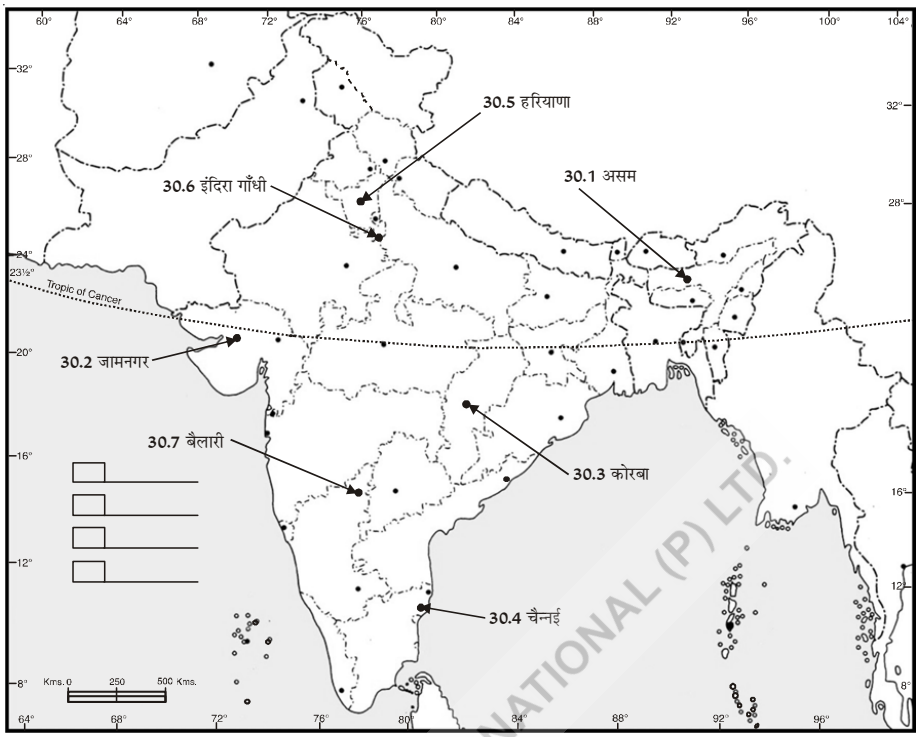

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–9

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*b*) वाटरशेड विकास।

2. (*a*) राजस्थान-महाराष्ट्र।

3. (*d*) 92%.

4. (*b*) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

5. (*a*) आर्द्रभूमि कृषि में, वर्षा 50 सेमी से कम है।

6. (*a*) दालें।

7. (*b*) माधोपुर।

8. (*b*) चूना पत्थर।

9. (*b*) राष्ट्रीय जलमार्ग 4 आंध्र प्रदेश-पुदुचेरी।

(A) (B) (C) (D).

10. (*b*) I II III IV.

11. (*a*) दिल्ली-अमृतसर।

12. (*c*) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

13. (*a*) त्रिपोली।

14. (*c*) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

15. (*b*) स्वास्थ्य देखभाल और क्षेत्रीय सुरक्षा।

16. (*b*) सामाजिक क्षेत्र में उच्च निवेश।

17. (*c*) 53.

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 नहर पंजाब में हरिके बैराज से निकलती है और पाकिस्तान सीमा के समानांतर थार रेगिस्तान में औसत 40 किमी की दूरी पर चलती है।

18.2 कंवर सैण ने 1948 में नहर परियोजना की कल्पना की थी और इसे 31 मार्च, 1958 को लॉन्च किया गया था।

18.3 पहला चरण गंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर ज़िलों के उत्तरी भाग में है।

19. 19.1 स्वेज नहर

19.2 लिवरपुल तथा कोलंबों, पोर्ट सईद तथा पोर्ट स्वेज

19.3 प्रशांत महासागर तथा एटलांटिक महासागर।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20. (क) **मानव भूगोल का दायरा**—मानव प्राणी प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करते हैं और भौतिक वातावरण मानवित हो जाता है और मानव उद्यम के निशान धारण करने लगता है। मानव गतिविधियाँ सांस्कृतिक परिदृश्य बनाती हैं। मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं: ऊँचाई पर स्वास्थ्य रिसॉर्ट, विशाल शहरी फैलाव, मैदानों और लुढ़कती पहाड़ियों में खेत, बाग और चरागाह, तटों पर बंदरगाह, महासागरीय सतह पर महासागरीय मार्ग और अंतरिक्ष में उपग्रह।

समय के साथ, मानव अपने वातावरण और प्रकृति की शक्तियों के साथ अनुकूलित और समायोजित होते हैं। यह उन्हें सांस्कृतिक परिदृश्य बनाने में मदद करता है।

जिसमें मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं। यह सामाजिक और सांस्कृतिक विकास मानवों को बेहतर और अधिक कुशल तकनीक विकसित करने में समर्थन करता है।

सबसे कठिन जलवायु परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में स्थायी मानव बस्तियाँ। इसमें तकनीक का विकास शामिल है जिसने मानवों को कठोर मौसम की परिस्थितियों में भी जीवित रहने में सक्षम बनाया, जैसे कि तीव्र हवाओं और भारी बर्फबारी वाले स्थानों में आरामदायक तापमान पर कमरे का कृत्रिम ताप। मानव दूरदराज के क्षेत्रों से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों के साथ नेटवर्क भी बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ों पर सड़कों और रेलवे ट्रैक बिछाए जाते हैं या समुद्र के तल से संसाधन प्राप्त किए जाते हैं।

अथवा

(ख) मानव भूगोल का उद्देश्य पृथ्वी पर विभिन्न प्रदेशों में जनसंख्या और वातावरण के संसाधनों का अध्ययन करना है ताकि इन संसाधनों का प्रयोग मानव प्रगति और विकास के लिए किया जा सके। वातावरण का मानवीय क्रियाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा मानव द्वारा इनमें क्या परिवर्तन किए गए हैं। इस प्रकार मानव भूगोल का उद्देश्य मानव, वातावरण तथा मानवीय क्रियाओं के संबंध का अध्ययन करना है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

21. तृतीयक क्रियाकलापों में उत्पादन और विनिमय दोनों सम्मिलित होते हैं। (1) **उत्पादन** में सेवाओं की उपलब्धता शामिल होती है जिनका उपभोग किया जाता है। उत्पादन को परोक्ष रूप से पारिश्रमिक और वेतन के रूप में मापा जाता है। (2) **विनिमय** के अंतर्गत व्यापार, परिवहन और संचार सुविधाएँ सम्मिलित होती हैं जिनका उपयोग दूरी को निष्प्रभाव करने के लिए किया जाता है। इसलिए तृतीयक क्रियाकलापों में मूर्त वस्तुओं के उत्पादन के बजाय सेवाओं का व्यावसायिक उत्पादन सम्मिलित होता है। वे भौतिक कच्चे माल के प्रक्रमण में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं होतीं। **उदाहरण**—एक नलसाज, बिजली मिस्त्री, तकनीशियन, धोबी, नाई, दुकानदार, चालक, कोषपाल, अध्यापक, डॉक्टर, वकील और प्रकाशक इत्यादि का काम इनका सामान्य उदाहरण हैं। द्वितीयक और तृतीयक क्रियाकलापों में मुख्य अंतर यह है कि सेवाओं द्वारा उपलब्ध विशेषज्ञता उत्पादन तकनीकों, मशीनरी और फैक्ट्री प्रक्रियाओं की अपेक्षा कर्मियों की विशिष्टीकृत कुशलताओं, अनुभव और ज्ञान पर अत्यधिक निर्भर करती है।

22. ग्रामीण और शहरी बस्तियों के बीच मूलभूत अंतर इस प्रकार है—

ग्रामीण बस्तियाँ अपनी जीवन सहायता या मौलिक आर्थिक आवश्यकताओं को भूमि आधारित प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों से प्राप्त करती हैं, जबकि शहरी बस्तियाँ कच्चे माल की प्रसंस्करण और तैयार सामान के निर्माण पर निर्भर करती हैं, एक ओर और विभिन्न सेवाओं पर दूसरी ओर।

23. किशोरों (10–19 वर्ष) का हिस्सा जनसंख्या का लगभग 20.9 प्रतिशत है। किशोर जनसंख्या को उच्च संभावनाओं वाली युवा जनसंख्या के रूप में माना जाता है लेकिन यदि सही तरीके से मार्गदर्शन नहीं किया गया तो यह काफी संवेदनशील होती है।

(*i*) किशोरों से संबंधित समाज के लिए कई चुनौतियां हैं जैसे कम उम्र में विवाह, अशिक्षा (विशेष रूप से महिलाओं में), स्कूल छोड़ना, पोषक तत्वों का कम सेवन, किशोर माताओं की उच्च मृत्यु दर, एच०आई०वी०/एड्स संक्रमण की उच्च दरें, शारीरिक या मानसिक मंदता, नशीली दवाओं का दुरुपयोग, शराब पीना, युवा अपराध और अपराध करना।

(*ii*) भारत सरकार ने किशोरों को उचित शिक्षा प्रदान करने के लिए कुछ नीतियां अपनाई हैं ताकि उनकी प्रतिभाओं को बेहतर तरीके से चैनलाइज किया जा सके और सही तरीके से उपयोग किया जा सके।

(*iii*) राष्ट्रीय युवा नीति हमारे बड़े युवा जनसंख्या के समग्र विकास पर ध्यान देती है। यह युवाओं और किशोरों के समग्र सुधार पर जोर देती है ताकि वे देश के निर्माणात्मक विकास के प्रति जिम्मेदारी निभा सकें।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. भारतीय जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक— प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को उस क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व कहा जाता है।

कुछ भौतिक या भौगोलिक कारक हैं जो जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करते हैं।

1. जल की उपलब्धता—लोग उन क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं जहां ताजे पानी की आसानी से उपलब्धता होती है। पानी घरेलू, कृषि और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए आवश्यक है। इसलिए, नदी की घाटियाँ विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। उदाहरण के लिए, भारत में इंडो-गंगा मैदान, चीन में हुआंग हो और यांग्त्ज़े बेसिन और मिस्र में नील घाटी बहुत घनी आबादी वाले हैं।

2. भूआकृतियाँ—मैदानी क्षेत्र कृषि, सिंचाई, परिवहन और व्यापार के लिए बेहतर सुविधाएँ प्रदान करते हैं। लोग समतल मैदानी और हल्की ढलानों पर रहना पसंद करते हैं क्योंकि ये भवनों का निर्माण, सड़कें और रेलवे लाइनें बिछाने, नहरें बनाने और उद्योग स्थापित करने के लिए उपयुक्त हैं। गंगा के मैदान और हुआंग हो का बेसिन विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से हैं। पर्वतीय और पठारी क्षेत्रों जैसे हिमालय और ड्रेकेंसबर्ग पठार में rugged भूआकृति वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम है।

(*i*) जलवायु—सुखद जलवायु और कम मौसमी भिन्नता वाले क्षेत्र अधिक लोगों को आकर्षित करते हैं। गर्म या ठंडे रेगिस्तानों, भारी वर्षा वाले क्षेत्रों या कम वर्षा वाले क्षेत्रों की चरम जलवायु लोगों के रहने के लिए असुविधाजनक होती है। इसलिए, इन क्षेत्रों की जनसंख्या कम होती है। इसलिए, अफ्रीका के गर्म भूमध्य रेखीय भाग और रूस, कनाडा और अंटार्कटिका के ठंडे ध्रुवीय क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम है।

(*ii*) मिट्टी—उपजाऊ मिट्टी कृषि और संबंधित गतिविधियों की सफलता दर सुनिश्चित करती है। इसलिए, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टियों वाले क्षेत्र कई अधिक लोगों का समर्थन करते हैं; ये क्षेत्र गहन कृषि का समर्थन कर सकते हैं।

भारतीय जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक—

1. जनसंख्या का घनत्व मानव और भूमि के संबंध का एक माप है। इसे प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्त किया जाता है। यह भूमि के संबंध में जनसंख्या के स्थापिक वितरण को बेहतर समझने में मदद करता है।

2. भौतिक कारक जैसे जलवायु भू-भाग और जल की उपलब्धता जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र, डेल्टास और तटीय मैदानी क्षेत्रों में देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक जनसंख्या का अनुपात है।

3. आर्थिक कारक जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और परिवहन नेटवर्क का विकास दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बैंगलोर, पुणे आदि के शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के उच्च संकेद्रण का कारण बनते हैं।

25. (क) **घुमंतू पशुपालन**

विशेषताएँ—

(1) घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(3) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(4) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(5) हिमालयी क्षेत्र में, इस प्रकार का पशुपालन गुज्जर, बकरवाल, गड्डी और भोटिया द्वारा अभ्यास किया जाता है।

वाणिज्यिक पशुपालन

(1) इसे स्थायी रैंचों पर अभ्यास किया जाता है।

(2) यह गतिविधि मुख्य रूप से पश्चिमी संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है।

(3) यहाँ बड़े रैंचों को कई हिस्सों में विभाजित किया जाता है। जब एक हिस्से का चारा खा लिया जाता है, तो जानवरों को दूसरे हिस्से में ले जाया जाता है।

(4) इस प्रकार के पशुपालन में जैसे मांस, ऊन, चमड़ा और खाल को वैज्ञानिक रूप से संसाधित और पैक किया जाता है और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है।

(5) इसे ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अर्जेंटीना में अभ्यास किया जाता है।

अथवा

(ख) प्लांटेशन कृषि की निम्नलिखित पाँच विशेषताएँ हैं—

(1) यह बड़े एस्टेट या प्लांटेशन पर की जाती है।

(2) इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित उपनिवेशों में यूरोपीयों द्वारा पेश किया गया था। महत्वपूर्ण प्लांटेशन फसलें चाय, कॉफी, कोको, रबर, कपास, तेल पाम, गन्ना, केला और अनानास हैं।

(3) इसमें एकल फसल की विशेषता होती है, जिसे वैज्ञानिक खेती के तरीकों की मदद से किया जाता है।

(4) इसमें प्रबंधकीय और तकनीकी समर्थन के साथ बड़े निवेश की आवश्यकता होती है।

(5) इसे सस्ते श्रम और एक अच्छे परिवहन नेटवर्क की आवश्यकता होती है जो एस्टेट को कारखानों और उत्पादों के निर्यात के लिए बाज़ारों से जोड़ता है।

26. (क) भारत में ग्रामीण बस्तियों को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(*i*) क्लस्टर्ड (*ii*) सेमी-क्लस्टर्ड

(*iii*) हैमलेटेड (*iv*) बिखरे हुए।

नीचे चारों प्रकारों पर चर्चा की गई है :

1. क्लस्टर्ड बस्तियाँ— ये घनीभूत घरों के समूह होते हैं। सामान्य आवासीय क्षेत्र कृषि क्षेत्र से अलग होते हैं। ये बस्तियाँ आयताकार, रेडियल और रेखीय आकार में होती हैं।

2. सेमी-क्लस्टर्ड बस्तियाँ— ये सीमित क्षेत्रों में पाई जाती हैं। ये एक बड़े घनीभूत गाँव के विखंडन के परिणामस्वरूप होती हैं। सामान्यत:, भूमि मालिक गाँव के केंद्रीय भाग पर कब्ज़ा करते हैं और निम्न वर्ग के लोग गाँव के बाहरी किनारों पर रहते हैं।

3. हैमलेटेड बस्तियाँ— जब एक गाँव सामाजिक और जातीय कारकों पर विखंडित होता है, तो बस्ती को कई इकाइयों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें पन्ना, पारा, पल्लि, नागला और ढाणी कहा जाता है।

4. बिखरी हुई बस्तियाँ— अलग-थलग बस्तियों को बिखरी हुई बस्तियाँ कहा जाता है। ये जंगलों में पहाड़ी ढलानों और बिखरे हुए खेतों में पाई जाती हैं।

ग्रामीण बस्तियों के पैटर्न को प्रभावित करने वाले कारक

(*i*) स्थलाकृति की प्रकृति, (*ii*) ऊँचाई, (*iii*) जलवायु और (*iv*) जल की उपलब्धता

अथवा

(ख) **नगर की परिभाषा**

एक नगर को विभिन्न देशों में विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। भारत में, भारत की जनगणना 2001 दो प्रकार के नगरों की पहचान करती हैं—वैधानिक और जनगणना।

वैधानिक नगर— सभी स्थान जो नगर निगम या कॉर्पोरेशन या छावनी बोर्ड या एक अधिसूचित नगर क्षेत्र समिति के पास हैं।

जनगणना नगर— सभी अन्य स्थान जो निम्नलिखित मानदंडों को पूरा करते हैं—

(*i*) न्यूनतम जनसंख्या 5,000 व्यक्ति;

(*ii*) कम-से-कम 75% पुरुष कार्यशील जनसंख्या गैर-कृषि गतिविधियों में संलग्न; और

(*iii*) प्रति वर्ग किलोमीटर कम-से-कम 400 व्यक्तियों की जनसंख्या घनत्व।

भारत में नगरों का विकास

भारत में प्रागैतिहासिक काल से नगर फल-फूल रहे हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के समय, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे नगर अस्तित्व में थे। शहरीकरण का दूसरा चरण लगभग 600 ईसा पूर्व शुरू हुआ। यह 18वीं सदी में भारत में यूरोपियों के आगमन तक समय-समय पर उतार-चढ़ाव के साथ जारी रहा। शहरी इतिहासकार भारत के नगरों को वर्गीकृत करते हैं—

(*i*) प्राचीन नगर, (*ii*) मध्यकालीन नगर और (*iii*) आधुनिक नगर।

1. प्राचीन नगर— कम-से-कम 45 नगरों का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है और ये कम-से-कम 2000 वर्षों से अस्तित्व में हैं। इनमें से अधिकांश धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए। वाराणसी इनमें से एक महत्वपूर्ण नगर है। अयोध्या, प्रयागराज (इलाहाबाद), पाटलिपुत्र (पटना), मथुरा और मदुरै कुछ अन्य प्राचीन नगर हैं।

2. मध्यकालीन नगर— लगभग 100 मौजूदा नगरों की जड़ें मध्यकालीन काल में हैं। इनमें से अधिकांश प्रमुखता के मुख्यालय के रूप में विकसित हुए। इनमें से अधिकांश किले के नगर थे और पूर्व में अस्तित्व में रहे नगरों के खंडहरों पर बने। इनमें से महत्वपूर्ण हैं दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर, लखनऊ, आगरा और नागपुर।

3. आधुनिक नगर— ब्रिटिश और अन्य यूरोपियों ने शहरी दृश्य को संशोधित किया। एक बाहरी बल के रूप में, जिन्होंने तटीय स्थानों पर अपने पांव जमाए, उन्होंने पहले कुछ व्यापारिक बंदरगाह जैसे सूरत, दमन, गोवा, पुडुचेरी आदि का विकास किया। ब्रिटिशों ने बाद में तीन मुख्य नोड्स-मुंबई (बंबई), चेन्नई (मद्रास) और कोलकाता (कलकत्ता) से अपने नियंत्रण को मज़बूत किया और इन्हें ब्रिटिश शैली में बनाया। उन्होंने तेज़ी से अपने प्रभुत्व का विस्तार किया, या तो सीधे या रियासतों पर सुपर नियंत्रण के माध्यम से, उन्होंने अपने प्रशासनिक केंद्र, पहाड़ी नगरों को ग्रीष्मकालीन रिसॉर्ट के रूप में स्थापित किया, और इनमें नए

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

नागरिक, प्रशासनिक और सैन्य क्षेत्रों को जोड़ा। आधुनिक उद्योगों पर आधारित नगर भी 1850 के बाद विकसित हुए। जमशेदपुर को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है।

स्वतंत्रता के बाद, एक बड़ी संख्या में नगर प्रशासनिक मुख्यालय (चंडीगढ़, भुवनेश्वर, गांधीनगर, दिसपुर, आदि) और औद्योगिक केंद्र (दुर्गापुर, भिलाई, सिंदरी, बरौनी, आदि) के रूप में उभरे। कुछ पुराने नगर भी महानगरों जैसे गाज़ियाबाद, रोहतक, गुरुग्राम आदि के चारों ओर उपग्रह नगरों के रूप में विकसित हुए। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती निवेश के साथ, देश भर में बड़ी संख्या में मध्यम और छोटे नगर विकसित हुए हैं।

27. (क) प्लास्टिक एक गैर-बायोडिग्रेडेबल पदार्थ है और इसका उपयोग और उत्पादन न्यूनतम होना चाहिए। आर्कटिक से लेकर अंटार्कटिका तक, प्लास्टिक का मलबा हर जगह पर पाया जाता है। यह हमारे शहरों में गलियों तथा नालियों को बंद कर देता है। यह कैंप ग्राउंड और राष्ट्रीय उद्यानों को फैलाता है और यहाँ तक कि माउंट एवरेस्ट पर भी जमा हो रहा है। हमारे कचरे को सीधे निकटतम नदी या झील में डंप करने के लिए हमारे शौक के लिए, दुनिया के महासागरों में प्लास्टिक तेजी से बढ़ रही है। जब प्लास्टिक टूट जाता है तो इसका सीधा-सा मतलब है कि प्लास्टिक का एक बड़ा टुकड़ा प्लास्टिक के छोटे टुकड़ों के एक समूह में बदल जाता है। प्लास्टिक के इन छोटे-छोटे टुकड़ों को छोटे जानवर खा जाते हैं, लेकिन फिर भी अपचनीय होते हैं। यह खाद्य शृंखला में प्लवक जैसी छोटी प्रजातियों से लेकर ह्वेल तक सभी जीवों को प्रभावित करता है। जब प्लास्टिक को निगला जाता है तो विषाक्त पदार्थ खाद्य शृंखला में अपना काम करते हैं। यहाँ तक कि लोगों द्वारा खाए जाने वाली मछलियों में भी मौजूद हो सकते हैं। सेल फोन से लेकर साइकिल हेलमेट से लेकर बैग तक, प्लास्टिक ने समाज को ऐसे तरीके से ढाला है जिससे जीवन आसान और सुरक्षित हो गया है।

(1) प्लास्टिक में मिलाए गए रसायन मानव शरीर द्वारा अवशोषित कर लिए जाते हैं। इनमें से कुछ यौगिकों को हार्मोन को बदलने या अन्य संभावित मानव स्वास्थ्य प्रभावों के लिए पाया गया है।

(2) प्लास्टिक का मलबा, रसायनों से युक्त और अक्सर समुद्री जानवरों द्वारा निगला जाने वाला, वन्य जीवों को घायल या जहर दे सकता है।

(3) तैरता प्लास्टिक कचरा, जो पानी में हजारों वर्षों तक जीवित रह सकता है। आक्रमक प्रजातियों के लिए मिनी परिवहन उपकरणों के रूप में कार्य करता है और आवासों को बाधित करता है।

(4) लैंडफिल में गहरे दबे प्लास्टिक से हानिकारक रसायन निकल सकते हैं जो भूजल में फैल जाते हैं।

(5) विश्व के तेल उत्पादन का लगभग 4 प्रतिशत प्लास्टिक बनाने के लिए फीडस्टॉक के रूप में उपयोग किया जाता है और इस प्रक्रिया में उतनी ही मात्रा में ऊर्जा की खपत होती है।

अथवा

(ख) शहरी क्षेत्रों की भीड़-भाड़, घनी और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे की समस्या के कारण विशाल शहरी अपशिष्ट का संचय होता है। शहरी अपशिष्ट के दो स्रोत होते हैं। घरेलू या घरेलू स्रोत और औद्योगिक या व्यावसायिक स्रोत। शहरी अपशिष्ट निपटान का गलत प्रबंधन बड़े शहरों में एक गंभीर समस्या है।

महानगरों में प्रतिदिन टन अपशिष्ट निकलता है और इसे जलाया जाता है। अपशिष्ट से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित करता है। मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए सीवेज या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्त्रोतों की अपर्याप्तता जल प्रदूषण में योगदान करती है। औद्योगिक इकाइयों का शहरी केंद्रों के आसपास केंद्रित होना पर्यावरणीय समस्याओं की एक शृंखला को जन्म देता है। नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट का डालना जल प्रदूषण का प्रमुख कारण है। ठोस अपशिष्ट उत्पादन शहरों में निरंतर बढ़ता जा रहा है, दोनों निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के हिसाब से। ठोस अपशिष्ट का अनुचित निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं। थर्मल संयंत्र हवा में बहुत सारा धुआँ और राख छोड़ते हैं। उदाहरण के लिए 500 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाला एक संयंत्र 2000 टन राख छोड़ता है जिसे प्रबंधित करना मुश्किल है।

28. (क) **नगरीय कूड़ा-कर्कट—**नगरों में जनसंख्या की अधिकता के कारण विकसित होने वाली दूसरी बड़ी समस्या वहाँ एकत्रित होने वाला कूड़ा-कर्कट तथा घरेलू मल (domestic sewage) हैं। इन पदार्थों से प्राय: भूमि तथा जलीय प्रदूषण विकसित हो जाते हैं।

भूमि प्रदूषण का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक घरेलू मल तथा औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ हैं। नगरों द्वारा ठोस कूड़ा-कर्कट, मानवीय मल, पशुशालाओं से प्राप्त गंदगी, कारखानों तथा खदानों से प्राप्त बेकार पदार्थों के ढेर जमा हो जाने से भूमि अन्य कार्यों, विशेषकर कृषि के उपयुक्त नहीं रहती। इन पदार्थों से प्राप्त अनेक रोगजनक वनस्पति तथा खाद्य पदार्थों द्वारा मानव शरीर में प्रवेश कर जाते हैं जिनसे कई बीमारियाँ पनपने लगती हैं।

नदियों के जल को सबसे अधिक प्रदूषित नगरों के गंदे नालों द्वारा फेंके गये घरेलू मल करते हैं। नगरों के गंदे नालों ने ही गंगा और यमुना के जल को प्रदूषित कर दिया है। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि इन नदियों के तट पर बसे नगरों में इन्हीं नदियों का जल पीने के काम में लाया जाता है। प्रदूषित जल नदियों में रहने वाले जीवों को भी प्रभावित करता है। प्रदूषित जल से पीलिया, पेचिश और टाइफाइड जैसी बीमारियाँ फैलती हैं जो मानव को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

अथवा

(ख) **1. कच्चे माल के आधार पर—**इस आधार पर, उद्योगों को कृषि आधारित, वन आधारित, पशु-आधारित, रासायनिक-आधारित और खनिज-आधारित में वर्गीकृत किया जाता है।

2. आकार के आधार पर—पूंजी निवेश, कार्यरत श्रमिकों की संख्या और उत्पादन की मात्रा उद्योग के आकार को निर्धारित करते हैं। इस आधार पर उद्योगों को घरेलू/कुटीर, छोटे पैमाने और बड़े पैमाने पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

3. उत्पादन के आधार पर—इस आधार पर उद्योगों को मूलभूत और उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योगों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

4. स्वामित्व के आधार पर—स्वामित्व के आधार पर, उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र, संयुक्त क्षेत्र और सहकारी उद्योगों में वर्गीकृत किया जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. केप टाऊन

ख. पेरिस

ग. स्वेज नहर

घ. आस्ट्रेलिया

ङ टुंड्रा प्रदेश

च. कैलगिरी

छ. प्रेयरीज

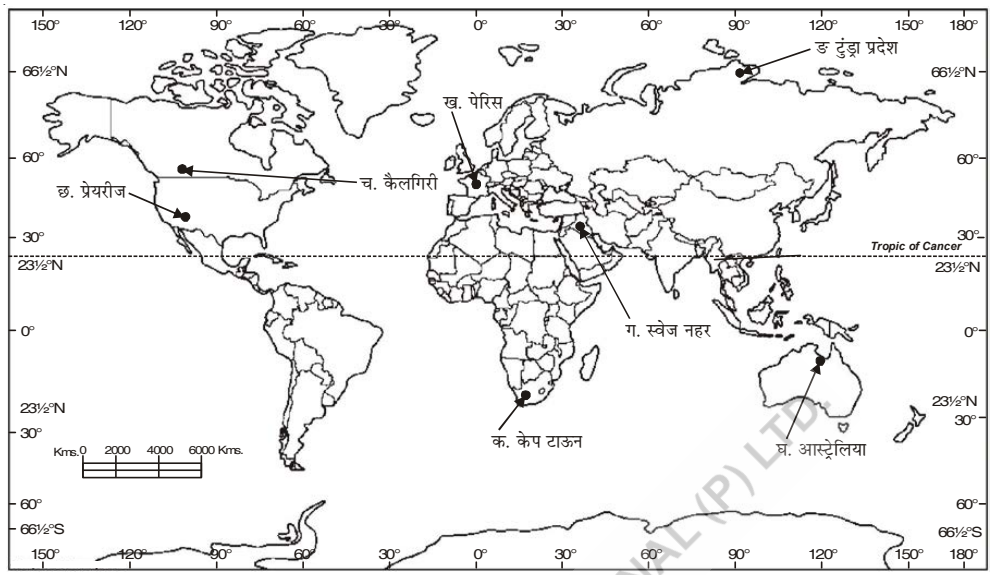

30. 30.1 पश्चिम बंगाल

30.2 बेल्लारी ज़िला तथा चिकमगलुरु ज़िला की बाबा बूदन की पहाड़ियाँ

30.3 खेतड़ी

30.4 सिलचर (असम)

30.5 अरुणाचल प्रदेश

30.6 कोच्चि

30.7 बैलाडीला।

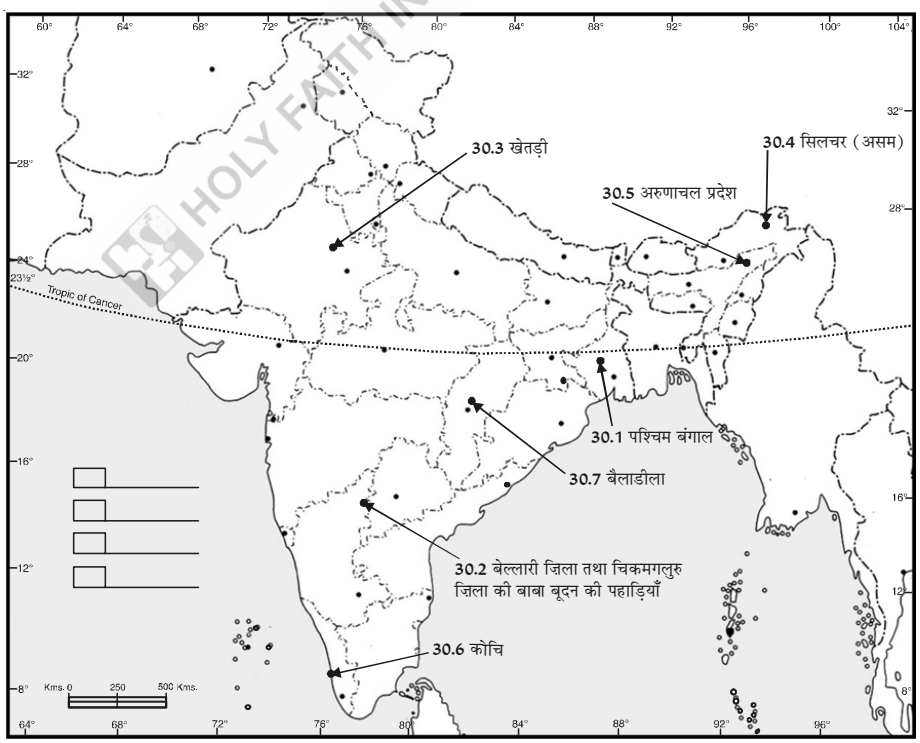

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–10

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*a*) हरा पट्टी।

2. (*d*) राजस्थान।

3. (*c*) 80%.

4. (*c*) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

5. (*a*) चावल को एशिया का उपहार भी कहा जाता है।

6. (*b*) गर्मी।

7. (*b*) मिका।

8. (*a*) झरिया।

9. (*b*) राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 2 सदिया–धुबरी।

(A) (B) (C) (D).

10. (*b*) II III IV I.

11. (*b*) सड़क।

12. (*c*) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

13. (*a*) जिनेवा।

14. (*a*) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

15. (*d*) भोजन तक पहुंच।

16. (*c*) कम वजन वाले व्यक्ति।

17. (*c*) 1991.

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 भरमौर के जनजातीय क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के चंबा ज़िले के भरमौर और होली तहसीलें शामिल हैं।

18.2 इस क्षेत्र में 'गद्दी' एक जनजातीय समुदाय निवास करता है जिसने हिमालयी क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाए रखी है।

18.3 2011 में।

19. 19.1 स्वेज नहर

19.2 लिवरपुल तथा कोलंबों, पोर्ट सईद तथा पोर्ट स्वेज

19.3 प्रशांत महासागर तथा एटलांटिक महासागर।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20. (क) ग्रिफ़िथ टेलर ने नियो–निर्धारणवाद या रोकने और आगे बढ़ने वाले निर्धारणवाद की अवधारणा को गढ़ा। इसे पर्यावरणीय निर्धारणवाद और संभाव्यता के दो विचारों के बीच एक मध्य मार्ग के रूप में देखा जा सकता है।

नियो–निर्धारणवाद संतुलन लाने का प्रयास करता है क्योंकि इसका अर्थ है कि न तो पूर्ण आवश्यकता की स्थिति है (पर्यावरणीय निर्धारणवाद) और न ही पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति है (संभाव्यता)। इसका मतलब है कि मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं यदि वे इसके आदेशों का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, मानव ने ठंडे और गर्म क्षेत्रों में रहने के लिए ठंड और गर्मी प्रतिरोधी घर बनाए। लेकिन यह नहीं भुलाया जाना चाहिए कि हम प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण या पर्यावरण में हस्तक्षेप के कारण प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर रहे हैं। हम ग्रीनहाउस प्रभाव और भूमि अपक्षय जैसी पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

अथवा

(ख) संभाव्यता का अर्थ है मानव की प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करने की क्षमता और इसके परिणामस्वरूप भौतिक वातावरण मानवकृत हो जाता है और मानव उद्यम के निशान धारण करना शुरू कर देता है। संभाव्यता मानव गतिविधियों के कारण बनाए गए निशानों का निर्माण है। मानव गतिविधियाँ सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण करती हैं। मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं। पहाड़ियों पर स्वास्थ्य रिसॉर्ट, विशाल शहरी विस्तार, मैदानों और ढलान वाली पहाड़ियों में खेत, बाग और चरागाह, तटों पर बंदरगाह, महासागरीय सतह पर महासागरीय मार्ग और अंतरिक्ष में उपग्रह।

कुछ सीमाएं एक प्रदाता के रूप में हैं लेकिन मानव सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों को प्रकृति से स्वतंत्र रूप से निर्धारित करते हैं। निष्क्रिय होने के बजाय, मानव को संभाव्यता द्वारा एक सक्रिय शक्ति के रूप में देखा जाता है। उन्होंने समय के साथ अधिक कुशल प्रौद्योगिकियाँ विकसित की।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में तापमान नियंत्रण वाले कई स्वास्थ्य रिसॉर्ट, मैदानों और ढलान वाली पहाड़ियों में विकसित विस्तृत खेत, चरागाह और बाग; लंबी दूरी पर विकसित रेलवे मार्ग और बंदरगाह जो विस्तृत महासागरीय मार्ग खोलते हैं और अंतरिक्ष में उपग्रह कुछ उदाहरण हैं कि मानव भूमि, हवा और पानी पर नियंत्रण रखते हैं।

21. उपग्रह मानव जीवन को कई तरीकों से प्रभावित करते हैं। हर बार जब हम किसी मित्र को कॉल करने, एसएमएस भेजने या केबल टेलीविज़न पर एक लोकप्रिय कार्यक्रम देखने के लिए सेल फोन का उपयोग करते हैं, तो हम उपग्रह संचार का उपयोग कर रहे हैं।

इनसे संचार की इकाई लागत और समय दूरी के संदर्भ में अपरिवर्तनीय हो गए हैं।

आजकल, टेलीविज़न के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान जीवन और संपत्ति के नुकसान को बचाने में एक वरदान है। जबकि हर साल अरबों लोग इंटरनेट का उपयोग करते हैं, साइबरस्पेस ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई लर्निंग और ई-गवर्नेंस के माध्यम से मानव के समकालीन आर्थिक और सामाजिक स्थान का विस्तार करेगा।

इंटरनेट, फैक्स, टेलीविज़न और रेडियो के साथ मिलकर अधिक-से अधिक लोगों के लिए स्थान और समय को काटते हुए सुलभ होगा। यही आधुनिक संचार प्रणाली हैं, जो परिवहन से अधिक, वैश्विक गांव के सिद्धांत को वास्तविकता में बदल दिया है।

22. भारत में स्मार्ट सिटी मिशन की शुरुआत भारतीय सरकार द्वारा 2015 में की गई। स्मार्ट सिटी मिशन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

(1) शहरी बुनियादी ढांचे के सुधार और विकास के लिए इसे शुरू किया गया। इसमें मजबूत परिवहन नेटवर्क, विश्वसनीय जल आपूर्ति, स्वच्छता आदि का विकास शामिल है।

(2) यह मिशन शहरी सेवाओं की दक्षता और स्थिरता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार विकसित करने का प्रयास करता है। इसमें डिजिटल सेवाओं, स्मार्ट सेंसर, आईसीटी आदि को अपनाना शामिल है।

(3) यह मिशन शहरी चुनौतियों जैसे यातायात प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण आदि के लिए स्मार्ट समाधानों के विकास को प्रोत्साहित करता है।

(4) स्मार्ट सिटी मिशन का उद्देश्य भारतीय शहरों में सतत विकास प्रथाओं को बढ़ावा देना भी है।

(5) यह शहरी विकास के लाभों को सुनिश्चित करके समावेशी वृद्धि और सामाजिक समानता को भी तेज करना चाहता है।

23. साइबरस्पेस—इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटरीकृत स्थान की दुनिया को साइबरस्पेस कहा जाता है। यह इंटरनेट द्वारा घेरित है जैसे कि वर्ल्ड वाइड वेब (www) दूसरे शब्दों में, यह इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल दुनिया है जिसका उपयोग जानकारी तक पहुँचने या कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से संचार करने के लिए किया जाता है बिना प्रेषक और प्राप्तकर्ता की भौतिक गति के। इसे इंटरनेट के रूप में भी संदर्भित किया जाता है।

इंटरनेट के लाभ—इंटरनेट के लाभ निम्नलिखित है—

(1) इंटरनेट हर जगह मौजूद है जैसे कार्यालय, नावें, उड़ान भरने वाले विमान आदि। इसलिए, यह दुनिया के किसी भी हिस्से में लोगों के साथ संवाद करने की अनुमति देता है।

(2) इंटरनेट ने ई-मेल, ई-लर्निंग, ई-कॉमर्स और ई-गवर्नेंस के माध्यम से मानव के समकालीन आर्थिक और सामाजिक स्थान का विस्तार किया है। इंटरनेट, फैक्स, टेलीविज़न और रेडियो के साथ मिलकर अधिक-से-अधिक लोगों के लिए स्थान और समय के पार सुलभ हो रहा है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. जनसंख्या वृद्धि—इसका अर्थ है किसी विशेष क्षेत्र में एक निश्चित अवधि के दौरान जनसंख्या के आकार में परिवर्तन।

(1) यह सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। इसे जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि भी कहा जाता है।

(2) इसे जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर के आधार पर गणना की जाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर के निर्धारक—जनसंख्या वृद्धि के तीन मुख्य निर्धारक निम्नलिखित हैं—

1. जन्म दर—विकासशील देशों में जन्म दर उच्च होती है (लगभग 40 प्रति 1000)। ये देश हैं जिनकी जनसंख्या वृद्धि दर विकसित देशों की तुलना में अधिक होती है। दूसरी ओर, विकसित देशों में जन्म दर कम होती है, जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि की दर कम होती है।

2. मृत्यु दर—उच्च मृत्यु दर जनसंख्या को तेज़ी से बढ़ने की अनुमति नहीं देती। जब जन्म दर मृत्यु दर से अधिक होती है, तो जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होती है। दूसरी ओर, जब जन्म और मृत्यु दर दोनों कम होते हैं, तो जनसंख्या वृद्धि दर भी कम होती है।

3. जनसंख्या की गतिशीलता (प्रवासन)—प्रवासन भी वृद्धि दर को प्रभावित करता है। मूल स्थान में जनसंख्या में कमी दिखाई देती है जबकि गंतव्य स्थान में जनसंख्या बढ़ती है।

दुनिया में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक वितरण :

यह विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में कम वृद्धि दर को दर्शाता है। हम आर्थिक विकास और जनसंख्या वृद्धि के बीच नकारात्मक सहसंबंध देखते हैं। हालांकि जनसंख्या परिवर्तन की वार्षिक दर जो 1.4 प्रतिशत है, कम प्रतीत होती है, यह वास्तव में ऐसा नहीं है। इसका कारण है—

1. यदि एक छोटे वार्षिक दर को बहुत बड़ी जनसंख्या पर लागू किया जाए, तो यह जनसंख्या में एक बड़ा परिवर्तन लाएगा।

2. यहां तक कि जब वृद्धि दर लगातार घटती है, कुल जनसंख्या हर वर्ष बढ़ती है। शिशु मृत्यु दर बढ़ सकती है क्योंकि मृत्यु दर प्रसव के दौरान होती है।

25. (क) **मिश्रित कृषि**—यह मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी यूरोप, पूर्वी उत्तरी अमेरिका, कुछ हिस्सों में यूरेशिया और दक्षिणी महाद्वीपों के मौसमी अक्षांशों में प्रचलित है। फसलों की खेती और पशुपालन पर बराबर जोर दिया जाता है। यह पूंजी गहन है। मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल रोटेशन और अंत: फसल रोपण की आवश्यकता है। कृषि मशीनरी और भवन, किसानों के कौशल और विशेषज्ञता तथा रासायनिक उर्वरकों के व्यापक उपयोग के लिए व्यय की आवश्यकता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL PVT. LTD.

अथवा

(ख) प्लांटेशन कृषि की निम्नलिखित पाँच विशेषताएँ हैं—

(1) यह बड़े एस्टेट या प्लांटेशन पर की जाती है।

(2) इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में स्थित उपनिवेशों में यूरोपीयों द्वारा पेश किया गया था। महत्वपूर्ण प्लांटेशन फसलें चाय, कॉफी, कोको, रबर, कपास, तेल पाम, गन्ना, केला और अनानास हैं।

(3) इसमें एकल फसल की विशेषता होती है, जिसे वैज्ञानिक खेती के तरीकों की मदद से किया जाता है।

(4) इसमें प्रबंधकीय और तकनीकी समर्थन के साथ बड़े निवेश की आवश्यकता होती है।

(5) इसे सस्ते श्रम और एक अच्छे परिवहन नेटवर्क की आवश्यकता होती है जो एस्टेट को कारखानों और उत्पादों के निर्यात के लिए बाज़ारों से जोड़ता है।

26. (क)मानव विकास को मापने के तरीके लगातार परिष्कृत किए जा रहे हैं और मानव विकास के विभिन्न तत्त्वों को पकड़ने के नए तरीके खोजे जा रहे हैं। शोधकर्ताओं ने किसी विशेष क्षेत्र में भ्रष्टाचार या राजनीतिक स्वतंत्रता के स्तर के बीच संबंध पाया है। एक राजनीतिक स्वतंत्रता सूचकांक और सबसे भ्रष्ट देशों की सूची पर भी चर्चा हो रही है।

मानव विकास सूचकांक मानव विकास में उपलब्धियों को मापता है। यह मानव विकास के प्रमुख क्षेत्रों में क्या हासिल किया गया है, को दर्शाता है। फिर भी, यह सबसे विश्वसनीय माप नहीं है। इसका कारण यह है कि यह वितरण के बारे में कुछ नहीं कहता। मानव गरीबी सूचकांक मानव विकास सूचकांक से संबंधित है। यह सूचकांक मानव विकास में कमी को मापता है। यह गैर-आय माप है।

40 वर्ष की आयु तक जीवित न रहने की संभावना, वयस्क निरक्षरता दर, उन लोगों की संख्या जिनके पास स्वच्छ पानी तक पहुंच नहीं है, और उन छोटे बच्चों की संख्या जो कम वजन के होते हैं, सभी मानव विकास में कमी को दिखाने के लिए ध्यान में रखे जाते हैं। अकसर मानव गरीबी सूचकांक मानव विकास सूचकांक से अधिक प्रकट होता है। मानव विकास के इन दोनों मापों को एक साथ देखने से किसी देश में मानव विकास की स्थिति का सटीक चित्र मिलता है।

अथवा

(ख) स्वतंत्रता के लंबे वर्षों के बाद, भारत आम जनता के लिए विकास के मुद्दे से जूझ रहा है। 75 वर्षों के दौरान, हम काफी आगे बढ़ चुके हैं लेकिन अभी भी कई मुद्दे हैं जिन्हें हल करने की आवश्यकता है। आर्थिक विकास से लेकर बढ़ते शहरीकरण तक, भारत ने विशाल परिवर्तन देखा है लेकिन क्षेत्रीय विषमताएं और धन और संसाधनों का असमान वितरण अभी भी हमारे समाज को बड़े पैमाने पर परेशान करता है। इसे सरकार की नीतियों और उपायों के संदर्भ में और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

भारत में लगातार सरकारों ने पिछले कुछ दशकों में जन हितैषी और गरीब-हितैषी नीतियों को लागू करने का प्रयास किया है। हालांकि, इसका प्रभाव बहुत व्यापक नहीं रहा है। ऐसे कई उदाहरण हैं जब सबसे गरीब लोगों को व्यापक विकास की ओर केंद्रित सरकारी नीतियों का लाभ नहीं मिल पाया है। यह विशेष रूप से कुछ राज्यों के लिए सच है जहाँ अभी भी अधिकांश जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवित है। इसके अलावा, अनियंत्रित आर्थिक विकास के कारण पर्यायवरण में जो गिरावट आई है, वह भी उल्लेखनीय है। इसलिए, यह आवश्यक है कि विकास तब हो जब मानव कल्याण सर्वोपरि हो।

27. (क) **झुग्गियों और शहरी कचरे की समस्याएँ—**

बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। झुग्गियों और शहरी कचरे के निपटान की समस्या दो मुख्य मुद्दे हैं।

शहरों में स्थान की कमी है। बढ़ती जनसंख्या आवास की समस्याएँ पैदा करती है। इसे हल करने के लिए बहुमंज़िला इमारतें बनाई जा रही हैं।

आमतौर पर, पुश और पुल कारक लोगों को शहरों की ओर प्रवास करने के लिए मजबूर करते हैं। ये लोग शहरों में रोज़गार की तलाश में आते हैं। शहरों में आवास की सुविधा महंगी होती है, जिसके कारण गरीब लोग शहरों के बाहर खाली भूमि पर झोपड़ियाँ बनाते हैं। इस प्रकार झुग्गियाँ विकसित होने लगती हैं। ऐसी झुग्गियों में जनसंख्या घनत्व अधिक होता है और जल निकासी और शहरी कचरे के निपटान की कोई सुविधा नहीं होती है। लोगों का जीवन स्तर बहुत निम्न होता है। प्रशासन ने इन क्षेत्रों को सुविधाएँ प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए हैं, फिर भी ये झुग्गियाँ कई बीमारियों से ग्रस्त हैं।

अथवा

(ख) प्लास्टिक एक गैर-निष्क्रिय पदार्थ है और इसका उपयोग और उत्पादन न्यूनतम होना चाहिए। प्लास्टिक का मलबा बिल्कुल हर जगह पाया जाता है आर्कटिक से अंटार्कटिका तक। यह हमारे शहरों में सड़क की नालियों को बंद करता है: यह कैंपग्राउंड और राष्ट्रीय उद्यानों में बिखरा हुआ है, और यहां तक कि माउंट एवरेस्ट पर भी जमा हो रहा है। लेकिन रन-ऑफ और हमारे नजदीकी नदी या झील में सीधे अपना कचरा डालने की आदत के कारण, प्लास्टिक दुनिया के महासागरों में बढ़ता जा रहा है। जब प्लास्टिक का विघटन होता है, तो इसका मतलब है कि एक बड़े प्लास्टिक के टुकड़े को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है। ये छोटे प्लास्टिक के टुकड़े छोटे जानवरों द्वारा खाए जा सकते हैं, लेकिन ये अभी भी पचने योग्य नहीं होते। यह खाद्य शृंखला में सभी जीवों को प्रभावित करता है, छोटी प्रजातियों जैसे प्लवक से लेकर व्हेल तक। जब प्लास्टिक का सेवन किया जाता है, तो विषाक्त पदार्थ खाद्य शृंखला में ऊपर की ओर बढ़ते हैं और यह उन मछलियों में भी मौजूद हो सकते हैं जो लोग खाते हैं। मोबाइल फोन से लेकर साइकिल के हेलमेट तक और iv बैग तक, प्लास्टिक ने समाज को ऐसे तरीकों से आकार दिया है जो जीवन को आसान और सुरक्षित बनाते हैं। लेकिन इस सिंथेटिक सामग्री ने पर्यावरण पर हानिकारक छाप भी छोड़ी है।

(1) प्लास्टिक में जो रसायन मिलाए जाते हैं, वे मानव शरीर द्वारा अवशोषित होते हैं। इनमें से कुछ यौगिक हार्मोन को बदलने या अन्य संभावित मानव स्वास्थ्य प्रभाव डालने के लिए पाए गए हैं।

(2) प्लास्टिक का मलबा, जो रसायनों से भरा होता है और अक्सर समुद्री जानवरों द्वारा खाया जाता है, वन्यजीवों को घायल या ज़हरीला कर सकता है।

(3) तैरता हुआ प्लास्टिक का कचरा, जो पानी में हज़ारों वर्षों तक जीवित रह सकता है, आक्रामक प्रजातियों के लिए छोटे परिवहन उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिससे आवास बाधित होते हैं।

(4) लैंडफिल में गहराई से दफनाया गया प्लास्टिक हानिकारक रसायनों को रिसाव कर सकता है जो भूजल में फैल जाते हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

(5) विश्व के तेल उत्पादन का लगभग प्रतिशत प्लास्टिक बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है, और इसी मात्रा का उपभोग प्रक्रिया में ऊर्जा के रूप में किया जाता है।

28. (क) **कारण**—निम्नलिखित कारक जल प्रदूषण को प्रभावित करते हैं :

(*i*) घरेलू सीवेज

(*ii*) औद्योगिक अपशिष्ट

(*iii*) कृषि गतिविधियाँ

(*iv*) थर्मल प्रदूषण

(*v*) समुद्री प्रदूषण।

जल प्रदूषण के परिणाम—

(*i*) कई बीमारियाँ जो सामान्यत: प्रदूषित पानी के कारण होती हैं, जैसे दस्त, ट्रेकोमा, आंतों के कृमि, हेपेटाइटिस आदि।

(*ii*) हाल ही में, विश्व बैंक और विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े बताते हैं कि भारत में लगभग चौथाई संक्रामक बीमारियाँ जल जनित हैं।

(*iii*) जल प्रदूषण मछलियों और अन्य जलीय जीवों की मृत्यु का कारण बन सकता है।

(*iv*) पानी में घुली विषाक्त तत्व मानवों तक पहुँच सकते हैं, जैसे कि मछलियों आदि के माध्यम से जिन्हें हम खाते हैं।

(*v*) यह मिट्टी में रसायनों को भी रिसावित करता है।

(*vi*) संदूषित पानी मानवों और पशुओं के लिए उपभोग के लिए अनुपयुक्त हो जाता है।

(*vii*) जल प्रदूषण जैव विविधता के विनाश का भी कारण बनता है।

अथवा

(ख) **राष्ट्रीय जलनीति की विशेषताएँ**—राष्ट्रीय जलनीति की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

(1) पेयजल सभी मानव जाति तथा प्राणियों को उपलब्ध करवाना।

(2) भौमजल के शोषण को सीमित तथा नियमित करने के लिए उपाय करना।

(3) सिंचाई तथा बहुउद्देशीय परियोजनाओं में पीने का जल घटक में सम्मिलिति करना चाहिए जहाँ पेयजल के स्रोत का कोई भी विकल्प नहीं है।

(4) जल के लिए जागरुकता उत्पन्न करना।

(5) सतही तथा भौमजल की गुणवत्ता की नियमित जाँच होनी चाहिए।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. वैंकूवर
ख. मैक्सिको शहर
ग. स्वेज नहर
घ. ब्राजील
ङ नामीबीया
च. लंदन
छ. ब्राजीलिया

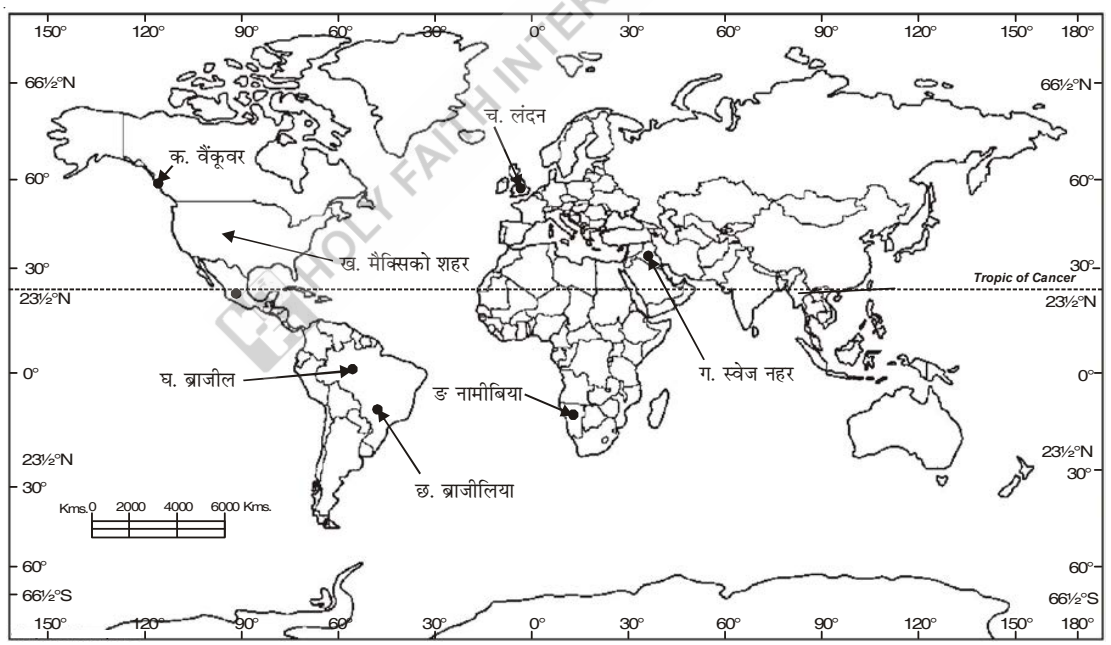

30. 30.1 कर्नाटक
30.2 मथुरा
30.3 नवेली
30.4 विशाखापट्टनम
30.5 हिमाचल प्रदेश
30.6 अमृतसर
30.7 कटनी, जबलपुर तथा बालाघाट।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

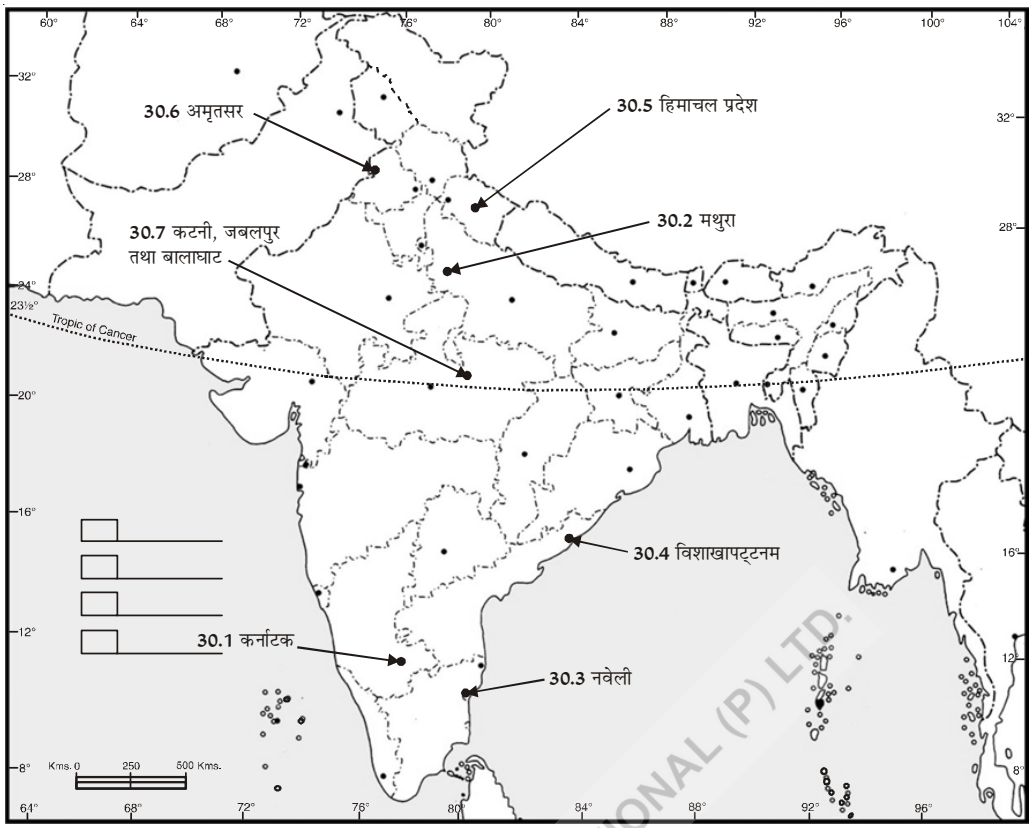

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

Holy Faith New Style Sample Paper–11

(Based on the Latest Design & Syllabus Issued by CBSE)

कक्षा—12वीं

भूगोल

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 70**

सामान्य निर्देश : इसके लिए Holy Faith New Style Sample Paper–1 देखें।

खंड—A

(प्र० सं० 1 से 25 तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं) 17 × 1 = 17

1. (*a*) 2002.

2. (*d*) इनमें से सभी।

3. (*c*) 2015–16.

4. (*a*) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

5. (*c*) चाय की वृद्धि के लिए 150 सेमी वर्षा आवश्यक है।

6. (*a*) कपास।

7. (*c*) तमिलनाडु।

8. (*a*) झरिया।

9. (*c*) एन एच 3 (*iii*) आगरा–नासिक

10. (*b*) (A) I (B) III (C) II (D). IV.

11. (*c*) एयरवेज।

12. (*c*) दोनों (A) और (R) सत्य हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

13. (*a*) पराद्वीप।

14. (*c*) दोनों (A) और (R) सत्य हैं लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

15. (*a*) विकास मात्रात्मक है जबकि विकास गुणात्मक है।

16. (*a*) जब सकारात्मक विकास होता है।

17. (*c*) मूलभूत।

खंड—B

(प्रश्न संख्या 18 से 19 स्रोत आधारित प्रश्न हैं) 2 × 3 = 6

18. 18.1 यूपी के सभी पहाड़ों ज़िलों, असम के मिकिर पहाड़ और उत्तर कछार पहाड़, पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिला और TN के नीलगिरी ज़िले शामिल थे।

18.2 पांचवीं पंचवर्षीय योजना।

18.3 पहाड़ी क्षेत्रों के विकास के लिए विस्तृत योजनाएँ उनके भौगोलिक, पारिस्थितिकी, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई थीं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य बागवानी, कृषि, पशुपालन आदि के विकास के माध्यम से पहाड़ी क्षेत्रों के स्वदेशी संसाधनों का दोहन करना था।

19. 19.1 पारसाइबेरियन रेलमार्ग रूस में स्थित है।

19.2 मॉस्को (A) तथा चिता (B)

19.3 1. इस रेलमार्ग ने एशियाई प्रदेश को पश्चिमी यूरोपीय बाजारों से जोड़ा हैं।

2. यह रेलमार्ग दोहरे पथ से युक्त विद्युतीकृत पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग है।

खंड—C

(प्रश्न संख्या 20 से 23 लघु उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं) 4 × 3 = 12

20 (क) 1. यह प्राकृतिक वातावरण और मानवों के बीच प्रारंभिक इंटरएक्शन के चरणों को संदर्भित करता है जहां मानव प्रकृति के आदेशों के अनुसार अनुकूलित होते हैं।

2. यह बहुत कम तकनीकी और सामाजिक विकास के स्तर को दर्शाता है।

3. प्राकृतिककृत मानव प्रकृति की सुनते हैं, उसके क्रोध से डरते हैं और प्रकृति की पूजा करते हैं।

4. मानवों की प्रकृति पर सीधी निर्भरता।

5. प्राकृतिककृत मानवों के लिए भौतिक वातावरण मां प्रकृति बन जाता है।

प्रकृति का मानवकरण—1. यह प्रकृति की शक्तियों और उन मानवों के बीच के इंटरएक्शन को संदर्भित करता है जो प्रकृति की शक्तियों को समझना शुरू करते हैं।

2. यह कुशल तकनीक और बेहतर सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों के विकास को दर्शाता है।

3. मानव आवश्यकता की स्थिति से स्वतंत्रता की स्थिति में जाते हैं।

4. अधिक अवसर बनाने के लिए पर्यावरण से संसाधन प्राप्त किए जाते हैं।

5. मानव प्रकृति का उपयोग करते हैं ताकि प्रकृति मानवित हो जाए, जो मानव गतिविधियों के निशान दिखाती है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

अथवा

(ख) मानव प्राणी प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का उपयोग करते हैं और भौतिक वातावरण मानवित हो जाता है और मानव उद्यम के निशान धारण करने लगता है। मानव गतिविधियाँ सांस्कृतिक परिदृश्य बनाती हैं। मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं: ऊँचाई पर स्वास्थ्य रिसॉर्ट, विशाल शहरी फैलाव, मैदानों और लुढ़कती पहाड़ियों में खेत, बाग और चरागाह, तटों पर बंदरगाह, महासागरीय सतह पर महासागरीय मार्ग और अंतरिक्ष में उपग्रह।

समय के साथ, मानव अपने वातावरण और प्रकृति की शक्तियों के साथ अनुकूलित और समायोजित होते हैं। यह उन्हें सांस्कृतिक परिदृश्य बनाने में मदद करता है।

जिसमें मानव गतिविधियों के निशान हर जगह बनाए जाते हैं। यह सामाजिक और सांस्कृतिक विकास मानवों को बेहतर और अधिक कुशल तकनीक विकसित करने में समर्थन करता है।

सबसे कठिन जलवायु परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में स्थायी मानव बस्तियाँ। इसमें तकनीक का विकास शामिल है जिसने मानवों को कठोर मौसम की परिस्थितियों में भी जीवित रहने में सक्षम बनाया, जैसे कि तीव्र हवाओं और भारी बर्फबारी वाले स्थानों में आरामदायक तापमान पर कमरे का कृत्रिम ताप। मानव दूरदराज के क्षेत्रों से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों के साथ नेटवर्क भी बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ों पर सड़कों और रेलवे ट्रैक बिछाए जाते हैं या समुद्र के तल से संसाधन प्राप्त किए जाते हैं।

21. (1) डिजिटल विभाजन एक आर्थिक और सामाजिक असमानता है जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित विकास से उभरती है। यह विकसित और विकासशील देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक भिन्नताओं के कारण होता है।

(2) यह तय करने वाला कारक है कि देश कितनी तेज़ी से अपने नागरिकों को ICT तक पहुँच और इसके लाभ प्रदान कर सकते हैं।

(3) यह विभाजन देशों के भीतर भी मौजूद है। बड़े देशों जैसे भारत और रूस में महानगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में डिजिटल दुनिया तक बेहतर पहुँच और कनेक्टिविटी होती है।

22. ग्रामीण और शहरी बस्तियों के बीच मूलभूत अंतर इस प्रकार है—

ग्रामीण बस्तियाँ अपनी जीवन सहायता या मौलिक आर्थिक आवश्यकताओं को भूमि आधारित प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों से प्राप्त करती हैं, जबकि शहरी बस्तियाँ कच्चे माल की प्रसंस्करण और तैयार सामान के निर्माण पर निर्भर करती हैं, एक ओर और विभिन्न सेवाओं पर दूसरी ओर।

23. कृषि आधारित उद्योगों की विशेषताएं :

(*i*) कृषि आधारित कच्चे माल—इसमें खेतों और फार्मों से कच्चे माल को विभिन्न बाज़ारों के लिए तैयार उत्पादों में परिवर्तित करना शामिल है।

(*ii*) प्रमुख उद्योग—प्रमुख कृषि प्रसंस्करण उद्योगों में खाद्य प्रसंस्करण, चीनी, अचार, फलों का रस, पेय, मसाले और तेल शामिल हैं। वस्त्र (कपास, जूट, रेशम) रबर आदि कुछ अन्य कृषि आधारित उद्योग हैं।

(*iii*) स्थान—ये उद्योग आमतौर पर कच्चे माल के स्रोत के निकट पाए जाते हैं, क्योंकि कृषि उत्पादों की नाशवान प्रकृति होती है।

खंड—D

(प्रश्न संख्या 29 से 30 दीर्घ उत्तर प्रकार के प्रश्न हैं)

5 × 5 = 25

24. प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या को उस क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व कहा जाता है।

कुछ भौतिक या भौगोलिक कारक हैं जो जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करते हैं।

1. जल की उपलब्धता—लोग उन क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं जहां ताजे पानी की आसानी से उपलब्धता होती है। पानी घरेलू, कृषि और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए आवश्यक है। इसलिए, नदी की घाटियाँ विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं। उदाहरण के लिए, भारत में इंडो-गंगा मैदान, चीन में हुआंग हो और यांग्त्ज़े बेसिन और मिस्र में नील घाटी बहुत घनी आबादी वाले हैं।

2. भूआकृतियाँ—मैदानी क्षेत्र कृषि, सिंचाई, परिवहन और व्यापार के लिए बेहतर सुविधाएँ प्रदान करते हैं। लोग समतल मैदानी और हल्की ढलानों पर रहना पसंद करते हैं क्योंकि ये भवनों का निर्माण, सड़कें और रेलवे लाइनें बिछाने, नहरें बनाने और उद्योग स्थापित करने के लिए उपयुक्त हैं। गंगा के मैदान और हुआंग हो का बेसिन विश्व के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से हैं। पर्वतीय और पठारी क्षेत्रों जैसे हिमालय और ड्रेकेंसबर्ग पठार में rugged भूआकृति वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम है।

(*i*) **जलवायु**—सुखद जलवायु और कम मौसमी भिन्नता वाले क्षेत्र अधिक लोगों को आकर्षित करते हैं। गर्म या ठंडे रेगिस्तानों, भारी वर्षा वाले क्षेत्रों या कम वर्षा वाले क्षेत्रों की चरम जलवायु लोगों के रहने के लिए असुविधाजनक होती है। इसलिए, इन क्षेत्रों की जनसंख्या कम होती है। इसलिए, अफ्रीका के गर्म भूमध्य रेखीय भाग और रूस, कनाडा और अंटार्कटिका के ठंडे ध्रुवीय क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम है।

(*ii*) **मिट्टी**—उपजाऊ मिट्टी कृषि और संबंधित गतिविधियों की सफलता दर सुनिश्चित करती है। इसलिए, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टियों वाले क्षेत्र कई अधिक लोगों का समर्थन करते हैं; ये क्षेत्र गहन कृषि का समर्थन कर सकते हैं।

25. (क) **घुमंतू पशुपालन**

(1) घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(3) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(4) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

(5) हिमालयी क्षेत्र में, इस प्रकार का पशुपालन गुज्जर, बकरवाल, गड्डी और भोटिया द्वारा अभ्यास किया जाता है।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

वाणिज्यिक पशुपालन

(1) इसे स्थायी रैंचों पर अभ्यास किया जाता है।

(2) यह गतिविधि मुख्य रूप से पश्चिमी संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है।

(3) यहाँ बड़े रैंचों को कई हिस्सों में विभाजित किया जाता है। जब एक हिस्से का चारा खा लिया जाता है, तो जानवरों को दूसरे हिस्से में ले जाया जाता है।

(4) इस प्रकार के पशुपालन में जैसे मांस, ऊन, चमड़ा और खाल को वैज्ञानिक रूप से संसाधित और पैक किया जाता है और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में निर्यात किया जाता है।

(5) इसे ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अर्जेंटीना में अभ्यास किया जाता है।

अथवा

(ख) **घुमंतू पशुपालन**

(1) घुमंतू पशुपालन एक प्राचीन आत्मनिर्भर गतिविधि है जिसमें पशुपालक जानवरों पर निर्भर होते हैं।

(2) पशुपालक चरागाहों की खोज में मौसमी रूप से चलते हैं।

(3) वे अपने पशुधन के साथ स्थान से स्थान पर चलते हैं जो चरागाह और पानी पर निर्भर होता है।

(4) भोजन, आश्रय, वस्त्र, उपकरण और परिवहन के लिए जानवरों पर निर्भरता। उत्पादों का उपयोग वैश्विक बाज़ार के लिए नहीं किया जाता है।

26. (क) एक लंबा और स्वस्थ जीवन जीना, ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होना और एक उचित जीवन जीने के लिए पर्याप्त साधन होना मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं।

अथवा

(ख) **मानव विकास के चार स्तंभ**

जैसे किसी भी भवन को स्तंभों द्वारा समर्थित किया जाता है, मानव विकास का विचार समानता, स्थिरता, उत्पादकता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों द्वारा समर्थित है।

1. समानता का अर्थ है सभी के लिए अवसरों की समान पहुंच बनाना। लोगों के लिए उपलब्ध अवसरों को उनके लिंग, जाति, आय और भारतीय संदर्भ में, जाति के बावजूद समान होना चाहिए। फिर भी, यह अकसर ऐसा नहीं होता और लगभग हर समाज में होता है। उदाहरण के लिए, किसी भी देश में, यह देखना दिलचस्प है कि अधिकांश स्कूल ड्रॉपआउट किस समूह से संबंधित हैं। इससे ऐसे व्यवहार के कारणों को समझने में मदद मिलनी चाहिए। भारत में, बड़ी संख्या में महिलाएं और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लोग स्कूल छोड़ देते हैं। यह दिखाता है कि इन समूहों के विकल्प ज्ञान की पहुंच न होने के कारण सीमित हो जाते हैं।

2. स्थिरता का अर्थ है अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता। स्थायी मानव विकास के लिए, प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलने चाहिए। सभी पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन संसाधनों में से किसी का भी दुरुपयोग भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की कमी का कारण बनेगा। एक अच्छा उदाहरण लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व के बारे में है। यदि कोई समुदाय अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के महत्व पर जोर नहीं देता है, तो तब ये युवा महिलाएं बड़ी होंगी, तो उनके लिए कई अवसर खो जाएंगे। उनके करियर के विकल्प गंभीर रूप से सीमित हो जाएंगे और यह उनके जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करेगा। इसलिए प्रत्येक पीढ़ी को अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए विकल्पों और अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

3. उत्पादकता का अर्थ मानव श्रम उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में उत्पादकता है। ऐसी उत्पादकता को लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके लगातार समृद्ध किया जाना चाहिए। अंततः लोग राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति हैं। इसलिए, उनके ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास, या बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना अंततः बेहतर कार्य दक्षता की ओर ले जाता है।

4. सशक्तिकरण का अर्थ है विकल्प बनाने की शक्ति होना। ऐसी शक्ति स्वतंत्रता और क्षमता को बढ़ाने से आती है। लोगों को सशक्त बनाने के लिए अच्छे शासन और जन केंद्रित नीतियों की आवश्यकता होती है। सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण विशेष महत्व रखता है।

27. (क) **वायु प्रदूषण के प्रभाव—**

1. वायु प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों जैसे अस्थमा, गले में खराश, छींक और एलर्जिक राइनाइटिस का कारण बनता है।
2. यह वैश्विक तापमान में वृद्धि का कारण बनता है जो मौसम के लयबद्ध चक्र में परिवर्तन करता है।
3. आंखों में खुजली, पिम्पल्स आदि जैसी विभिन्न त्वचा बीमारियों के लिए भी ज़िम्मेदार है।

वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं—

1. वनरोपण को बढ़ावा देना।
2. चार या पांच सितारा रेटिंग के साथ इलेक्ट्रिकल उपकरणों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।
3. ऑटोमोबाइल में सीएनजी का उपयोग करना।
4. चिमनी स्थापित करना।

अथवा

(ख) **झुग्गियों और शहरी कचरे की समस्याएँ—**

बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। झुग्गियों और शहरी कचरे के निपटान की समस्या दो मुख्य मुद्दे हैं।

शहरों में स्थान की कमी है। बढ़ती जनसंख्या आवास की समस्याएँ पैदा करती है। इसे हल करने के लिए बहुमंज़िला इमारतें बनाई जा रही हैं।

आमतौर पर, पुश और पुल कारक लोगों को शहरों की ओर प्रवास करने के लिए मजबूर करते हैं। ये लोग शहरों में रोज़गार की तलाश में आते हैं। शहरों में आवास की सुविधा महंगी होती है, जिसके कारण गरीब लोग शहरों के बाहर खाली भूमि पर झोपड़ियाँ बनाते हैं। इस प्रकार झुग्गियाँ विकसित होने लगती हैं। ऐसी झुग्गियों में जनसंख्या घनत्व अधिक होता है और जल निकासी और शहरी कचरे के निपटान की कोई सुविधा नहीं होती है। लोगों का जीवन स्तर बहुत निम्न होता है। प्रशासन ने इन क्षेत्रों को सुविधाएँ प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए हैं, फिर भी ये झुग्गियाँ कई बीमारियों से ग्रस्त हैं।

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.

28. (क) शहरी क्षेत्रों की भीड़-भाड़, घनी और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे की समस्या के कारण विशाल शहरी अपशिष्ट का संचय होता है। शहरी अपशिष्ट के दो स्रोत होते हैं। घरेलू या घरेलू स्रोत और औद्योगिक या व्यावसायिक स्रोत। शहरी अपशिष्ट निपटान का गलत प्रबंधन बड़े शहरों में एक गंभीर समस्या है।

महानगरों में प्रतिदिन टन अपशिष्ट निकलता है और इसे जलाया जाता है। अपशिष्ट से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित करता है। मानव मल को सुरक्षित रूप से निपटाने के लिए सीवेज या अन्य साधनों की कमी और कचरा संग्रहण स्त्रोतों की अपर्याप्तता जल प्रदूषण में योगदान करती है। औद्योगिक इकाइयों का शहरी केंद्रों के आसपास केंद्रित होना पर्यावरणीय समस्याओं की एक श्रृंखला को जन्म देता है। नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट का डालना जल प्रदूषण का प्रमुख कारण है। ठोस अपशिष्ट उत्पादन शहरों में निरंतर बढ़ता जा रहा है, दोनों निरपेक्ष और प्रति व्यक्ति के हिसाब से। ठोस अपशिष्ट का अनुचित निपटान चूहों और मक्खियों को आकर्षित करता है जो बीमारियाँ फैलाते हैं। थर्मल संयंत्र हवा में बहुत सारा धुआँ और राख छोड़ते हैं। उदाहरण के लिए 500 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाला एक संयंत्र 2000 टन राख छोड़ता है जिसे प्रबंधित करना मुश्किल है।

अथवा

(ख) प्लास्टिक एक गैर-निष्क्रिय पदार्थ है और इसका उपयोग और उत्पादन न्यूनतम होना चाहिए। प्लास्टिक का मलबा बिल्कुल हर जगह पाया जाता है आर्कटिक से अंटार्कटिका तक। यह हमारे शहरों में सड़क की नालियों को बंद करता है: यह कैंपग्राउंड और राष्ट्रीय उद्यानों में बिखरा हुआ है, और यहां तक कि माउंट एवरेस्ट पर भी जमा हो रहा है। लेकिन रन-ऑफ और हमारे नजदीकी नदी या झील में सीधे अपना कचरा डालने की आदत के कारण, प्लास्टिक दुनिया के महासागरों में बढ़ता जा रहा है। जब प्लास्टिक का विघटन होता है, तो इसका मतलब है कि एक बड़े प्लास्टिक के टुकड़े को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है। ये छोटे प्लास्टिक के टुकड़े छोटे जानवरों द्वारा खाए जा सकते हैं, लेकिन ये अभी भी पचने योग्य नहीं होते। यह खाद्य श्रृंखला में सभी जीवों को प्रभावित करता है, छोटी प्रजातियों जैसे प्लवक से लेकर व्हेल तक। जब प्लास्टिक का सेवन किया जाता है, तो विषाक्त पदार्थ खाद्य श्रृंखला में ऊपर की ओर बढ़ते हैं और यह उन मछलियों में भी मौजूद हो सकते हैं जो लोग खाते हैं। मोबाइल फोन से लेकर साइकिल के हेलमेट तक और iv बैग तक, प्लास्टिक ने समाज को ऐसे तरीकों से आकार दिया है जो जीवन को आसान और सुरक्षित बनाते हैं। लेकिन इस सिंथेटिक सामग्री ने पर्यावरण पर हानिकारक छाप भी छोड़ी है।

1. प्लास्टिक में जो रसायन मिलाए जाते हैं, वे मानव शरीर द्वारा अवशोषित होते हैं। इनमें से कुछ यौगिक हार्मोन को बदलने या अन्य संभावित मानव स्वास्थ्य प्रभाव डालने के लिए पाए गए हैं।

2. प्लास्टिक का मलबा, जो रसायनों से भरा होता है और अक्सर समुद्री जानवरों द्वारा खाया जाता है, वन्यजीवों को घायल या ज़हरीला कर सकता है।

3. तैरता हुआ प्लास्टिक का कचरा, जो पानी में हज़ारों वर्षों तक जीवित रह सकता है, आक्रामक प्रजातियों के लिए छोटे परिवहन उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिससे आवास बाधित होते हैं।

4. लैंडफिल में गहराई से दफनाया गया प्लास्टिक हानिकारक रसायनों को रिसाव कर सकता है जो भूजल में फैल जाते हैं।

5. विश्व के तेल उत्पादन का लगभग प्रतिशत प्लास्टिक बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता है, और इसी मात्रा का उपभोग प्रक्रिया में ऊर्जा के रूप में किया जाता है।

खंड—E

(प्रश्न संख्या 29 से 30 मानचित्र आधारित प्रश्न हैं)

2 × 5 = 10

29. क. रियोडिजेनेरो
ख. फोर्टवर्थ
ग. स्वेज नहर
घ. ब्राजील
ङ अफ्रीका का एटलांटिक तट
च. सिडनी
छ. उत्तर अमेरिका के प्रेयरीज

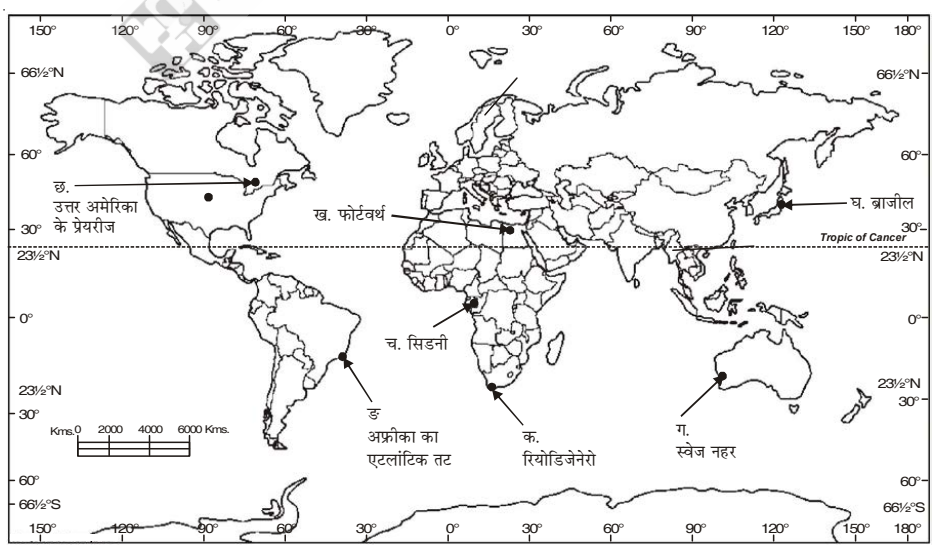

30. 30.1 उत्तर प्रदेश
30.2 बैरोनी
30.3 तालेचर
30.4 मुंबई
30.5 केरल
30.6 अमृतसर
30.7 रत्नागिरी।

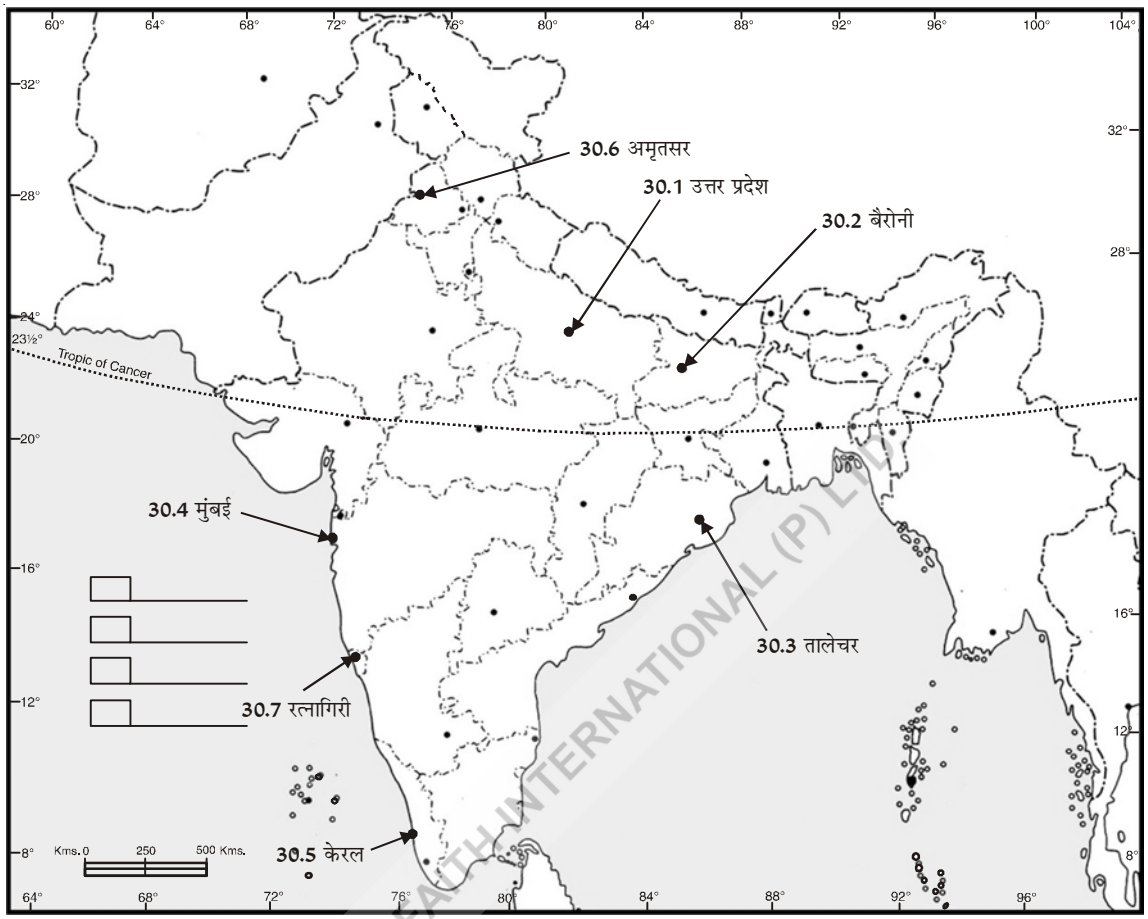

HOLY FAITH INTERNATIONAL (P) LTD.